नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 201, नई दिल्ली, सोमवार 26 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"सच्ची सफलता वही है, जिसमें हमारी मेहनत के साथ किसी और के जीवन में भी उम्मीद, सुरक्षा और मुस्कान जुड़ जाए।"

02 कंपाउंड नंबर 11/2 – मानसिक एवं आध्यात्मिक अंतर्ज्ञान का मास्टर, अंतर्ज्ञान की

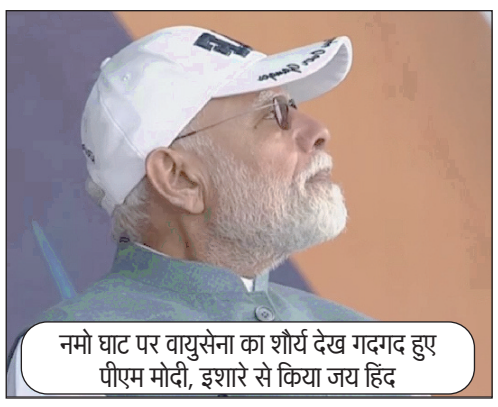
06 अधिक शिक्षा, कम रोज़गार: भारत में बढ़ते रोजगार संकट

08 रांची मे राजस्व कर्मचारी की गोली मारकर हत्या

आसमान में विमानों की गर्जना से गूंज उठी काशी

नमो घाट पर वायुसेना का शौर्य देख गदगद हुए पीएम मोदी, इशारे से किया जय हिंद - 100 विमानों ने गंगा के ऊपर दिखाए हैरतअंगेज करतब

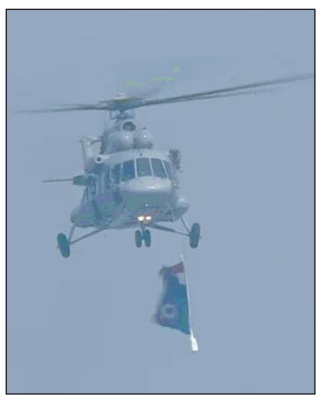
Wings Over Ganga - वायुसेना की 94वीं वर्षगांठ पर गंगा के ऊपर इतिहास रचा, 100 विमानों ने दिखाया अदम्य पराक्रम, राफेल से तेजस तक गरजे



नमो घाट पर वायुसेना का शौर्य देख गदगद हुए पीएम मोदी, इशारे से किया जय हिंद



आसमान में विमानों की गर्जना से गूंज उठी काशी







चिनकू ने मां गंगा को किया नमन





आसमान में चेतक हेलीकाप्टरों से लहराया तिरंगा



स्वदेशी हल्के लड़ाकू हेलीकॉप्टर और अपाचे का भागीरथी फॉर्मेशन

प्रस्तुतकर्ता: पिंकी कुंडू, सह संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र

संपादकीय टिप्पणी - परिवहन विशेष: यह एयर शो सिर्फ सैन्य शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि काशी की आध्यात्मिकता और आधुनिक भारत की ताकत का संगम बन गया। ऐसे प्रदर्शन युवाओं को वायुसेना में जाने के लिए प्रेरित करते हैं और राष्ट्र के प्रति गर्व की भावना जगाते हैं।

प्रस्तावना: धर्म, अध्यात्म और संस्कृति की नगरी काशी आज भारतीय वायुसेना के शौर्य, पराक्रम और अद्भुत हवाई कौशल की साक्षी बनी। गंगा के ऊपर लड़ाकू विमानों और हेलीकॉप्टरों के प्रदर्शन ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। घाट के आसपास बड़ी संख्या में लोग एयर शो देखने के लिए जुटे रहे। आसमान में विमानों की गर्जना और उनके हैरतअंगेज करतबों के बीच देशभक्ति का माहौल नजर आया।

तथ्य और मुख्य बिंदु:

1. आयोजन: भारतीय वायुसेना की 94वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित 'विंग्स ओवर गंगा' का तीसरा दिन - 'एयर फोर्स डे एरियल डिस्प्ले-2026'

2. तिथि और स्थान: 25 अक्टूबर 2026 (रविवार), वाराणसी के नमो घाट और गंगा के दोनों तट (काशी-चंदौली तक)

3. विमानों की संख्या: 100 से ज्यादा विमानों और हेलीकॉप्टरों ने हवाई करतब दिखाए। इसमें 50 लड़ाकू विमान शामिल थे।

4. कौन-कौन शामिल: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (सांसद वाराणसी), रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

5. प्रदर्शित विमान: सुखोई-30 एमकेआई, राफेल, मिराज-2000, मिग-29, एलसीए तेजस, जगुआर, सी-17, सी-130, चिनूक, अपाचे, एलसीएच प्रचंड, एमआई-17, सूर्य किरण और सारंग एरोबेटिक टीमें

विस्तृत जानकारी:

पीएम मोदी ने किया जय हिंद का अभिवादन: वाराणसी के नमो घाट पर एयर शो में 100 से ज्यादा विमानों और हेलीकॉप्टरों ने हवाई करतब दिखाकर लोगों को रोमांचित कर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी भारतीय सेना और वायुसेना के शौर्य को करीब से देखा। इस दौरान उन्होंने इशारे से ही जय हिंद का अभिवादन किया। प्रधानमंत्री को ऐसा करते देखकर आसपास मौजूद लोगों ने तालियां बजाकर उत्साह जताया। एयर शो के दौरान पीएम मोदी ने हाथ हिलाकर लोगों का अभिवादन किया और इशारे से 'जय हिंद' का संदेश भी दिया।

गंगा के दोनों किनारों पर जनसैलाब: एयर शो देखने के लिए वाराणसी के नमो घाट से लेकर गंगा के दूसरी ओर चंदौली जिले के तटों तक बड़ी संख्या में लोग जुटे। गंगा के ऊपर विमानों की आवाज और उनके हवाई करतब दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बने रहे। लोगों ने 'भारत माता की जय', 'हर-हर महादेव', 'वंदे मातरम्' और 'मोदी-मोदी' के जयकारे लगाए।

पुलिस लाइन से नमो घाट तक स्वागत: प्रधानमंत्री के वाराणसी पहुंचने पर सड़क मार्ग में कई स्थानों पर लोगों ने उनका स्वागत किया। भदऊचुंगी के पास सड़क के दोनों ओर बड़ी संख्या में लोग खड़े थे। लोगों का उत्साह देखकर प्रधानमंत्री ने अपनी कार रुकवाई और बाहर निकलकर हाथ हिलाते हुए अभिवादन किया।

काशी के आसमान में शौर्य का संगम: 25 अक्टूबर को दोपहर प्रधानमंत्री का हेलीकॉप्टर पुलिस लाइन पर उतरा, 15 किमी रोड शो के बाद नमो घाट पहुंचे। जैसे ही राफेल, सुखोई-30 MKI, मिराज-2000, मिग-29, LCA तेजस, जगुआर ने गंगा के ऊपर गर्जना की, घाटों पर भारत माता की जय, हर-हर महादेव, वंदे मातरम्के नारों से माहौल गूंज उठा। प्रधानमंत्री ने मुस्कुराते हुए हाथ हिलाया और इशारे से 'जय हिंद' किया - जनता ने तालियों से जवाब दिया। efda

कौन से विमानों ने दिखाया जलवा:

- **लड़ाकू बेड़ा:** सुखोई-30, राफेल, मिराज-2000, मिग-29, तेजस, जगुआर
- **हेलीकॉप्टर:** LCH प्रचंड, चिनूक, ALH मार्क III/IV, अपाचे, चेतक, कामोव-31, MI-17 V5
- **परिवहन:** C-295, C-17, C-130, IL-78, AN-32, P-8I, AWACS
- **टीमें:** सूर्यकिरण एरोबेटिक टीम, सारंग हेलीकॉप्टर टीम, गरुड़ कमांडो ने रस्सी से क्रूज पर उतरकर कौशल दिखाया, हार्वर्ड हेरिटेज विमान 'सारनाथ' 77af

काशी के नाम फॉर्मेशन: इस बार फॉर्मेशन के नाम आध्यात्मिक रखे गए - काशी, त्रिशूल, डमरू, ओंकार, त्रिदेव, वरुण, केदार, हनुमान, रुद्र, भागीरथ। 'काशी फॉर्मेशन' में तीन किरण विमानों ने V आकार में तिरंगा बनाया, ओंकार में MI-17 ने तिरंगा लेकर उड़ान भरी।

क्यों खास है यह आयोजन: यह केवल एयर शो नहीं, आध्यात्मिक राजधानी काशी और आधुनिक भारत की सैन्य ताकत का संगम है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे प्रदर्शन युवाओं को सेना में जाने के लिए प्रेरित करते हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की एयरोस्पेस क्षमता का संदेश देते हैं। सुरक्षा के लिए शहर को 32 जोन, 50 सेक्टर, 80 सब-सेक्टर में बांटा गया, 11,900 सुरक्षाकर्मी तैनात रहे।

निष्कर्ष: गंगा की लहरों के ऊपर जब 100 विमानों की गर्जना हुई, तो काशी ने देखा कि आस्था और शौर्य एक साथ कैसे गूंजते हैं। पीएम मोदी की मौजूदगी में यह दिन वाराणसी के लिए ऐतिहासिक बन गया।



शरद पूर्णिमा पर शहीद भगत सिंह कॉलोनी में भंडारे का भव्य आयोजन



शरद पूर्णिमा पर शहीद भगत सिंह कॉलोनी में भंडारे का भव्य आयोजन - सर्व धर्म का संदेश, सेवा का संकल्प

सर्व धर्म मित्र मंडल दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष के के छावड़ा के नेतृत्व में भक्तों ने ग्रहण किया प्रसाद, टोलवा ग्रुप और कॉलोनीवासियों का अभूतपूर्व सहयोग

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

जनहित संदेश: ऐसे आयोजनों से न केवल धार्मिक भावना प्रबल होती है, बल्कि सामुदायिक एकता, भूखे को भोजन और सामाजिक समरसता का संदेश भी जाता है। शिवाजी एंक्लेव जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्र में राहगीरों के लिए भंडारा सामाजिक सुरक्षा का प्रतीक है।

तथ्य एक नजर में

- **अवसर:** शरद पूर्णिमा (कोजागरी पूर्णिमा) - आश्विन मास की पूर्णिमा, 25 अक्टूबर 2026
- **स्थान:** शहीद भगत सिंह कॉलोनी मार्केट, शिवाजी एंक्लेव, पश्चिमी दिल्ली
- **आयोजक:** के के छावड़ा - अध्यक्ष, सर्व धर्म मित्र मंडल दिल्ली प्रदेश एवं उपाध्यक्ष, टोलवा ग्रुप
- **सहयोगी:** अशोक नारंग (टोलवा ग्रुप उपाध्यक्ष एवं पत्रकार), विरेंद्र कुमार चतुर्वेदी (उपाध्यक्ष सर्व धर्म मित्र मंडल), कार्तिक कुमार झा, अजित सिंह (कालू), गुरुचरण सिंह (टोनी), ओम प्रकाश नरवरिया, राजेंद्र कुमार, विनय सिंह, संजीव कोली, हरविंदर खुराना, सतवीर बंसल एवं मार्केट के दुकानदार और कॉलोनी वासी
- **उपस्थिति:** कॉलोनी के अलावा अगल-बगल की कॉलोनियों और राहगीरों ने बड़ी संख्या में प्रसाद ग्रहण किया

मुख्य बिंदु - विस्तृत विश्लेषण

1. शरद पूर्णिमा का महत्व - आज के दिन का विशेष अर्थ: हिंदू पंचांग के अनुसार शरद पूर्णिमा वर्ष की सबसे उज्ज्वल पूर्णिमा मानी जाती है। मान्यता है कि इस रात चंद्रमा की 16 कलाओं से अमृत की वर्षा होती है। इस दिन माँ लक्ष्मी का प्राकट्य दिवस, भगवान कृष्ण का महारास, और आयुर्वेद में खीर को चंद्रमा की रोशनी में रखकर सेवन करने की परंपरा है। वैज्ञानिक दृष्टि से इस रात की चांदनी में औषधीय गुण बताए जाते हैं।

2. भंडारे का दृश्य: दोपहर से शुरू हुए भंडारे में बड़े भगोने में बनी खीर-पुड़ी और सब्जी का प्रसाद वितरित किया गया। तस्वीरों में स्वयंसेवक कतारबद्ध श्रद्धालुओं को प्रसाद परोसते दिखे। छोटी बच्ची से लेकर बुजुर्ग तक सभी ने पंक्तिबद्ध होकर प्रसाद ग्रहण किया। मार्केट एसोसिएशन ने टेंट और टेबल की व्यवस्था की।

3. आयोजक का संदेश: के के छावड़ा ने कहा - 'शरद पूर्णिमा पर मां लक्ष्मी सब पर कृपा बनाए रखे, समस्त परिवार, समाज और देश में खुशहाली रहे। सर्व धर्म मित्र मंडल का उद्देश्य ही सर्व धर्म समभाव और मानव सेवा है।'

विकास कुंज में खुला मौत का गड्ढा - संविधान के अनुच्छेद 21 का सीधा उल्लंघन

2.5 महीने से 1100 परिवारों का जीवन जोखिम में, अफसोसजनक - महत्वपूर्ण कार्य को हल्के में लिया जा रहा, प्रबंध समिति की उदासीनता, संक्रामक रोग नियंत्रण विभाग की आँखें बंद - विभाग तत्काल प्रभाव से गलती सुधारे

अफसोसजनक – महत्वपूर्ण कार्य को हल्के में लिया जा रहा, प्रबंध समिति की उदासीनता, संक्रामक रोग नियंत्रण विभाग की आँखें बंद – विभाग तत्काल प्रभाव से गलती सुधारे

रिपोर्ट अशोक नारंग - प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

तथ्य एक नजर में

- स्थान व साक्ष्य: विकास कुंज गेट, 1100 फ्लैट्स, विकासपुरी - आपके वीडियो में गहरा गड्ढा, बड़ा पाइप, उसमें काला ठहरा पानी, प्लास्टिक, मलवा, बिना बैरिकेडिंग
- अवधि: ढाई माह से खुला, रोजाना दोपहिया व कारों की आवाजाही के बीच हादसे की आशंका
- स्वास्थ्य खतरा: स्थिर जल में मच्छर लार्वा - डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया का प्रजनन स्थल, गेट पर ही बच्चों का आना-जाना
- जनता की पीड़ा: सड़क का लेवल बढ़ाने से गाड़ियों के नीचे लगना, मिट्टी-गारा से फिसलन, राहगीरों का गिरना

विस्तृत विश्लेषण – मूल अधिकार से लेकर कानून तक

1. संवैधानिक अधिकारों का हनन:

- अनुच्छेद 21 - जीवन का अधिकार: सुप्रीम कोर्ट ने Subhash Kumar vs State of Bihar (1991) और Virender Gaur vs Haryana (1995) में कहा - स्वच्छ, सुरक्षित वातावरण में जीना अनुच्छेद 21 के तहत मूल अधिकार है। खुला गड्ढा और मच्छर जनित रोग सीधे इस अधिकार का उल्लंघन है।
- अनुच्छेद 21A व अनुच्छेद 47: राज्य का कर्तव्य है कि वह सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार करे, पोषण और जीवन स्तर ऊंचा करे। बच्चों के स्कूल जाने वाले रास्ते पर खतरा इस कर्तव्य के विरुद्ध है।
- अनुच्छेद 51A(g): प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य है पर्यावरण की रक्षा करना, पर यहाँ विभाग ही कर्तव्य से विमुख है।

2. न्यायिक आदेश और राजपत्रित अधिसूचनाएँ:

- सुप्रीम कोर्ट आदेश - 2018 में Pothole Deaths पर स्वतः संज्ञान: कोर्ट ने कहा - खुले गड्ढे में मौत पर संबंधित अधिकारी पर IPC 304A (लापरवाही से मौत) और विभाग पर मुआवजे की जिम्मेदारी। दिल्ली HC ने Court on its own motion vs MCD में MCD को 48 घंटे में गड्ढा भरने का निर्देश दिया था।
- NGT आदेश O.A. 199/2014 - Almitra Patel vs Union of India: मच्छर प्रजनन वाली जगहों पर ₹50,000 तक जुर्माना और संबंधित अधिकारी पर कार्रवाई का निर्देश। दिल्ली में जलभराव रोकना MCD की वैधानिक जिम्मेदारी।
- राजपत्र अधिसूचना - C&D Waste Management Rules, 2016 (पर्यावरण मंत्रालय): नियम 8 - किसी भी खुदाई स्थल पर 2 मीटर ऊंची टिन शीट बैरिकेडिंग, चेतावनी बोर्ड, रात में रेडियम लाइट अनिवार्य। 24 घंटे से ज्यादा खुला छोड़ना दंडनीय अपराध।
- DMC Act 1957 धारा 42 व 195, Delhi Maintenance and Management of Parking Places Rules: सड़क, नाली, फुटपाथ की सुरक्षा MCD की है। लापरवाही पर धारा 461 में विभागीय दंड।

3. विभागीय नियम:

- CPWD Works Manual 2022, Chapter 5: पाइपलाइन कार्य के बाद 72 घंटे में बैकफिलिंग और कॉम्पैक्शन अनिवार्य, नहीं तो ठेकेदार का भुगतान रोका जाए।
- Delhi Epidemic Diseases Regulation 2020: मच्छर लार्वा मिलने पर घर/स्थल मालिक को नोटिस, यहाँ तो सरकारी स्थल स्वयं स्रोत बना है - दोहरा मापदंड।

विभाग को तत्काल अपील - गलती सुधारो: परिवहन विशेष समाचार पत्र, प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता की ओर से जनहित में अपील -

MCD पश्चिमी जोन, दिल्ली जल बोर्ड और विकास कुंज प्रबंध समिति से अनुरोध है कि इस मामले को गंभीरता से लें:

1. 24 घंटे में गड्ढे को भरकर समतल करें, स्थाई बैरिकेडिंग लगाएं
2. संक्रामक रोग नियंत्रण विभाग तत्काल फॉगिंग व एंटी-लार्वा दवा का छिड़काव करे
3. जवाबदेही तय हो - जिस ठेकेदार/अधिकारी ने 2.5 माह तक कार्य लटकाया, उस पर नियमानुसार कार्रवाई व जुर्माना
4. निवासियों को सूचना - कार्य पूर्ण होने तक वैकल्पिक सुरक्षित मार्ग व हेल्पलाइन नंबर प्रदर्शित किया जाए

यह मामला केवल गड्ढे का नहीं, संवैधानिक अधिकार और न्यायिक आदेशों के सम्मान का है।





आपके स्वास्थ्य की आठ दिशाएँ : दिशाओं के संशोधित तत्व - वात–पित्त–कफ का पारस्परिक संबंध

स्वास्थ्य की इस यात्रा में उत्तर दिशा की पहचान एक स्पष्ट तत्व से होती है:

उत्तर = जल तत्व

दोषों के साथ इसका संबंध समझना भी उतना ही आवश्यक है। जल तत्व पित्त (अग्नि + जल) और कफ (जल + पृथ्वी), दोनों का भाग है; जबकि वात शरीर में जल की गति और उसके निष्कासन को नियंत्रित करने से जुड़ा माना जाता है। यह समझ आने पर स्वास्थ्य और वास्तु के बीच संबंध को अधिक व्यवस्थित ढंग से देख सकते हैं।

तत्व से दोष तक का संबंध

वात = वायु + आकाश। परंपरागत दृष्टि में वात गति, चलायमानता, संचार और शरीर की क्रियात्मक गतिविधियों से जुड़ा है।

पित्त = अग्नि + जल। पित्त ऊष्मा, पाचन और रूपांतरण से जुड़ा है; जल इस अग्नि को संतुलित करने और उसके प्रवाह में सहायक माना जाता है।

कफ = जल + पृथ्वी। कफ शरीर में जुड़ाव, पोषण, स्थिरता, स्निग्धता और संचय से संबंधित है।

इसलिए किसी दिशा में दोष होने का अर्थ यह नहीं कि उसका तत्व अपने आप में 'बुरा' है। वह तत्व अत्यधिक, कम, अवरुद्ध, जरूरत से ज्यादा गर्म, बोझिल या अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाने में असमर्थ हो सकता है। यही अंतर पूरे विश्लेषण को बदल देता है।

उत्तर दिशा में असंतुलन हो तो किन स्वास्थ्य समस्याओं से संबंध देखा जाता है?

इस श्रृंखला में प्रयुक्त पारंपरिक मेडिकल वास्तु दृष्टिकोण के अनुसार, उत्तर दिशा के संबंधित सूक्ष्म क्षेत्रों में असंतुलन का संबंध कुछ शारीरिक या मानसिक प्रवृत्तियों से जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए, बार-बार पेशाब आना या उस पर नियंत्रण न रहना, पेशाब में जलन या उसका रंग बहुत हल्का होना, सूजन, गुर्दे की पथरी या दर्द, पेशाब कम आना, गुर्दों की कार्यक्षमता से जुड़ी परेशानियाँ तथा मूत्राशय, गुर्दों और शरीर में द्रव-संतुलन से संबंधित समस्याएँ।

कृपया 'संबंध देखा जाता है' शब्दों पर ध्यान दें। ये पारंपरिक व्याख्यात्मक संभावनाएँ हैं, यह भविष्यवाणी नहीं कि उत्तर दिशा में वास्तु-दोष होने पर घर के प्रत्येक सदस्य को ऐसी बीमारी अवश्य होगी।

किसी व्यक्ति पर इसका प्रभाव कैसा दिखाई देगा, यह तीन बातों पर निर्भर माना जाता है—संपत्ति में वास्तव में क्या असंतुलन है; उससे कौन-सा तत्व या दोष प्रभावित हो रहा है; और परिवार के किस सदस्य की जन्मकुंडली में वैसी संवेदनशीलता दिखाई देती है।

एक ही दिशा अलग-अलग परिणाम क्यों दिखा सकती है?

जरा विचार कीजिए: हीटर से उत्पन्न अग्नि जल तत्व को जिस प्रकार प्रभावित करेगी, वह भोजन के भारी भंडारण से जुड़ी पृथ्वी जैसी ऊर्जा से अलग होगा। ऊपर रखी पानी की टंकी जल के संचय के साथ भार भी बढ़ाती है; वहीं उत्तर दिशा का कटा हुआ हिस्सा अधिकता के बजाय कमी का संकेत देता है।

संपत्ति की अलग-अलग स्थितियाँ तत्वों को अलग तरह से प्रभावित करती हैं:

- कटा हुआ भाग (कट) — तत्व की कमी।
- बढ़ा हुआ भाग (एक्सटेंशन) — तत्व की अधिकता।
- भारी भंडारण — पृथ्वी तत्व और कफ जैसी संचय-प्रवृत्ति में वृद्धि।
- जल — प्रवाह और तरलता; लेकिन जमा हुआ जल ठहराव भी दर्शाता है।
- अग्नि — पित्त जैसी ऊष्मा का प्रभाव।
- बिजली के उपकरण — सक्रियता और अग्नि जैसी उत्तेजना।
- शौचालय या सेप्टिक व्यवस्था — जल के साथ अपशिष्ट और निष्कासन की प्रक्रिया।
- गड्ढा — स्थान में धँसाव या कमी।
- अत्यधिक ऊँचाई या भार — तत्व के संतुलन और अवरोध में परिवर्तन।

इसलिए उत्तर दिशा के दो अलग-अलग वास्तु-दोष एक जैसी स्वास्थ्य-प्रवृत्ति का संकेत दें, यह आवश्यक नहीं है।



दोष का बढ़ना, घटना या रुकना—तीनों महत्त्वपूर्ण हैं

यहीं वात, पित्त और कफ का अध्ययन अधिक उपयोगी बनता है।

परंपरागत रूप से बढ़े हुए वात को बेचैनी, अनियमितता, भय, रूखेपन या अत्यधिक गति से जोड़ा जाता है। कम या अवरुद्ध वात को सुस्ती अथवा क्रियात्मक प्रवाह में बाधा के रूप में समझा जा सकता है।

बढ़े हुए पित्त से गर्मी, जलन, चिड़चिड़ापन या अत्यधिक रूपांतरण जैसी प्रवृत्तियाँ जुड़ी मानी जाती हैं। कम पित्त से रूपांतरण की कमजोरी या मंद पाचन जैसी प्रवृत्तियों का संकेत लिया जाता है।

बढ़े हुए कफ से भारीपन, बलगम, सूजन, द्रव का ठहराव या संचय जुड़ा माना जाता है। कम कफ को स्थिरता, पोषण या स्निग्धता की कमी के रूप में देखा जाता है।

इसलिए किसी भी उपाय से पहले यह पहचानना आवश्यक है कि तत्व या दोष बढ़ा हुआ है, घटा हुआ है या अवरुद्ध है।

पाठक के लिए एक उदाहरण

मान लीजिए घर के किसी सदस्य को ऊपर बताई गई श्रेणी की कोई स्वास्थ्य समस्या चिकित्सक द्वारा पहले से पहचानी गई है। सीधे यह कहने के बजाय कि 'इसके लिए उत्तर दिशा जिम्मेदार है', मैं पहले यह जानना चाहूँगी कि शरीर में समस्या का स्वरूप क्या है।

क्या गर्मी अधिक है या ठंडक?

क्या संचय है या कमी?

क्या गति बहुत अधिक है या कहीं अवरोध है?

क्या रूखापन है या द्रव का ठहराव?

क्या जलन है या सुस्ती?

इसके बाद मैं उस व्यक्ति की जन्मकुंडली का अध्ययन करूँगी। यदि कुंडली में भी उसी तत्व या दोष के प्रति संवेदनशीलता के संकेत मिलते हैं, तो उत्तर दिशा के संबंधित सूक्ष्म क्षेत्र और उसके वर्तमान उपयोग को देखूँगी।

जब शरीर, जन्मकुंडली और संपत्ति—इन तीनों में एक जैसा तत्वीय संकेत दिखाई दे, तभी उस पारंपरिक संबंध पर विचार करना उचित होगा। यदि ऐसा मेल न मिले, तो वास्तु को जबरन कारण नहीं ठहराना चाहिए।

अब प्रक्रिया को उलटकर देखिए

हम विश्लेषण की शुरुआत घर से भी कर सकते हैं। यदि उत्तर दिशा में कोई बड़ा असंतुलन दिखे, तो मैं पूछ सकती हूँ कि क्या परिवार के किसी सदस्य में उससे जुड़ी स्वास्थ्य-प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं और क्या घर के उपयोग या बनावट में परिवर्तन के बाद वे शुरू हुईं या बढ़ीं।

क्या पानी की नई टंकी लगाई गई?

क्या उत्तर का हिस्सा काटा या बढ़ाया गया?

क्या शयनकक्ष को स्टोर बना दिया गया?

क्या मशीनरी लगाई गई?

क्या शौचालय की जगह बदली गई?

क्या छत की ऊँचाई बढ़ाई गई?

क्या भारी और अनुपयोगी सामान जमा हो गया?

घटनाओं का क्रम उपयोगी संकेत दे सकता है, लेकिन समय का मेल होना भी किसी बीमारी का कारण सिद्ध नहीं करता।

अपने घर में यह अभ्यास कीजिए

सबसे पहले उत्तर दिशा को सही ढंग से पहचानिए। फिर तुरंत उसे अच्छा या बुरा कहने के बजाय कुछ प्रश्न पूछिए:

इसका मूल तत्व क्या है? — जल।

मैंने इसमें क्या जोड़ा है?

क्या जल तत्व की अधिकता हो गई है?

क्या उसका स्वाभाविक प्रभाव दब गया है?

क्या विपरीत तत्व प्रवेश कर गया है?

क्या भारी पृथ्वी-तत्व ने इसे बोझिल बना दिया है?

क्या अग्नि से अधिक गर्मी पैदा हो रही है?

क्या गति रुक गई है?

क्या आवश्यक आकाश तत्व कम हो गया है?

क्या जल बह रहा है या केवल जमा हो रहा है?

इसके बाद घर के सदस्यों को देखिए। इस क्षेत्र में सबसे अधिक समय कौन बिताता है? संबंधित स्वास्थ्य-प्रवृत्ति किसमें दिखाई देती है? क्या उस व्यक्ति की जन्मकुंडली में भी उसी तत्व के प्रति संवेदनशीलता का संकेत है? यही व्यक्तिगत अध्ययन सामान्य वास्तु-सुझावों से अलग होता है।

स्वास्थ्य के संदर्भ में बड़ा संदेश

मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु का उद्देश्य दिशाओं के नाम से बीमारियों का भय पैदा करना नहीं, बल्कि संतुलन को समझना है।

शरीर को वायु चाहिए—पर अनियंत्रित गति नहीं।

आकाश चाहिए—पर अत्यधिक बिखराव नहीं।

अग्नि चाहिए—पर जलन नहीं।

जल चाहिए—पर अनियंत्रित संचय नहीं।

पृथ्वी चाहिए—पर जड़ता नहीं।

इन्हीं पाँच तत्वों को हम संपत्ति में भी समझने का प्रयास करते हैं। इसलिए उत्तर दिशा का आकलन केवल किसी एक वस्तु या याद किए हुए लक्षण के आधार पर नहीं होना चाहिए। दिशा का तत्व, दोषों का संयोजन, संबंधित सूक्ष्म क्षेत्र, व्यक्ति की जन्मकुंडली और वास्तविक चिकित्सकीय स्थिति—सभी को साथ रखकर देखना आवश्यक है।

उपाय सबसे अंत में

सही विश्लेषण के बाद ही सुधार का निर्णय लेना चाहिए। कई बार उपाय व्यावहारिक होते हैं—अनावश्यक सामान हटाना, रिसाव ठीक करना, बहुत अधिक गर्मी या ठंडक कम करना, वेंटिलेशन सुधारना, अनुपयुक्त भंडारण या मशीनरी का स्थान बदलना और कमरों का उचित उपयोग सुनिश्चित करना।

कभी-कभी कट, बढ़ाव, गड्ढे, ऊँचाई में अंतर या संरचनात्मक विशेषताओं के लिए विस्तृत वास्तु परीक्षण आवश्यक हो सकता है। और कभी संपत्ति में कोई सार्थक संबंध मिलता ही नहीं। इस संभावना को भी खुला रखना चाहिए।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात—वास्तु चिकित्सा का विकल्प नहीं है। यदि कोई लक्षण लगातार बना हुआ है या गंभीर है, तो योग्य चिकित्सक से जाँच और उपचार कराएँ। मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु को चिकित्सा के स्थान पर नहीं, बल्कि उसके साथ एक पारंपरिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण के रूप में ही देखें।

उत्तर दिशा से आगे बढ़ने से पहले स्वयं से पूछिए—"क्या यहाँ जल तत्व इतना संतुलित है कि वह अपनी स्वाभाविक भूमिका निभा सके?"

जब आप तत्व को समझते हैं, तब दोष को समझना आसान हो जाता है। और जब दोष समझ में आता है, तब शरीर, जन्मकुंडली और संपत्ति के बीच पारंपरिक संबंध को अधिक सार्थक ढंग से देखा जा सकता है।

आपके स्वास्थ्य की आठ दिशाएँ—एक यादगार यात्रा का समापन!

पिछले आठ सप्ताहों में हमने मेडिकल वास्तु के माध्यम से अपने घर की आठ दिशाओं और स्वास्थ्य के बीच माने जाने वाले रोचक संबंधों की पड़ताल की। पाँच तत्वों को समझने से लेकर वात, पित्त और कफ के साथ उनके संबंधों तक, हमने जाना कि हमारे रहने के स्थान हमारे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं का प्रतिबिंब कैसे माने जा सकते हैं।

लेकिन हमारी वास्तु-यात्रा यहीं समाप्त नहीं होती!

अगले सोमवार से शुरू होगा एक नया अध्याय!

तैयार हो जाइए वास्तु के एक बिल्कुल नए और कहीं अधिक दिलचस्प पहलू को जानने के लिए—कुछ ऐसा, जो आपके आसपास के वातावरण को देखने का नजरिया बदल सकता है!

क्या आप जानना चाहते हैं कि अगला विषय क्या होगा?

जुड़े रहिए, जिज्ञासु बने रहिए और मेरे साथ वास्तु के छिपे हुए ज्ञान की खोज जारी रखिए!

क्योंकि वास्तु केवल इस बारे में नहीं है कि हम कहाँ रहते हैं—यह इस बारे में भी है कि हम कैसे जीते हैं!

पारुल भटनागर
विशेषज्ञ एस्ट्रो–न्यूमेरो वास्तु सलाहकार
मोबाइल: 8750075550
YouTube | Facebook | Instagram: @vediccodes

अगले सोमवार फिर मिलेंगे—एक नए और रोमांचक विषय के साथ!

शरद पूर्णिमा - 'कोजागरी पूर्णिमा' के साथ-साथ 'रास पूर्णिमा' और 'कौमुदी महोत्सव



गोवर्द्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

जब हम छोटे थे, तब माताजी आज शरद पूर्णिमा के दिन पतली सुईं और धागा देकर सुईं में ग्यारह बार धागा पिरोने के लिए कहती थीं। वे हमें समझाती थीं कि आज भगवान चन्द्रमा द्वारा प्रदत्त जादुई किरणों का लाभ उठाते हुए सुईं में धागा डालने से आँखों की रोशनी तेज़ होती है।

आज जब हम यह सब अखबारों आदि में पढ़ते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस दिन चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे करीब होता है, तब माताजी की कही यह बात कि 'शरद पूर्णिमा की रात सबसे चमकीली और खूबसूरत रात होती है', याद आती है। यह सोचकर बड़ा ही सुखद अहसास होता है कि मेरी माताश्री को कितना गहरा ज्ञान था।

अब आपको बताना चाहूँगा कि शरद पूर्णिमा को 'कोजागरी पूर्णिमा' भी कहा जाता है। बंगाली और मराठी


गोवर्द्धन दास बिन्नाणी "राजा बाबू"

संस्कृति में शरद पूर्णिमा कहिए या कोजागरी पूर्णिमा, इसे एक महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। यहाँ यह जान लें कि 'कोजागरी' का अर्थ होता है—₹कौन जाग रहा है?₹। हमारे सनातनियों में ऐसी मान्यता है कि 'कोजागरी पूर्णिमा' वाली रात को माता लक्ष्मी जी जब धरती पर भ्रमण करने निकलती हैं, तब जो भी जागकर उनकी आराधना में लीन होता है, उसे वे धन-धान्य का आशीर्वाद देती हैं।

इन्हीं सभी कारणों से आज के दिन हर घर में खीर बनाकर, रात को एक मलमल के कपड़े से ढक कर, मकान की छत पर रात भर रखते हैं और वहाँ जहाँ तक सम्भव हो, घर का एक सदस्य रात को जागता रहता है।भगवन जप के साथ-साथ खीर की रखवाली भी हो जाती है। इस प्रक्रिया के पीछे ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से खीर में औषधीय और दैवीय गुण समा जाएँगे, क्योंकि आज की पूर्णिमा पर भगवान चन्द्रमा अपनी सभी सोलह कलाओं से पूर्ण होकर अमृत बरसाते हैं। यहाँ यह भी जान लें कि शरद पूर्णिमा के दिन ही प्रभु श्री कृष्ण ने वृन्दावन में गोपियों के साथ महारास की लीला की थी। इसी कारण से शरद पूर्णिमा को 'कोजागरी पूर्णिमा' के साथ-साथ 'रास पूर्णिमा' और 'कौमुदी महोत्सव' भी कहते हैं।



धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

26 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 1 — नेतृत्व, पहल, स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और नई शुरुआत

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 1 आपकी स्वाभाविक नेतृत्व और स्वतंत्रता की ऊर्जा को मजबूत करता है। नया प्रोजेक्ट, प्रस्ताव या आर्थिक योजना शुरू करें, लेकिन केवल आत्मविश्वास में नहीं—पहला कदम सोच-समझकर रखें।
रिश्ते: आज आपकी उपस्थिति मजबूत रहेगी। कठिन बातचीत की पहल गर्मजोशी से करें और सामने वाले को निर्देशित करने के बजाय उसकी बात भी सुनें।
सावधानी: अहंकार की टकराहट, अधीर खर्च और अपनी ही बात को हमेशा सही मानने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण काम निर्णायक रूप से शुरू करें और निरंतरता से नेतृत्व मजबूत करें।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 1 आपकी संवेदनशील प्रकृति को अधिक निर्णायक बनने को कहता है। नई पेशेवर दिशा या धन योजना तब बेहतर होगी जब बार-बार स्वीकृति मांगने के बजाय स्वयं पर भरोसा करेंगे।
रिश्ते: अपनी जरूरतें अधिक स्पष्ट रूप से बताने की आवश्यकता हो सकती है। नरमी रखें, लेकिन सामने वाले से बिना बताए सब समझ लेने की अपेक्षा न करें।
सावधानी: आत्म-संदेह, निर्भरता और केवल किसी को खुश करने के लिए निर्णय बदलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक स्वतंत्र निर्णय लें और संवाद को नरम व स्पष्ट रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 1 आपकी रचनात्मक ऊर्जा को नई शुरुआत देता है। विचार प्रस्तुत करें, कंटेंट शुरू करें, क्लाइंट से संपर्क करें या अच्छे विचार को स्पष्ट पहला कदम दें।
रिश्ते: आपका उत्साह रिश्ते में ताजगी ला सकता है। कुछ सकारात्मक शुरू करें, लेकिन बातचीत को केवल अपनी योजनाओं तक सीमित न रखें।
सावधानी: बड़े वादे, ध्यान आकर्षित करने के लिए खर्च और एक साथ बहुत कुछ शुरू करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक विचार चुनें और उसे आत्मविश्वासपूर्ण, व्यावहारिक शुरुआत दें।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 1 आपकी व्यवस्थित प्रकृति को नई शुरुआत की ओर धकेलता है। सिस्टम, बजट या काम के तरीके में नया दृष्टिकोण जरूरी हो सकता है; जो अच्छा चल रहा है उसे छोड़े बिना सुधार शुरू करें।
रिश्ते: आप परिचित दिनचर्या पसंद कर सकते हैं, जबकि आज पहल की जरूरत है। किसी व्यावहारिक या भावनात्मक विषय को सुलझाने का पहला कदम स्वयं लें।
सावधानी: कठोरता, अत्यधिक सावधानी और नया तरीका आजमाए बिना नकारने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक समझदार सुधार शुरू करें और उसे स्पष्ट संरचना दें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 1 आपकी तेज ऊर्जा को स्पष्ट दिशा देता है। नया संपर्क, व्यवसायिक विचार या बदलाव उपयोगी हो सकता है, यदि हर विकल्प के पीछे भागने के बजाय एक प्राथमिकता चुनें।
रिश्ते: आज स्वतंत्रता की इच्छा मजबूत रहेगी। अपनी योजनाएं स्पष्ट रखें ताकि सहजता किसी अपने को अलग-थलग महसूस न कराए।
सावधानी: अचानक खरीदारी, जल्दबाजी के निर्णय और नए आकर्षण के लिए पुरानी प्रतिबद्धता अधूरी छोड़ने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी स्वतंत्रता से कुछ मूल्यवान शुरू करें और उसे पूरा करने की दिशा रखें।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 1 आपको धन और काम के विषय में व्यक्तिगत पहल करने को कहता है। नया क्लाइंट तरीका, सेवा का विचार या आर्थिक लक्ष्य तब बढ़ेगा जब परफेक्ट समय का इंतजार छोड़ेंगे।
रिश्ते: आप दूसरों की देखभाल करते हैं, लेकिन आज अपनी जरूरतों को भी महत्व दें। उन्हें अपराधबोध या अतिरिक्त अपेक्षा के बिना व्यक्त करें।
सावधानी: स्वीकृति पाने के लिए खर्च, जरूरत से ज्यादा जिम्मेदारी और केवल दूसरों की सुविधा के आधार पर निर्णय से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: ऐसा एक लक्ष्य शुरू करें जो आत्मसम्मान और दीर्घकालिक सामंजस्य दोनों को समर्थन दे।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 1 आपकी चिंतनशील ऊर्जा को कार्रवाई की ओर ले जाता है। शोध और समझ का उपयोग नया प्रोजेक्ट, आवेदन या आर्थिक रणनीति शुरू करने में करें; लगातार विश्लेषण में न रुकें।
रिश्ते: आप निजता पसंद कर सकते हैं, लेकिन संवाद में नई शुरुआत संभव है। चुप्पी समझे जाने की उम्मीद करने के बजाय एक महत्वपूर्ण बात सीधे कहें।
सावधानी: अलगाव, हिचकिचाहट और उचित कदम के लिए पूर्ण निश्चितता का इंतजार करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक सत्यापित समझ पर कदम उठाएं और आगे का उत्तर अनुभव से आने दें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 1 आपकी महत्वाकांक्षा और अधिकार ऊर्जा के साथ मजबूत मेल रखता है। व्यवसाय, धन या नेतृत्व के विषय में जिम्मेदारी लें, लेकिन नई शुरुआत नैतिक, व्यावहारिक और योजनाबद्ध रखें।
रिश्ते: आपकी निर्णायक ऊर्जा तीव्र लग सकती है। विशेषकर साझा धन या जिम्मेदारियों में आदेश देने के बजाय सहयोग आमंत्रित करें।
सावधानी: प्रभुत्व, जोखिमपूर्ण आर्थिक कदम और हर मतभेद को अधिकार की चुनौती मानने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: दबाव के बजाय अनुशासन के साथ एक उच्च-मूल्य कदम शुरू करें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 1 आपकी पूर्णता वाली ऊर्जा के बाद नया चक्र लाता है। नई पेशेवर या आर्थिक दिशा शुरू करें, लेकिन समाप्त हुए अनुभव से मिली सीख को साथ रखें।
रिश्ते: भावनात्मक रूप से नया अध्याय शुरू हो सकता है। पुरानी नाराजगी छोड़ें और बार-बार अतीत दोहराने के बजाय आगे क्या बनाना चाहते हैं वह बताएं।
सावधानी: आवेग में उदारता, क्रोध से प्रेरित नई शुरुआत और पुराने विवाद को नई स्थिति में ले जाने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: स्पष्ट इरादे, मजबूत सीमाओं और रचनात्मक उद्देश्य के साथ नई शुरुआत करें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

कंपाउंड नंबर 11/2 – मानसिक एवं आध्यात्मिक अंतर्ज्ञान का मास्टर, अंतर्ज्ञान की शक्ति तथा सूर्य और चंद्रमा का द्वैत



डॉ. पूजाप्रसुन एनगोल्ड मेडलिस्ट Shivoham
Shastrshivohamshastr.co
m07303855446

कंपाउंड नंबर 11 और व्यक्तित्व, करियर, रिश्तों, स्वास्थ्य, धन, आध्यात्मिक विकास तथा भाग्य पर इसके प्रभाव का विस्तृत अध्ययन।

परिचयः नंबर 11 अलग क्यों हैः

अंक ज्योतिष में कंपाउंड नंबर 11 का एक विशिष्ट स्थान है। यह केवल ऐसा दूसरा नंबर नहीं है जिसका योग घटकर 2 बन जाता है। इसमें साथ खड़े दो 1 का प्रतीकात्मक अर्थ शामिल है, जबकि इसका डिजिटल रूट 2 है।

11 = 1 + 1 = 2

नंबर 1 का संबंध सूर्य से माना जाता है। सूर्य पहचान, अधिकार, व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा, नेतृत्व और चमकने की इच्छा का प्रतीक है। नंबर 2 का संबंध चंद्रमा से माना जाता है। चंद्रमा कल्पनाशक्ति, अंतर्ज्ञान, संवेदनशीलता, भावनाओं, ग्रहणशीलता और दूसरे लोगों को समझने की क्षमता का प्रतीक है।

इसलिए नंबर 11 दो अलग-अलग प्रकार की ऊर्जाओं को एक साथ लाता है। इसमें नंबर 1 की दोहरी उपस्थिति है, फिर भी इसकी अंतिम अभिव्यक्ति नंबर 2 से जुड़ी हुई है। इसी कारण यह विरोधाभासों का नंबर बन जाता हैः स्वतंत्रता और सहयोग, आत्मविश्वास और असुरक्षा, महत्वाकांक्षा और संवेदनशीलता, सार्वजनिक पहचान और निजी जीवन, तर्क और अंतर्ज्ञान।

आधुनिक अंक ज्योतिष में 11 को व्यापक रूप से पहला मास्टर नंबर माना जाता है। इसे अक्सर साइकिक मास्टर या मनुष्यों में मास्टर कहा जाता है। परंपरागत रूप से इसका संबंध तीव्र अंतर्ज्ञान, प्रेरणा, रचनात्मकता, आध्यात्मिक जागरूकता तथा विचारों, अभिव्यक्ति या व्यक्तिगत प्रभाव के माध्यम से दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता से जोड़ा जाता है।

हालाँकि, कंपाउंड नंबर 11 का एक दूसरा पक्ष भी है जिसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। चेरो की पुस्तक Book of Numbers में कंपाउंड 11 का वर्णन पारंपरिक रूप से बंद मुट्ठी और मुँह बंद किए हुए शेर के प्रतीकों के माध्यम से किया गया है। यह अधिक सावधानीपूर्ण व्याख्या है, जिसका संबंध छिपी हुई कठिनाइयों, परीक्षाओं और लोगों के साथ व्यवहार करते समय विवेक का उपयोग करने की आवश्यकता से है। आधुनिक मास्टर नंबर की व्याख्या और चेरो की कंपाउंड नंबर की व्याख्या एक जैसी नहीं हैं। नंबर 11 का गहराई से अध्ययन करते समय दोनों को समझना महत्वपूर्ण है।

मेरी समझ में नंबर 11 को सम्मान और सावधानी के साथ देखना चाहिए। यह पर्याप्त क्षमता का प्रतीक हो सकता है, लेकिन उस क्षमता को सही दिशा देना आवश्यक है। भावनात्मक संतुलन के बिना संवेदनशीलता भ्रम बन सकती है; धैर्य के बिना महत्वाकांक्षा निराशा बन सकती है; और व्यावहारिक समझ के बिना अंतर्ज्ञान गलत निर्णयों का कारण बन सकता है।

यद्यपि नंबर 11 को मास्टर नंबर माना जाता है और इसमें काफी संभावनाएँ मानी जाती हैं, फिर भी मेरी दृढ़ सलाह है कि इसे कभी भी नामांक के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। मेरी अंक ज्योतिषीय व्याख्या के अनुसार, 11 व्यक्ति के जीवन में परीक्षाएँ और कठिन परिस्थितियाँ लेकर आता है। ऐसा माना जा सकता है मानो भगवान कठिन परिस्थितियों, चुनौतीपूर्ण अनुभवों, अप्रत्याशित बाधाओं और जीवन के बड़े मोड़ों के माध्यम से व्यक्ति की परीक्षा लेते हैं। हालाँकि, यह भी माना जाता है कि जब व्यक्ति गंभीर कठिनाइयों का सामना करता है, तब ईश्वरीय सहायता उसे किसी बड़े संकट से बाहर निकलने का रास्ता दिखाने में मदद करती है। अंततः व्यक्ति किसी बहुत कठिन परिस्थिति से बच सकता है, लेकिन वहाँ तक पहुँचने की यात्रा में काफी संघर्ष हो सकता है। इसलिए मास्टर नंबर होने के बावजूद मैं 11 को नामांक के रूप में इस्तेमाल करने की सलाह नहीं देती।

नंबर 11 को मास्टर नंबर क्यों कहा जाता हैः

मास्टर नंबर की अवधारणा में कुछ दोहरे अंकों वाले नंबरों को विशेष महत्व दिया जाता है। आधुनिक पश्चिमी अंक ज्योतिष में विशेष रूप से 11, 22 और 33 को महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके पीछे विचार यह है कि इन नंबरों को केवल इनके घटे हुए अंकों के माध्यम से नहीं समझा जाता, बल्कि इनके दोहरे अंकों की पहचान भी बनाए रखी जाती है।

उदाहरण के लिए, 11 को केवल 2 के रूप में नहीं पढ़ा जाता। पहले इसे 11 के रूप में समझा जाता है और उसके बाद 2 के रूप में भी देखा जाता है।

दो 1 प्रतीकात्मक रूप से नंबर 1 के गुणों को बढ़ाते हैं। इनमें दृढ़ निश्चय, स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता, स्वतंत्रता, नेतृत्व और कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करने की इच्छा शामिल हैं। घटकर बनने वाला 2 कल्पनाशक्ति, संवेदनशीलता, सहयोग और भावनात्मक समझ जोड़ता है।

यह संयोजन ऐसे व्यक्ति का संकेत माना जाता है जो अपने जीवन में कुछ व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण हासिल करना चाहता है, लेकिन आसपास के वातावरण से भी गहराई से प्रभावित होता है। ऐसे व्यक्ति के भीतर कोई मजबूत दृष्टि या विचार हो सकता है, फिर भी कभी-कभी उसे दूसरों को समझाने या उस विचार को व्यावहारिक परिणाम में बदलने का सही तरीका तय करने में कठिनाई हो सकती है।

आध्यात्मिक व्याख्याओं में मास्टर नंबरों को कभी-कभी अधिक जिम्मेदारी या जीवन के कठिन सबक से जुड़ा हुआ माना जाता है। कुछ परंपराएँ प्रतीकात्मक रूप से कहती हैं कि कोई अदृश्य मार्गदर्शक शक्ति व्यक्ति के साथ रहती है, उसकी शक्ति की परीक्षा लेती है और कठिन समय में उसे आगे बढ़ने का रास्ता खोजने में सहायता करती है। इस आध्यात्मिक समझ के अनुसार, भगवान व्यक्ति की परीक्षा भी लेते हैं और गंभीर विपत्ति के समय सहायता भी प्रदान करते हैं।

नंबर 11 का मुख्य सबक यह है कि अधिक संवेदनशीलता के साथ अधिक आत्म-जागरूकता भी आवश्यक है। इसकी क्षमता तब सबसे अच्छी तरह सामने आती है जब अंतर्ज्ञान को अनुशासन, आत्मविश्वास को विनम्रता और प्रेरणा को निरंतर प्रयास का समर्थन मिलता है।

हालाँकि, मैं नंबर 11 के प्रभाव के साथ जन्म लेने और जानबूझकर 11 को नामांक के रूप में चुनने के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर मानती हूँ। किसी व्यक्ति की जन्मतिथि में स्वाभाविक रूप से 11 हो सकता है, लेकिन ऐसा नाम अपनाना जिसका कुल योग 11 हो, मेरी अंक ज्योतिषीय पद्धति में एक अलग बात है। मैं 11 को नामांक के रूप में अनुपयुक्त मानती हूँ क्योंकि इसका संबंध परीक्षाओं, कठिन परिस्थितियों और चुनौतीपूर्ण जीवन अनुभवों से है। आध्यात्मिक विश्वास यह है कि ईश्वरीय सहायता अंततः व्यक्ति को बड़ी कठिनाइयों से उबरने में मदद करती है, लेकिन जब किसी दूसरे उपयुक्त विकल्प पर विचार किया जा सकता है, तो मैं नाम के माध्यम से इस प्रवृत्ति को आमंत्रित करना पसंद नहीं करती।

दो सूर्य और चंद्रमाः नंबर 11 का केंद्रीय सिद्धांतः

नंबर 11 को समझने के लिए हमें दो 1 और उनके घटकर 2 बनने, दोनों को देखना होगा।

दो 1ः सूर्य, पहचान और महत्वाकांक्षाः

भारतीय अंक ज्योतिष में आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले ग्रह-संबंधी प्रतीकवाद में नंबर 1 का संबंध सूर्य से माना जाता है। सूर्य व्यक्तित्व, अधिकार, पहचान, नेतृत्व, आत्मविश्वास और अपनी अलग पहचान स्थापित करने की इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है।

जब दो 1 एक साथ आते हैं, तो इन गुणों को प्रतीकात्मक रूप से अधिक प्रबल माना जा सकता है। व्यक्ति अलग पहचान बनाना, स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करना, नेतृत्व करना या कुछ मौलिक योगदान देना चाह सकता है।

इस प्रतीकवाद की सकारात्मक अभिव्यक्ति में मजबूत व्यक्तित्व, आत्म-प्रेरणा, मौलिक सोच, दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता, परंपरा से अलग रास्ता अपनाने का साहस, उत्कृष्टता हासिल करने की इच्छा तथा विचारों, प्रदर्शन या नेतृत्व के माध्यम से प्रभावशाली बनने की संभावना शामिल हैं।

इसका चुनौतीपूर्ण पक्ष अत्यधिक आत्म-जागरूकता, स्वयं को साबित करने का आंतरिक दबाव, आलोचना के प्रति संवेदनशीलता या पहचान पाने की इच्छा और अस्वीकृति के डर के बीच संघर्ष के रूप में सामने आ सकता है।

चंद्रमाः भावनाएँ, अंतर्ज्ञान और कल्पनाशक्ति

इस अंक ज्योतिषीय ढाँचे में नंबर 2 का संबंध चंद्रमा से माना जाता है। चंद्रमा भावनात्मक समझ, कल्पनाशक्ति, ग्रहणशीलता, अनुकूलनशीलता और आंतरिक संसार का प्रतीक है।

चंद्रमा अपना प्रकाश स्वयं उत्पन्न नहीं करता; वह सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करता है। प्रतीकात्मक रूप से यह नंबर 1 और नंबर 2 के संबंध को समझने का एक उपयोगी तरीका है। सूर्य चमकने की प्रेरणा का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि चंद्रमा उस प्रकाश को ग्रहण करने, प्रतिबिंबित करने, समझने और आगे व्यक्त करने की क्षमता का प्रतीक है।

जब 11 घटकर 2 बनता है, तो व्यक्ति में स्वयं को व्यक्त करने की प्रबल इच्छा के साथ-साथ दूसरे लोगों की प्रतिक्रियाओं के प्रति अधिक जागरूकता भी हो सकती है। वह अपनी महत्वाकांक्षाओं में स्वतंत्र हो सकता है, लेकिन रिश्तों, प्रशंसा, अस्वीकृति या आसपास के वातावरण से भावनात्मक रूप से प्रभावित भी हो सकता है।

इससे एक विरोधाभास दिखाई दे सकता है। व्यक्ति सार्वजनिक जीवन में शक्तिशाली, आत्मविश्वासी और अधिकारपूर्ण दिखाई दे सकता है, जबकि निजी जीवन में संवेदनशील, एकांतप्रिय या भावनात्मक रूप से अस्थिर महसूस कर सकता है।

जब सूर्य और चंद्रमा साथ काम करते हैंः

नंबर 11 की सकारात्मक अभिव्यक्ति तब सामने आती है जब इसकी दोनों प्रतीकात्मक शक्तियाँ एक-दूसरे के साथ तालमेल बनाती हैं।

सूर्य दिशा देता है। चंद्रमा संवेदनशीलता देता है।

सूर्य कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। चंद्रमा विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

सूर्य पहचान चाहता है। चंद्रमा रिश्तों को समझता है।

जब ये गुण संतुलित होते हैं, तो 11 को ऐसे प्रेरित व्यक्ति का नंबर माना जा सकता है जो असंवेदनशील हुए बिना नेतृत्व कर सके, अपना व्यक्तित्व खोए बिना दूसरों को प्रभावित कर सके और अपने आंतरिक विचार को दुनिया के लिए किसी सार्थक कार्य में बदल सके।

जब इनका संतुलन बिगड़ता है, तो यही प्रतीकवाद अनिर्णय, बदलते मनोभाव, आत्म-संदेह, दूसरों की स्वीकृति पर निर्भरता या व्यक्तिगत भावनाओं को व्यावहारिक निर्णयों से अलग न कर पाने की कठिनाई का संकेत दे सकता है।

दो 1 और चंद्रमा से जुड़े 2 का यह संयोजन प्रतीकात्मक रूप से शक्तिशाली हो सकता है, लेकिन इससे नाम चयन के बारे में मेरी सलाह नहीं बदलती। मैं 11 को ऐसा नंबर मानती हूँ जो परीक्षाएँ और कठिन परिस्थितियाँ ला सकता है। इसलिए मैं इसे नामांक के रूप में इस्तेमाल करने के विरुद्ध सलाह देती हूँ।

नंबर 11/2 का मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्वः

अंक ज्योतिषीय व्याख्या में 11/2 से विशेष रूप से प्रभावित व्यक्तियों को अक्सर समझदार, कल्पनाशील, आदर्शवादी और अपने वातावरण के प्रति संवेदनशील बताया जाता है।

वे उन बातों पर ध्यान दे सकते हैं जिन्हें दूसरे लोग नज़रअंदाज़ कर देते हैं। वे बिना कहे पैदा होने वाले तनाव को समझ सकते हैं या ऐसी संभावनाएँ पहचान सकते हैं जो दूसरों को अभी स्पष्ट नहीं होतीं। संगीत, कला, भाषा, सौंदर्य, आध्यात्मिकता और मानवीय पीड़ा के प्रति भी उनकी प्रतिक्रिया गहरी हो सकती है।

हालाँकि, संवेदनशील होने का अर्थ यह नहीं है कि अंतर्ज्ञान हमेशा सही ही होगा। कभी-कभी व्यक्ति किसी वास्तविक अवलोकन को डर, धारणा या इच्छापूर्ण सोच के साथ मिला सकता है। इसलिए नंबर 11 की व्याख्या में विवेक का विशेष महत्व है।

सकारात्मक गुणों में अंतर्ज्ञान, सूक्ष्म समझ, रचनात्मकता, सहानुभूति, प्रेरणा, आदर्शवाद और कूटनीतिक व्यवहार शामिल हैं। व्यक्ति ध्यान देने वाला और विचारशील हो सकता है, उसका आंतरिक संसार समृद्ध हो सकता है, वह अलग-अलग दृष्टिकोणों को समझ सकता है, विचारों के माध्यम से दूसरों को प्रेरित कर सकता है और अपने काम में धन या प्रतिष्ठा से आगे बढ़कर कोई अर्थ खोजना चाह सकता है।

चुनौतीपूर्ण गुणों में अत्यधिक सोचना, भावनात्मक उतार-चढ़ाव, अनिर्णय, गोपनीयता, आलोचना के प्रति संवेदनशीलता और अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देने में कठिनाई शामिल हो सकती है। अत्यधिक सक्रिय कल्पनाशक्ति छोटी-छोटी अनिश्चितताओं को लंबे समय तक चलने वाली चिंताओं में बदल सकती है। व्यक्तिगत परिस्थितियों, रिश्तों या दूसरों की स्वीकृति की अनुभूति के अनुसार आत्मविश्वास बढ़ या घट सकता है। व्यक्ति बाहर से शांत दिखाई देते हुए भी अपने डर छिपा सकता है। नंबर 2 का सहयोगी स्वभाव कभी-कभी व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों की कीमत पर दूसरे लोगों को बहुत अधिक समय और ऊर्जा देने के लिए प्रेरित कर सकता है।

उद्देश्य संवेदनशीलता को समाप्त करना नहीं है। उद्देश्य भावनात्मक स्थिरता विकसित करना है, ताकि संवेदनशीलता अनावश्यक परेशानी का कारण बनने के बजाय ताकत बन सके।

कंपाउंड नंबर 11 और बंद मुट्ठी की चेतावनीः

नंबर 11 के गंभीर अध्ययन में चेरो की कंपाउंड नंबर से जुड़ी पारंपरिक व्याख्या शामिल होनी चाहिए।

चेरो की पुस्तक Book of Numbers में 11 का संबंध बंद मुट्ठी और मुँह बंद किए हुए शेर से बताया गया है। यह प्रतीक ऐसी शक्ति का संकेत देता है जिस पर प्रतिबंध हो सकता है, ऐसी आवाज़ का जो पूरी तरह सुनी नहीं जा सकती, या ऐसे व्यक्ति का जिसे उन परिस्थितियों के प्रति सतर्क रहना चाहिए जो तुरंत दिखाई नहीं देतीं। चेरो की व्याख्या छिपे हुए खतरों, परीक्षाओं और संभावित विश्वासघात के प्रति चेतावनी देती है।

यह आधुनिक समय में 11 को मास्टर नंबर के रूप में मुख्यतः सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत करने से काफी अलग है। इन दोनों व्याख्याओं को एक जैसा नहीं मानना चाहिए और न ही इस्तेमाल की जा रही पद्धति पर विचार किए बिना केवल अपनी सुविधा के अनुसार किसी एक व्याख्या को चुनना चाहिए।

व्यावहारिक अंक ज्योतिषीय विश्लेषण में मैं इस चेतावनी को तीन क्षेत्रों पर सावधानी से विचार करने की याद दिलाने वाला संकेत मानती हूँ।

लोगः.यह न मानें कि आपकी प्रशंसा करने वाला हर व्यक्ति वास्तव में आपका भला चाहता है। केवल वादों के बजाय व्यवहार के आधार पर विश्वसनीयता का आकलन करें।

निर्णयः उत्साह, डर या भावनात्मक दबाव के कारण समझौते करने में जल्दबाजी न करें।

व्यक्तिगत सीमाएँः अपनी संवेदनशीलता या दूसरों की मदद करने की इच्छा को इस हद तक न बढ़ने दें कि कोई व्यक्ति आपका अनुचित लाभ उठा सके।

इस प्रतीकवाद का अर्थ यह नहीं है कि 11 के प्रभाव में जन्म लेने वाले हर व्यक्ति के साथ अनिवार्य रूप से विश्वासघात होगा। हालाँकि, मेरी व्याख्या में इस कंपाउंड नंबर के साथ परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों की एक गंभीर चेतावनी जुड़ी हुई है। मेरा विश्वास है कि जब व्यक्ति किसी बड़े संकट का सामना करता है, तो भगवान अंततः सहायता और संरक्षण प्रदान करते हैं। फिर भी राहत मिलने से पहले व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ सकता है।

यह उन प्रमुख कारणों में से एक है जिनकी वजह से मैं 11 को नामांक के रूप में इस्तेमाल करने की सलाह नहीं देती। नाम ऐसी चीज़ है जिसे व्यक्ति जानबूझकर चुनता है और रोजमर्रा के जीवन में बार-बार इस्तेमाल करता है। अपनी अंक ज्योतिषीय पद्धति में मैं ऐसा नंबर सुझाना पसंद करती हूँ जो व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं को समर्थन दे और साथ ही उन कठिन प्रतीकात्मक अर्थों को न जोड़े जिन्हें मैं 11 से संबंधित मानती हूँ।

करियर और पेशेवर जीवन में नंबर 11ः

परंपरागत रूप से नंबर 11 का संबंध ऐसे करियर से जोड़ा जाता है जिनमें कल्पनाशक्ति, संचार, मानवीय समझ, मौलिकता या सार्वजनिक प्रभाव महत्वपूर्ण हों।

यह नंबर किसी व्यक्ति को केवल एक ही पेशे तक सीमित नहीं करता। व्यक्ति की शिक्षा, कौशल, परिस्थितियों, रुचियों और अन्य अंक ज्योतिषीय कारकों पर भी विचार करना आवश्यक है।

अभिनय, सिनेमा और मनोरंजनः

11/2 के कल्पनाशील और अभिव्यक्तिपूर्ण प्रतीकवाद को अभिनय, निर्देशन, लेखन, संगीत, प्रदर्शन, प्रस्तुति और अन्य रचनात्मक क्षेत्रों से जोड़ा जा सकता है।

एक अभिनेता को भावनाओं को समझना, अलग-अलग व्यक्तित्वों को पहचानना और अपने अनुभव को दर्शकों तक पहुँचाना होता है। नंबर 2 से जुड़ी संवेदनशीलता प्रतीकात्मक रूप से इस प्रक्रिया में सहायता कर सकती है, जबकि दो 1 एक अलग पहचान बनाने और लोगों का ध्यान आकर्षित करने की इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लेखन, संचार और मीडिया

इस नंबर का संबंध लेखकों, कवियों, पत्रकारों, पटकथा लेखकों, सार्वजनिक वक्ताओं, प्रसारकों और संचार से जुड़े पेशेवरों से जोड़ा जा सकता है।

इन पेशों में कल्पनाशक्ति और दर्शकों को समझने की क्षमता, दोनों की आवश्यकता होती है। 11 से प्रभावित व्यक्ति भावनात्मक, दार्शनिक, मौलिक या सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण विचारों को व्यक्त करने की ओर आकर्षित हो सकता है।

परामर्श, शिक्षण और सलाहकार कार्यः

नंबर 2 का अंतर्ज्ञान और सहानुभूति से जुड़ा प्रतीकवाद शिक्षण, मार्गदर्शन, कोचिंग, परामर्श और सलाहकार भूमिकाओं से मेल खा सकता है।

इन क्षेत्रों में सफलता के लिए केवल संवेदनशीलता पर्याप्त नहीं है। प्रशिक्षण, सही निर्णय लेने की क्षमता, गोपनीयता, पेशेवर नैतिकता और स्पष्ट व्यक्तिगत सीमाएँ भी आवश्यक हैं।

उपचार और सेवा से जुड़े पेशेः

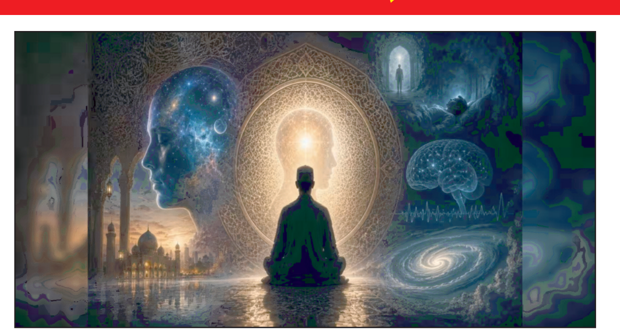
कुछ अंक ज्योतिषीय परंपराएँ 11 को उपचार, आध्यात्मिकता और सेवा से जोड़ती हैं। आधुनिक पेशेवर संदर्भ में यह लोगों की सहायता करने वाले कार्यों से संबंधित हो सकता है, जिनमें उचित प्रशिक्षण प्राप्त स्वास्थ्यकर्मी, शिक्षक, सहायता-कर्मी और सामाजिक सेवा से जुड़े पेशेवर शामिल हैं।

केवल यह नंबर किसी व्यक्ति को चिकित्सा, मनोविज्ञान या उपचार की योग्यता प्रदान नहीं करता। आवश्यक योग्यताएँ और प्रमाण-आधारित कार्यपद्धति महत्वपूर्ण बनी रहती हैं।

नेतृत्व, प्रशासन और परामर्शः

यद्यपि 11 को अक्सर बलशाली होने के बजाय संवेदनशील नंबर बताया जाता है, लेकिन इसके दो 1 इसे व्यक्तित्व और पहल करने की क्षमता से प्रतीकात्मक रूप से जोड़ते हैं। इसे नेतृत्व, उद्यमिता, प्रशासन या परामर्श की संभावना के रूप में समझा जा सकता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ संचार और लोगों को समझना महत्वपूर्ण है।

पेशेवर जीवन की मुख्य चुनौती निरंतरता है। प्रेरणा उत्कृष्ट विचार दे सकती है, लेकिन सफलता परियोजनाओं को पूरा करने, संसाधनों का प्रबंधन करने, विश्वसनीय लोगों के साथ काम करने और अपनी जिम्मेदारियों को निभाने पर निर्भर करती है।



11 से जुड़ी पेशेवर संभावनाओं और नाम में 11 इस्तेमाल करने के प्रश्न को अलग-अलग समझना चाहिए। किसी व्यक्ति की जन्मतिथि में 11 हो सकता है और फिर भी वह उत्कृष्ट करियर बना सकता है। नामांक के रूप में 11 का इस्तेमाल न करने की मेरी सलाह इस कंपाउंड नंबर से जुड़ी परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों की मेरी व्याख्या पर आधारित है।

व्यवसाय और उद्यमिता में नंबर 11ः

व्यवसाय में 11/2 को प्रतीकात्मक रूप से संचार, सौंदर्य, जनसंपर्क, शिक्षा, रचनात्मक सेवाओं, आतिथ्य, परामर्श और कल्पनाशक्ति या भावनात्मक आकर्षण से जुड़े उत्पादों के लिए अनुकूल माना जा सकता है।

इस नंबर से प्रभावित व्यवसाय का मालिक ग्राहक के अनुभव, ब्रांड की पहचान, प्रस्तुति और किसी उत्पाद से पैदा होने वाली भावनात्मक प्रतिक्रिया पर विशेष ध्यान दे सकता है।

इसकी संभावित खूबियों में ग्राहकों की पसंद को समझना, विशिष्ट ब्रांड व्यक्तित्व बनाना, व्यवसाय की दृष्टि को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना, रिश्ते और साझेदारियाँ बनाना तथा रचनात्मक अवसरों को पहचानना शामिल हैं।

चुनौतियों में कठिन निर्णय लेने में हिचकिचाहट, जरूरत से ज्यादा भरोसा करना, टकराव से बचना या व्यक्तिगत भावनाओं को व्यावसायिक निर्णयों पर हावी होने देना शामिल हो सकता है।

व्यवसाय को बढ़ाने के लिए अंतर्ज्ञान के साथ वित्तीय रिकॉर्ड, बाजार अनुसंधान, अनुबंध, संचालन की योजना और जोखिम का वास्तविक आकलन भी आवश्यक है। अंक ज्योतिषीय विश्लेषण को कभी भी उचित जाँच-पड़ताल का विकल्प नहीं बनाना चाहिए।

व्यवसाय का नाम चुनते समय मैं ऐसा नाम चुनने की सलाह नहीं दूँगी जिसका कुल योग 11 हो। मेरी व्याख्या में व्यवसाय प्रतीकात्मक रूप से परीक्षाओं, कठिन परिस्थितियों और बड़ी चुनौतियों का सामना कर सकता है। यद्यपि ईश्वरीय सहायता अंततः व्यक्ति को किसी गंभीर समस्या से उबरने में मदद कर सकती है, फिर भी मैं व्यवसाय की प्रकृति और पूरी अंक ज्योतिषीय कुंडली का विश्लेषण करने के बाद कोई उपयुक्त वैकल्पिक नामांक चुनना पसंद करूँगी।

नंबर 11 और धनः कमाना, बचाना और बढ़ानाः

11 की उपस्थिति अपने आप धन-संपत्ति की गारंटी नहीं देती। अंक ज्योतिष में इसकी संभावनाओं को व्यक्ति के काम करने के तरीके, रचनात्मकता, संचार और निर्णय लेने की प्रक्रिया के संदर्भ में बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

कमाई की संभावनाः

11/2 के प्रतीकवाद को प्रतिभा, मौलिक विचारों, सार्वजनिक पहचान, सलाह देने की क्षमता, संचार और संबंधों के माध्यम से कमाई से जोड़ा जा सकता है। जब व्यक्ति कोई विशिष्ट कौशल विकसित करता है और उसके आधार पर अपनी प्रतिष्ठा बनाता है, तो ये गुण पेशेवर विकास में सहायता कर सकते हैं।

वित्तीय चुनौतियाँः

नंबर 2 का संवेदनशील और आदर्शवादी पक्ष कभी-कभी भावनाओं के आधार पर निर्णय लेने, अपनी क्षमता से अधिक दूसरों की मदद करने, आवश्यक वित्तीय बातचीत को टालने या पर्याप्त जाँच किए बिना व्यावसायिक साझेदार पर भरोसा करने की प्रवृत्ति से जोड़ा जा सकता है।

दो 1 महत्वाकांक्षी लक्ष्यों और स्पष्ट उपलब्धि पाने की इच्छा का भी प्रतीक हो सकते हैं। यदि महत्वाकांक्षा के साथ योजना न हो, तो व्यक्ति अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक जोखिम उठा सकता है।

धन बनाने के सिद्धांतः

जो व्यक्ति 11/2 से स्वयं को विशेष रूप से जुड़ा हुआ मानता है, उसके लिए व्यावहारिक सबक स्पष्ट हैं। व्यक्तिगत और व्यावसायिक वित्त को अलग रखें। किसी भी समझौते पर हस्ताक्षर करने से पहले उसकी समीक्षा करें। अपनी परिस्थितियों के अनुसार बचत और निवेश की योजना बनाएँ। दूसरों को पैसे उधार देने या उनके कर्ज की जिम्मेदारी लेने की सीमाएँ तय करें। निवेश के निर्णय डर या केवल अंतर्ज्ञान के आधार पर नहीं, बल्कि विश्वसनीय जानकारी के आधार पर लें। एक बड़ी सफलता पर निर्भर रहने के बजाय धीरे-धीरे वित्तीय स्थिरता बनाएँ।

इस व्याख्या में 11 की सबसे रचनात्मक अभिव्यक्ति केवल अवसर आकर्षित करने की क्षमता नहीं, बल्कि उन अवसरों का समझदारी से प्रबंधन करने की योग्यता है।

किसी व्यक्ति, व्यवसाय या ब्रांड के लिए नाम चुनते समय मैं 11 के कुल योग से बचने की सलाह दूँगी, क्योंकि मैं इसे परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों से जोड़ती हूँ। मेरा विश्वास है कि ईश्वरीय सहायता किसी व्यक्ति को बड़ी कठिनाइयों से उबरने में मदद कर सकती है, लेकिन जब अन्य उपयुक्त विकल्पों पर विचार किया जा सकता है, तो मैं जानबूझकर ऐसा नामांक चुनना उचित नहीं मानती जो इन परीक्षाओं से जुड़ा हो।

नंबर 11 और व्यक्तिगत रिश्तेः

11/2 की प्रतीकात्मक व्याख्या में रिश्ते विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह नंबर स्वतंत्रता और संवेदनशीलता को एक साथ लाता है।

दो 1 मजबूत व्यक्तिगत पहचान का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। घटकर बनने वाला 2 साथ, भावनात्मक जुड़ाव और सहयोग का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए व्यक्ति स्वतंत्रता भी चाह सकता है और निकटता भी।

प्रेम और भावनात्मक जुड़ावः

11/2 से जुड़े व्यक्तियों को अक्सर रोमांटिक, कल्पनाशील, देखभाल करने वाला और भावनात्मक रूप से समझदार बताया जाता है। वे सार्थक बातचीत और ऐसे रिश्ते को महत्व दे सकते हैं जिसमें उन्हें समझा जाए।

वे अपने साथी के बोलने के तरीके, व्यवहार या दूरी बनाने से भी गहराई से प्रभावित हो सकते हैं। यदि अनिश्चितताओं पर खुलकर बातचीत न हो, तो कल्पनाशक्ति उन खाली जगहों को धारणाओं से भर सकती है।

विवाह और दीर्घकालिक साझेदारीः

इस नंबर की प्रतीकात्मक चुनौती व्यक्तिगत पहचान और समझौते के बीच संतुलन बनाना है।

स्वस्थ साझेदारी के लिए दोनों लोगों का अपनी आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, जिम्मेदारियाँ साझा करना और एक-दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करना आवश्यक है। 11 से जुड़े व्यक्ति को यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि उसका साथी बिना बताए उसकी भावनाओं को अपने आप समझ जाएगा।

भावनात्मक तीव्रता को अनुकूलता समझ लेना भी सही नहीं है। किसी रिश्ते की स्थिर नींव के लिए विश्वास, सम्मान, साझा मूल्य, संवाद और निरंतर अच्छा व्यवहार किसी एक नंबर की तुलना में अधिक विश्वसनीय आधार हैं।

पारिवारिक रिश्तेः

नंबर 2 के सहयोगी प्रभाव को परिवार में सामंजस्य बनाए रखने की इच्छा के रूप में समझा जा सकता है। हालाँकि, कभी-कभी व्यक्ति विवाद से बचने के लिए अपनी आवश्यकताओं को दबा सकता है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि सामंजस्य का अर्थ चुप रहना नहीं है। अपनी चिंताओं को छिपाए रखने की तुलना में ईमानदार बातचीत और स्वस्थ व्यक्तिगत सीमाएँ रिश्तों को अधिक प्रभावी ढंग से बनाए रख सकती हैं।

रिश्तों से जुड़ी नंबर 11 की व्याख्या भी नाम में इसका इस्तेमाल न करने के प्रति मेरी सावधानी को मजबूत करती है। मेरी अंक ज्योतिषीय समझ के अनुसार, यह नंबर परीक्षाएँ और कठिन परिस्थितियाँ ला सकता है, जिनमें व्यक्ति को धैर्य, भावनात्मक परिपक्वता और विवेक विकसित करने की आवश्यकता होती है। यद्यपि मेरा विश्वास है कि भगवान की सहायता अंततः व्यक्ति को गंभीर कठिनाइयों से उबरने में मदद करती है, फिर भी मैं नामांक के माध्यम से इस प्रतीकवाद को जानबूझकर शामिल करना पसंद नहीं करती।

नंबर 11 और स्वास्थ्यः संवेदनशीलता, तनाव और संतुलनः

अंक ज्योतिषीय परंपराओं में नंबर 2 के चंद्रमा-संबंधी प्रतीकवाद को अक्सर भावनात्मक उतार-चढ़ाव से जोड़ा जाता है, जबकि दो 1 आंतरिक दबाव और नियंत्रण बनाए रखने की इच्छा का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। इस प्रतीकात्मक ढाँचे में 11 को तनाव, आराम और भावनात्मक संतुलन पर ध्यान देने की याद दिलाने वाले संकेत के रूप में देखा जा सकता है।

ऐसा कोई विश्वसनीय वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है कि कंपाउंड नंबर 11 या कोई नामांक किसी व्यक्ति की चिकित्सा संबंधी स्थिति, बीमारी, स्वास्थ्य लाभ या जीवनकाल की भविष्यवाणी करता है। किसी स्वास्थ्य समस्या का निदान करने या यह तय करने के लिए अंक ज्योतिष का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति खतरे से सुरक्षित है या नहीं।

व्यावहारिक सुझाव हर व्यक्ति के लिए उपयोगी हैं, चाहे उसका नंबर कुछ भी हो। सोने-जागने का नियमित समय बनाए रखें। सामान्य स्वास्थ्य और बेहतर जीवन के लिए उपयुक्त शारीरिक गतिविधि करें। तनाव को संभालने के स्वस्थ तरीके विकसित करें। मनोरंजन, रिश्तों और आराम के लिए समय निकालें। लगातार बने रहने वाले लक्षणों या स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के लिए योग्य चिकित्सक से सलाह लें।

जो लोग संवेदनशील हैं या बहुत अधिक सोचते हैं, उन्हें तनाव को शुरुआती चरण में पहचानना, अपनी चिंताओं पर बातचीत करना और वास्तविक समस्या को सबसे बुरी संभावित स्थिति की कल्पना से अलग करना सीखने से लाभ हो सकता है।

अंक ज्योतिषीय व्याख्या को जिम्मेदार आत्म-देखभाल को प्रोत्साहित करना चाहिए। उसे बीमारी का डर पैदा नहीं करना चाहिए और न ही यह झूठा आश्वासन देना चाहिए कि कोई नंबर व्यक्ति की रक्षा करेगा।

यद्यपि मैं अंक ज्योतिष के संदर्भ में 11 को परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों से जोड़ती हूँ, लेकिन इसे बीमारी या शारीरिक खतरे की भविष्यवाणी नहीं समझना चाहिए। 11 को नामांक के रूप में इस्तेमाल न करने की मेरी सलाह इसके पारंपरिक और आध्यात्मिक प्रतीकवाद पर आधारित है, न कि इस दावे पर कि यह नंबर किसी चिकित्सकीय स्थिति का कारण बनता है।

नंबर 11 और आध्यात्मिक विकासः

आध्यात्मिकता आधुनिक मास्टर नंबर 11 की व्याख्याओं के सबसे प्रमुख विषयों में से एक है।

इस नंबर को अक्सर आत्मचिंतन, अंतर्ज्ञान, आदर्शवाद और जीवन के गहरे अर्थ को समझने की इच्छा से जोड़ा जाता है। जो व्यक्ति इस प्रतीकवाद से स्वयं को जुड़ा हुआ मानते हैं, वे ध्यान, प्रार्थना, दर्शन, चिंतनशील अभ्यास या दूसरों की सेवा की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

हालाँकि, गहरा सबक यह है कि आध्यात्मिकता के साथ विवेक भी होना चाहिए।

कोई प्रबल भावना आवश्यक नहीं कि भविष्यवाणी हो। कोई संयोग आवश्यक नहीं कि आदेश हो। अंतर्ज्ञान से प्राप्त किसी धारणा को तर्क, प्रमाण और अनुभव के साथ परखना चाहिए।

11 की सबसे रचनात्मक आध्यात्मिक अभिव्यक्ति में अपनी सीमाएँ खोए बिना करुणा विकसित करना, अपने व्यक्तित्व को दबाए बिना विनम्र रहना और सही निर्णय लेने की समझ छोड़े बिना आस्था बनाए रखना शामिल है।

मेरी आध्यात्मिक व्याख्या में मास्टर नंबर 11 के साथ विशेष जिम्मेदारी जुड़ी हुई है। कभी-कभी इसे ऐसा नंबर माना जाता है जिसके माध्यम से भगवान व्यक्ति की परीक्षा लेते हैं, उसे कठिन परिस्थितियों का सामना करने देते हैं और महत्वपूर्ण सबक सीखने का अवसर प्रदान करते हैं। साथ ही, यह भी माना जाता है कि जब व्यक्ति गंभीर कठिनाई के बिंदु पर पहुँचता है, तब ईश्वरीय सहायता प्रकट होती है और उसे आगे बढ़ने तथा बड़े संकट से उबरने का रास्ता खोजने में मदद करती है।

यही वह केंद्रीय द्वैत है जिसे मैं 11 से जोड़ती हूँः एक ओर परीक्षाएँ और कठिन परिस्थितियाँ, दूसरी ओर ईश्वरीय सहायता की संभावना। मैं इसे इस गारंटी के रूप में नहीं समझती कि हर व्यक्ति हर विपत्ति से सुरक्षित रहेगा। इसके बजाय, यह इस बात की आध्यात्मिक समझ है कि आस्था और मानसिक दृढ़ता कठिन समय से गुजरने में व्यक्ति की मदद कर सकती हैं।

इसी कारण मैं 11 को एक महत्वपूर्ण मास्टर नंबर मानती हूँ, लेकिन नामांक के लिए अच्छा विकल्प नहीं मानती। मैं 11 के आध्यात्मिक अर्थ को समझने और जानबूझकर इसे नाम में अपनाने के बीच अंतर रखना पसंद करती हूँ।

क्या नंबर 11 का इस्तेमाल नाम में करना चाहिए?

मेरी सलाह स्पष्ट हैः नंबर 11 को कभी भी नामांक के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

इसका कारण यह नहीं है कि 11 में सकारात्मक गुण नहीं हैं। इसके विपरीत, आधुनिक अंक ज्योतिष में अंतर्ज्ञान, प्रेरणा, रचनात्मकता और आध्यात्मिक विकास से जुड़े होने के कारण इसे काफी महत्व दिया जाता है।

चिंता का विषय यह है कि अलग-अलग अंक ज्योतिषीय पद्धतियाँ 11 की अलग-अलग व्याख्या करती हैं। आधुनिक मास्टर नंबर की व्याख्या अक्सर अनुकूल होती है, जबकि चेरो की पारंपरिक कंपाउंड नंबर की व्याख्या सावधानी की सलाह देती है।

अपनी अंक ज्योतिषीय पद्धति में मैं नामांक 11 को परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों से जोड़ती हूँ। प्रतीकात्मक रूप से इनका अर्थ संघर्ष, अप्रत्याशित बाधाएँ, कठिन निर्णय और जीवन के बड़े मोड़ हो सकते हैं। मेरा आध्यात्मिक विश्वास है कि भगवान अंततः व्यक्ति को गंभीर संकट से उबरने में सहायता करते हैं, लेकिन उससे पहले व्यक्ति को किसी चुनौतीपूर्ण अनुभव से गुजरना पड़ सकता है।

यह विचार कि भगवान पहले परीक्षा लेते हैं और फिर बचाते हैं, इस नंबर के बारे में मेरी व्याख्या का केंद्रीय हिस्सा है। हालाँकि, मैं ईश्वरीय सहायता की संभावना को नाम के लिए जानबूझकर 11 चुनने का कारण नहीं मानती। इसके बजाय, मैं ऐसा उपयुक्त वैकल्पिक नामांक सुझाना पसंद करूँगी जो व्यक्ति की पूरी अंक ज्योतिषीय कुंडली और उद्देश्यों के अनुकूल हो।

मेरी अंतिम स्थिति वही हैः 11 पर्याप्त प्रतीकात्मक शक्ति वाला मास्टर नंबर है, लेकिन इसे जानबूझकर नामांक के रूप में नहीं चुनना चाहिए, क्योंकि मैं इसे परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों से जोड़ती हूँ, जिनके बाद बड़ी कठिनाइयों से उबरने में ईश्वरीय सहायता मिलने की संभावना मानी जाती है।

जन्मतिथि में नंबर 11 और नाम में नंबर 11ः

यह समझना महत्वपूर्ण है कि 11 किस स्थान पर मौजूद है।

जन्मांक 11/2ः

महीने की 11 तारीख को जन्म लेने वाले व्यक्ति का जन्मांक 11/2 होता है। आधुनिक मास्टर नंबर पद्धति में दो 1 को बनाए रखा जाता है और घटकर बनने वाले 2 के साथ उनकी व्याख्या की जाती है।

आमतौर पर इसे व्यक्तित्व, अंतर्ज्ञान, भावनात्मक संवेदनशीलता और सार्थक योगदान देने की इच्छा के संयोजन के रूप में देखा जाता है। व्यक्ति अपनी जन्मतिथि नहीं बदल सकता, इसलिए इस व्याख्या का उद्देश्य नंबर के प्रतीकवाद को समझना और विवेक, भावनात्मक संतुलन तथा निरंतरता जैसे सकारात्मक गुणों को विकसित करना है।

भाग्यांक 11/2ः

जब जन्म की पूरी तारीख का योग घटाने से पहले 11 आता है, तो कुछ अंक ज्योतिषीय पद्धतियाँ 11 को मास्टर नंबर के रूप में बनाए रखती हैं और 2 के साथ उसकी व्याख्या करती हैं। सटीक गणना और व्याख्या इस बात पर निर्भर करती है कि किस पद्धति का पालन किया जा रहा है।

यह भी जन्म से संबंधित गणना है, न कि जानबूझकर चुना गया नामांक। 11 को नामांक के रूप में इस्तेमाल न करने की मेरी सलाह का अर्थ यह नहीं है कि 11 के प्रभाव में जन्म लेने वाले व्यक्ति को दुर्भाग्यशाली या सफलता पाने में असमर्थ माना जाए। मेरी व्याख्या में जन्मांक या भाग्यांक के रूप में यह अच्छा नंबर हो सकता है।

नामांक 11/2

जब किसी नाम का कुल योग 11 होता है, तो उसकी व्याख्या चुनी गई अंक ज्योतिषीय पद्धति में उस नामांक से जुड़े प्रतीकात्मक अर्थों पर आधारित होती है। चैल्डियन अंक ज्योतिष में कंपाउंड नंबर को पारंपरिक रूप से घटाकर 2 बनाने से पहले अलग से देखा जाता है।

मेरी सलाह है कि ऐसा नाम जानबूझकर कभी नहीं चुनना चाहिए जिसका कुल योग 11 हो। मेरी व्याख्या में ऐसा करने से जीवन के उस क्षेत्र में परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों का प्रतीकवाद आमंत्रित होता है, जहाँ सावधानीपूर्वक विश्लेषण के बाद कोई वैकल्पिक नामांक चुना जा सकता है।

केस स्टडीः अमिताभ बच्चन — जन्मांक 11/2 और भाग्यांक 19/1

अमिताभ बच्चन, नंबर 1 से जुड़ी सूर्य की विशेषताओं के साथ 11/2 के प्रतीकवाद को समझने के लिए एक दिलचस्प उदाहरण हैं। उनका जन्म 11 अक्टूबर 1942 को हुआ था। आगे चलकर वे भारतीय सिनेमा की सबसे अधिक पहचानी जाने वाली हस्तियों में शामिल हुए। उनका करियर अभिनय, टेलीविजन और सार्वजनिक जीवन के अन्य क्षेत्रों तक फैला रहा।

मूल अंक ज्योतिषीय गणना

जन्मतिथिः 11 अक्टूबर 1942।

जन्मांकः 11/2।

जन्म का दिन 11 है, जो घटकर 2 बनता है। मास्टर नंबर की व्याख्या में 11 को पूरी तरह हटाने के बजाय बनाए रखा जाता है।

भाग्यांकः 19/1।

गणनाः

1 + 1 + 1 + 0 + 1 + 9 + 4 + 2 = 19।

1 + 9 = 10, और 1 + 0 = 1।

इसलिए भाग्यांक 19/1 है।

प्रचलित नाम अमिताभ बच्चन का कुल योग इस केस स्टडी में इस्तेमाल किए गए चैल्डियन अक्षर-मूल्यों के अनुसार 43/7 है।

इन नंबरों को अलग-अलग समझना आवश्यक है। जन्म का दिन 11/2 है, पूरी जन्मतिथि का योग 19/1 बनता है और प्रचलित नाम का कुल योग 43/7 है। मास्टर नंबर 11 जन्म के दिन में मौजूद है, लेकिन प्रचलित नाम का कुल योग 11 नहीं है।

11/2 और 19/1 के बीच संबंधः

इस व्याख्या में इस्तेमाल किए गए ग्रह-संबंधी प्रतीकवाद के अनुसार, नंबर 1 सूर्य का और नंबर 2 चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करता है।

जन्मांक 11/2 चंद्रमा के प्रतीकात्मक गुण लाता हैः संवेदनशीलता, कल्पनाशक्ति, ग्रहणशीलता और दर्शकों से जुड़ने की क्षमता। इसमें मौजूद दो 1 सूर्य के व्यक्तित्व और स्वयं को व्यक्त करने के गुणों को भी शामिल करते हैं।

भाग्यांक 19/1 सूर्य के प्रतीकवाद को और मजबूत करता है। इसका संबंध पहचान, नेतृत्व, दृश्यता, महत्वाकांक्षा और पहचान प्राप्त करने से जोड़ा जाता है।

इस संयोजन को ऐसे समझा जा सकता है जैसे चंद्रमा सूर्य से प्रकाश प्राप्त कर रहा हो। 11/2 से जुड़े संवेदनशील और ग्रहणशील गुणों को 19/1 की स्वतंत्र और स्वयं की पहचान स्थापित करने वाली ऊर्जा का प्रतीकात्मक समर्थन मिलता है।

अभिनय जैसे करियर में यह एक अर्थपूर्ण प्रतीकात्मक संयोजन है। एक अभिनेता को किसी चरित्र को समझने के लिए पर्याप्त ग्रहणशील और उस चरित्र को दर्शकों के सामने प्रभावशाली बनाने के लिए पर्याप्त अभिव्यक्तिपूर्ण होना चाहिए। चंद्रमा का प्रतीकवाद भावनाओं को समझने का प्रतिनिधित्व कर सकता है, जबकि सूर्य का प्रतीकवाद पर्दे पर प्रभाव और सार्वजनिक पहचान का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

करियर, पहचान और लंबे समय तक प्रासंगिक बने रहनाः

अमिताभ बच्चन का करियर जीवन के अलग-अलग दौर में सार्वजनिक रूप से प्रासंगिक बने रहने की संभावना का उदाहरण प्रस्तुत करता है। जंजीर जैसी फिल्मों की सफलता के बाद वे एक बड़े फिल्म स्टार के रूप में स्थापित हुए। बाद में उन्होंने टेलीविजन और अन्य पेशेवर गतिविधियों के माध्यम से भी अपनी सार्वजनिक उपस्थिति का विस्तार किया।

अंक ज्योतिषीय दृष्टिकोण से उनके भाग्यांक 19/1 को पहचान और मजबूत व्यक्तिगत व्यक्तित्व के प्रतीक के रूप में पढ़ा जा सकता है। उनके जन्मांक 11/2 को संवेदनशीलता, अनुकूलनशीलता और बड़े दर्शक-वर्ग से जुड़ने की क्षमता के प्रतीक के रूप में समझा जा सकता है।

यह उनके करियर की प्रतीकात्मक व्याख्या है, इस बात का प्रमाण नहीं कि उनकी सफलता का कारण ये नंबर थे। उनकी उपलब्धियों में प्रतिभा, मेहनत, पेशेवर चुनाव, सहयोगियों, अवसरों और निरंतर प्रयास की भी भूमिका रही।

विपत्ति की परीक्षाः कूली फिल्म का हादसा;

1982 में फिल्म कूली की शूटिंग के दौरान बच्चन को लगभग जानलेवा चोट लगी थी। उस समय की रिपोर्टों और बाद के विवरणों में हादसे की गंभीरता तथा उनके लंबे स्वास्थ्य लाभ के संघर्ष का उल्लेख मिलता है।

मास्टर नंबर 11 की आध्यात्मिक व्याख्या में उनके बचने और फिर पेशेवर जीवन में लौटने को मानसिक दृढ़ता, सहयोग, संकल्प और आशा का प्रभावशाली उदाहरण माना जा सकता है।

कुछ अंक ज्योतिषीय व्याख्याएँ 11 को ऐसा नंबर बताती हैं जो व्यक्ति को बड़ी परीक्षाओं से गुजरने में सहायता करता है। इस केस स्टडी में 11/2 की उपस्थिति को संकट सहने और जीवन के उद्देश्य से फिर जुड़ने की क्षमता के प्रतीक के रूप में समझा जा सकता है।

मेरे दृष्टिकोण से, इस घटना पर 11 से जुड़े आध्यात्मिक प्रतीकवाद के संदर्भ में चर्चा की जा सकती हैः एक बड़ी परीक्षा और उसके बाद सहायता तथा स्वास्थ्य लाभ की संभावना। हालाँकि, यह हादसा इस बात को साबित नहीं करता कि अंक ज्योतिष ने उनकी जान बचाई। उनके स्वास्थ्य लाभ में चिकित्सा उपचार, पेशेवर देखभाल, परिवार का सहयोग और जीवन के लिए खतरनाक स्थिति से उबरने का उनका अपना संघर्ष शामिल था।

वित्तीय संकट और पेशेवर जीवन का पुनर्निर्माणः

1990 के दशक में बच्चन को अपनी कंपनी अमिताभ बच्चन कॉरपोरेशन लिमिटेड से संबंधित गंभीर वित्तीय और पेशेवर संकट का भी सामना करना पड़ा। 1999 की समकालीन रिपोर्टों में कंपनी की कठिनाइयों के पैमाने का उल्लेख मिलता है।

बाद में एक प्रमुख पेशेवर स्थान पर उनकी वापसी को 19/1 के प्रतीकवाद के माध्यम से पहचान के नवीनीकरण, दृढ़ संकल्प और सार्वजनिक प्रतिष्ठा दोबारा बनाने की क्षमता के रूप में समझा जा सकता है।

11/2 की उपस्थिति को प्रतीकात्मक रूप से लोगों के प्रति संवेदनशीलता, सार्वजनिक सद्भावना और किसी सार्वजनिक व्यक्ति तथा उसके दर्शकों के बीच भावनात्मक जुड़ाव के रूप में पढ़ा जा सकता है। बाद में टेलीविजन पर उनके काम ने दर्शकों के साथ उनके संबंध को और व्यापक बनाया।

मेरी व्याख्या में उनके जीवन की कठिनाइयों को परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों के आध्यात्मिक विचार के साथ देखा जा सकता है, जिसके बाद सहायता और सुधार की संभावना आती है। हालाँकि, इसे इस बात का प्रमाण नहीं मानना चाहिए कि 11 दिवालियापन से सुरक्षा की गारंटी देता है या वित्तीय नुकसान से उबरना सुनिश्चित करता है। इसके बजाय, यह उदाहरण मानसिक दृढ़ता, पेशेवर जीवन को नए सिरे से बनाने और करियर दोबारा स्थापित करने में प्रतिष्ठा की भूमिका पर विचार करने का अवसर देता है।

इस केस स्टडी से हमें क्या सीख मिलती हैः

सबसे उपयोगी सीख यह नहीं है कि जन्मांक 11 वाला हर व्यक्ति प्रसिद्ध होगा। बल्कि, यह उदाहरण दिखाता है कि किसी अंक ज्योतिषी को एक नंबर की अलग-थलग व्याख्या करने के बजाय 11/2 को भाग्यांक और नामांक के साथ मिलाकर देखना चाहिए।

अमिताभ बच्चन की कुंडली में जन्मांक 11/2 और भाग्यांक 19/1 भावनात्मक अभिव्यक्ति, सार्वजनिक पहचान, महत्वाकांक्षा, विपत्ति और नए सिरे से शुरुआत करने पर चर्चा के लिए एक प्रतीकात्मक ढाँचा प्रदान करते हैं।

यह केस स्टडी एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को भी मजबूत करती हैः नंबर 11 की व्याख्या संदर्भ के साथ की जानी चाहिए। इसे प्रसिद्धि, धन, स्वास्थ्य या सुरक्षा की अकेली गारंटी नहीं मानना चाहिए।

यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि इस गणना के अनुसार बच्चन के प्रचलित नाम का कुल योग 11 के बजाय 43/7 है। इसलिए उनका जीवन 11 तारीख को जन्म लेने वाले व्यक्ति का उदाहरण है, न कि 11 नामांक का उदाहरण। यह अंतर मेरी उस सलाह के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि 11 को जानबूझकर नामांक के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

नंबर 11/2 की खूबियाँ और चुनौतियाँः

व्यक्तित्वः सकारात्मक अभिव्यक्ति में अंतर्ज्ञान, कल्पनाशक्ति और मौलिकता शामिल हैं। संभावित चुनौती अत्यधिक सोचना और आत्म-संदेह है।

करियरः सकारात्मक अभिव्यक्ति में रचनात्मक अभिव्यक्ति, संचार और प्रेरणा शामिल हैं। संभावित चुनौती अस्थिरता या हिचकिचाहट है।

नेतृत्वः सकारात्मक अभिव्यक्ति में दृष्टि और दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता शामिल है। संभावित चुनौती आलोचना के प्रति संवेदनशीलता है।

रिश्तेः सकारात्मक अभिव्यक्ति में सहानुभूति, स्नेह और कूटनीतिक व्यवहार शामिल हैं। संभावित चुनौती भावनात्मक उतार-चढ़ाव या बिना कही गई अपेक्षाएँ हैं।

धनः सकारात्मक अभिव्यक्ति में प्रतिभा और विचारों के माध्यम से कमाई शामिल है। संभावित चुनौती भावनाओं के आधार पर निर्णय लेना या गलत व्यक्ति पर भरोसा करना है।

आध्यात्मिकताः सकारात्मक अभिव्यक्ति में आत्मचिंतन, आदर्शवाद और करुणा शामिल हैं। संभावित चुनौती भावनाओं को निश्चित सत्य समझ लेना है।

व्यक्तिगत विकासः सकारात्मक अभिव्यक्ति में आत्म-जागरूकता और मानसिक दृढ़ता शामिल हैं। संभावित चुनौती ऊँची अपेक्षाओं पर खरा उतरने का दबाव है।

सार्वजनिक जीवनः.सकारात्मक अभिव्यक्ति में विशिष्ट पहचान और दर्शकों से जुड़ने की क्षमता शामिल है। संभावित चुनौती सार्वजनिक दृश्यता से जुड़ा तनाव है।

यह सारांश पारंपरिक अंक ज्योतिषीय व्याख्याओं को प्रस्तुत करता है। इसका उपयोग आत्मचिंतन के ढाँचे के रूप में किया जाना चाहिए, न कि वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित व्यक्तित्व आकलन के रूप में।

नंबर 11 का सर्वोत्तम उपयोग कैसे करेंः

11 की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति केवल अंतर्ज्ञान या रचनात्मकता रखने में नहीं है। असली बात इन गुणों को व्यावहारिक और रचनात्मक कार्यों में बदलना है।

जो व्यक्ति इस नंबर से स्वयं को जुड़ा हुआ मानता है, वह कुछ सिद्धांतों पर ध्यान दे सकता है।

विवेक विकसित करेंः अंतर्ज्ञान को सुनें, लेकिन महत्वपूर्ण धारणाओं की जाँच करें। जब किसी निर्णय के परिणाम गंभीर हों, तो उसे सोचने के लिए समय दें।

भावनात्मक स्थिरता बनाएँः अपनी भावनाओं को स्वीकार करें, लेकिन हर बदलते मनोभाव को किसी बड़े निर्णय का आधार न बनने दें।

विशेष कौशल विकसित करेंः. रचनात्मकता और प्रेरणा तब पेशेवर रूप से मूल्यवान बनती हैं जब उन्हें अभ्यास, प्रशिक्षण और निरंतर काम का समर्थन मिलता है।

व्यक्तिगत सीमाएँ निर्धारित करेंः करुणा का अर्थ यह नहीं है कि आपको हर व्यक्ति की समस्याओं की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। विश्वास अनुभव और विश्वसनीय व्यवहार के आधार पर विकसित होना चाहिए।

महत्वाकांक्षा को उद्देश्य से जोड़ेंः नंबर 1 का सूर्य-संबंधी प्रतीकवाद तब सबसे रचनात्मक होता है जब उपलब्धि पाने की इच्छा को नंबर 2 के चंद्रमा-संबंधी गुणों के साथ जोड़ा जाएः सहानुभूति, सहयोग और दूसरों के प्रति जागरूकता।

ये सिद्धांत तब उपयोगी हैं जब 11 जन्मांक, भाग्यांक या जन्म से संबंधित किसी अन्य गणना में दिखाई दे। इनका ध्यान उन गुणों पर रहता है जिन्हें व्यक्ति वास्तव में विकसित कर सकता है।

हालाँकि, नाम चुनते समय मेरी सलाह अलग है। मैं 11 को जानबूझकर नामांक के रूप में चुनने की सलाह नहीं देती। मेरी व्याख्या में यह परीक्षाओं और कठिन परिस्थितियों के प्रतीकवाद से जुड़ा है, जिसके बाद बड़ी मुश्किलों में ईश्वरीय सहायता मिलने की संभावना मानी जाती है। मेरा मानना है कि व्यक्ति की पूरी अंक ज्योतिषीय कुंडली के अनुरूप कोई वैकल्पिक नामांक देखना अधिक समझदारी है।

अंतिम विश्लेषणः क्या नंबर 11 अच्छा है?

मेरा निष्कर्ष है कि कंपाउंड नंबर 11 गंभीरता से समझे जाने योग्य है, क्योंकि इसके दो 1 और घटकर बनने वाले 2 से शक्तिशाली प्रतीकात्मक अर्थ जुड़े हुए हैं।

आधुनिक अंक ज्योतिष में यह अंतर्ज्ञान, प्रेरणा, रचनात्मकता और आध्यात्मिक जागरूकता से जुड़ा मास्टर नंबर है। सूर्य और चंद्रमा का संयोजन व्यक्तित्व और संवेदनशीलता, सार्वजनिक उपलब्धि और निजी भावनाओं, महत्वाकांक्षा और सहयोग के बीच तनाव को समझने का एक तरीका प्रस्तुत करता है।

साथ ही, कंपाउंड 11 के बारे में चेरो की व्याख्या अधिक सावधानीपूर्ण है। बंद मुट्ठी और मुँह बंद किए हुए शेर के प्रतीक हमें याद दिलाते हैं कि इस नंबर को हर परिस्थिति में अनुकूल नहीं मानना चाहिए।

इसी कारण, यद्यपि मैं 11 से जुड़ी संभावनाओं को स्वीकार करती हूँ, फिर भी मैं इसे नामांक के रूप में इस्तेमाल करने की कभी सलाह नहीं दूँगी। मेरी व्याख्या में यह जीवन में परीक्षाएँ और कठिन परिस्थितियाँ ला सकता है, जिनमें व्यक्ति को धैर्य, साहस और विवेक की आवश्यकता होती है। मेरा विश्वास है कि भगवान अंततः व्यक्ति को बड़ी परेशानी से उबरने में मदद करते हैं, लेकिन राहत मिलने से पहले रास्ते में गंभीर चुनौतियाँ आ सकती हैं।

यह विचार कि भगवान पहले परीक्षा लेते हैं और फिर बचाते हैं, इस नंबर के बारे में मेरी आध्यात्मिक समझ का केंद्रीय हिस्सा है। हालाँकि, मैं यह नहीं मानती कि ईश्वरीय सहायता की संभावना किसी नाम के लिए जानबूझकर 11 चुनने का कारण होनी चाहिए। नाम चुनते समय मैं ऐसे दूसरे उपयुक्त नंबरों पर विचार करना पसंद करती हूँ जो व्यक्ति के लक्ष्यों और पूरी अंक ज्योतिषीय कुंडली के साथ बेहतर तालमेल बना सकें।

अमिताभ बच्चन की जन्मतिथि, 19/1 भाग्यांक के साथ 11/2 की उपस्थिति का एक उपयोगी केस स्टडी प्रस्तुत करती है। उनका करियर, जीवन के लिए खतरनाक दुर्घटना से बचना और पेशेवर जीवन को फिर से स्थापित करना अंक ज्योतिषीय चर्चा के लिए महत्वपूर्ण विषय हैं। लेकिन ये बातें इस बात को साबित नहीं करतीं कि 11 प्रसिद्धि की गारंटी देता है या हर व्यक्ति को बड़ी कठिनाइयों से बचाता है।

अंततः नंबर 11 का महत्व उसके द्वैत को समझने में है। यह मजबूत व्यक्तित्व के साथ गहरी संवेदनशीलता, जिम्मेदारी के साथ प्रेरणा और विवेक की आवश्यकता के साथ दूरदृष्टि की संभावना का प्रतीक है।

नंबर 11 को अपनी क्षमता को सचेत रूप से विकसित करने का आह्वान माना जा सकता हैः संवेदनशीलता खोए बिना चमकना, लापरवाह हुए बिना भरोसा करना और भावनात्मक संतुलन तथा व्यावहारिक समझ की उपेक्षा किए बिना सफलता की ओर बढ़ना।

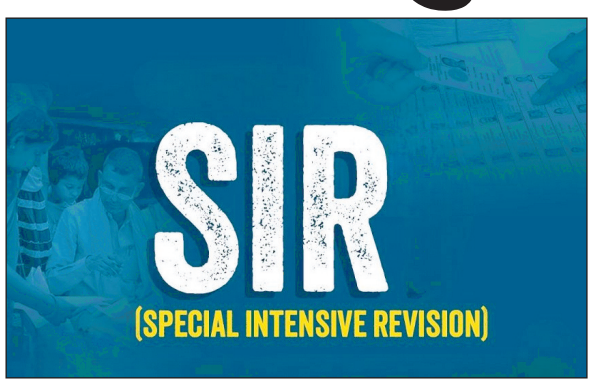
मेरी अंतिम सलाह स्पष्ट हैः नंबर 11 एक मास्टर नंबर है, लेकिन इसे कभी भी नामांक के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि मेरी अंक ज्योतिषीय व्याख्या में यह परीक्षाएँ और कठिन परिस्थितियाँ लेकर आता है। यद्यपि मेरा विश्वास है कि ईश्वरीय सहायता अंततः किसी व्यक्ति को बड़ी परेशानी से बचा सकती है, फिर भी मैं जानबूझकर चुने गए नाम के माध्यम से इस प्रवृत्ति को आमंत्रित करना पसंद नहीं करती।

एसआईआर-2026 : 28 अक्टूबर तक पूरी हो नोटिस की सुनवाई : डीसी

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को दिए निर्देश

झज्जर, 25 अक्टूबर





भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों अनुरूप चल रही विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के तहत मतदाता सूची को त्रुटिरहित, पारदर्शी और विश्वसनीय बनाने के लिए जिला प्रशासन ने सक्रियता से कार्य कर रहा है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि एसआईआर के तहत जारी सभी नोटिस पर सुनवाई का कार्य बुधवार 28 अक्टूबर तक पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिकता है कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाने से वंचित न रहे।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि मतदाता सूची का शुद्धिकरण लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए सभी संबंधित अधिकारी पूरी गंभीरता, पारदर्शिता और जिम्मेदारी के साथ कार्य करें। पुनरीक्षण से संबंधित प्रत्येक गतिविधि निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरी की जाए, ताकि मतदाताओं को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

नोटिस की सुनवाई में बरती जाए पारदर्शिता

डीसी ने बताया कि एसआईआर प्रक्रिया के तहत जारी नोटिस पर सुनवाई का कार्य जारी है। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि शेष नोटिस की सुनवाई 28 अक्टूबर तक अनिवार्य रूप से पूरी की जाए। संबंधित मतदाताओं तक नोटिस पहुंचाने, उन्हें सुनवाई का अवसर देने और प्रत्येक मामले का नियमानुसार निपटान करने में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि सभी मामलों का निस्तारण निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के अनुसार किया जाए।

फॉर्म-6, 7 और 8 के आवेदनों का भी हो समय पर निपटारा

डीसी ने अधिकारियों को एसआईआर के दौरान प्राप्त फॉर्म-6, फॉर्म-7 और फॉर्म-8 के आवेदनों का भी नियमानुसार शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में नाम शामिल करवाने के लिए फॉर्म-6, नाम हटाने से संबंधित दावों के लिए फॉर्म-7 तथा मतदाता सूची में दर्ज विवरण में संशोधन सहित अन्य निर्धारित सेवाओं के लिए फॉर्म-8 का उपयोग किया जाता है। इन आवेदनों पर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार कार्रवाई करते हुए समयबद्ध निपटान सुनिश्चित किया जाए।

राजनीतिक दलों के साथ साझा की जा रही दावे-आपत्तियों की सूची

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि मतदाता सूची पुनरीक्षण की प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए राजनीतिक दलों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। इसी उद्देश्य से जिला के चारों निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों और जिला निर्वाचन अधिकारी के स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित की जा रही हैं। दावों और आपत्तियों से संबंधित सूचियां प्रत्येक सप्ताह राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ साझा की जा रही हैं, ताकि प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे और सभी संबंधित पक्षों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध हो सके। उन्होंने बताया कि दावों और आपत्तियों की सुपर-चेकिंग का कार्य भी पूरा किया जा चुका है।

जिलाभर में 807 मतदान केंद्रों पर तैनात हैं बीएलओ

जिला में एसआईआर अभियान की जानकारी देते हुए डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि 31 जुलाई 2026 तक जारी प्रारूप मतदाता सूची में कुल 6 लाख 68 हजार 832 मतदाता दर्ज हैं। जिले के सभी 807 मतदान केंद्रों पर बूथ लेवल अधिकारियों (बीएलओ) की तैनाती की गई है। इनके कार्यों की निगरानी के लिए सुपरवाइजर भी नियुक्त किए गए हैं। प्रशासन की ओर से पुनरीक्षण कार्य की लगातार निगरानी की जा रही है, ताकि अभियान के दौरान सामने आने वाली समस्याओं का समय रहते समाधान किया जा सके।

6 नवंबर को प्रकाशित होगी अंतिम मतदाता सूची

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग और मुख्य निर्वाचन अधिकारी, हरियाणा के निर्देशानुसार अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 6 नवंबर 2026 को किया जाएगा। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्धारित समय सीमा को ध्यान में रखते हुए शेष कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करें। साथ ही, मतदाता सूची से संबंधित प्रत्येक कार्रवाई में नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने कहा कि एसआईआर-2026 का उद्देश्य मतदाता सूची को अपडेट और विश्वसनीय बनाना है। इसके लिए सभी अधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और यह सुनिश्चित करें कि कोई भी पात्र मतदाता अपने मताधिकार से वंचित न रहे।

गांव निमाणा में प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम 27 को

नागरिकों से सीधा संवाद करेंगी डीसी वर्षा खांगवाल

बादली, 25 अक्टूबर।

जिला के गांव निमाणा में मंगलवार, 27 अक्टूबर को रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत डीसी वर्षा खांगवाल ग्रामीणों के साथ सीधा संवाद करेंगी। यह जानकारी एसडीएम बादली विशाल कुमार ने दी।

एसडीएम ने बताया कि गांव के मंदिर के साथ लगते हाल में रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन होगा। डीसी वर्षा खांगवाल ग्रामीणों की समस्याएं सुनते हुए उनका समाधान करेंगी और आमजन से जुड़े विभागीय अधिकारियों द्वारा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी।

एसडीएम ने बताया कि सरकार की यह अनूठी पहल है जिसके तहत प्रशासन गांव में जाकर ग्रामीणों की समस्या सुनेगा और सरकारी योजनाओं की जानकारी देगा। ऐसे कार्यक्रम जनता और प्रशासन की दूरी को कम करते हैं। यह पहल समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ्य विभाग द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया जाएगा। आमजन के कार्यों से सीधा जुड़ाव रखने वाले और ग्रामीण विकास से जुड़े विभाग अपने अपने विभाग की कल्याणकारी नीतियों के बारे में ग्रामीणों को जानकारी देंगे। इस संबंध में सभी विभागों को निर्देश दिए गए हैं। रात्रि ठहराव में सभी विभागों के अधिकारी मौजूद रहेंगे।

वीर बंदा बैरागी की गौरव गाथा नई पीढ़ी तक पहुंचाना समाज का दायित्व : उषा प्रियदर्शी







महिलाओं और माताओं को सामाजिक आयोजनों में अग्रिम स्थान देने का किया आह्वान

नशे और सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से बच्चों को बचाने पर दिया जोर

बैरागी समाज की एकजुटता और संगठन की सराहना, युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कारों से जोड़ने का आह्वान

झज्जर में वीर बंदा बैरागी जयंती समारोह आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 25 अक्टूबर। हरियाणा राज्य महिला आयोग की चेयरपर्सन उषा प्रियदर्शी ने कहा कि वीर बंदा बैरागी का जीवन और उनका संघर्ष पूरे समाज के लिए गौरव और प्रेरणा का स्रोत है। उनके योगदान और गौरव गाथा को नई पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है। समाज की जिम्मेदारी केवल सरकारी व्यवस्थाओं पर निर्भर रहना नहीं, बल्कि अपने बच्चों को देश के इतिहास, महापुरुषों के बलिदान और भारतीय संस्कारों से परिचित करवाना भी है। वे रविवार को झज्जर में आयोजित वीर बंदा बैरागी जयंती समारोह को संबोधित कर रही थी। उन्होंने बैरागी समाज की एकजुटता और संगठनात्मक प्रयासों की सराहना करते हुए समाज के प्रतिनिधियों से सामाजिक सरोकारों को मजबूत बनाने तथा आने वाली पीढ़ी को अपनी विरासत से जोड़ने का आह्वान किया।

महिलाओं और माताओं को सामाजिक आयोजनों में दें अग्रिम स्थान

चेयरपर्सन उषा प्रियदर्शी ने समाज के प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि भविष्य में आयोजित होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों और समारोह में महिलाओं, बहनों और माताओं को अग्रिम स्थान दिया जाए। उन्होंने कहा कि महिलाओं का सम्मान और उनकी भागीदारी किसी भी समाज की प्रगतिशील सोच का परिचायक है। सामाजिक आयोजनों में महिलाओं को उचित स्थान देकर उनके सम्मान और योगदान को पहचान मिलती है।

उन्होंने बैरागी समाज के प्रदेशाध्यक्ष शिव पवार की सराहना करते हुए कहा कि विभिन्न जिलों में संगठन को मजबूत करना और जिला स्तर पर प्रतिनिधियों को एक सूत्र में पिरोना महत्वपूर्ण कार्य है। इसी आपसी सहयोग और एकता से समाज को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है।

वीर बंदा बैरागी की गौरव गाथा बच्चों तक पहुंचाना जरूरी

चेयरपर्सन ने कहा कि महापुरुषों के योगदान को याद करने के साथ उनकी वीरता, संघर्ष और बलिदान की कहानियां बच्चों को पढ़ाई और सुनाई जानी चाहिए। नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास की जानकारी होगी, तभी उनमें अपनी संस्कृति, परंपराओं और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि अभिभावक बच्चों को आधुनिक शिक्षा और अंग्रेजी भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, लेकिन इसके साथ भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और संस्कारों की शिक्षा देना भी उतना ही आवश्यक है। केवल शैक्षणिक डिग्री हासिल करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि बच्चों का अच्छा इंसान बनना और परिवार व समाज के प्रति अपने दायित्वों को समझना भी जरूरी है।

नशे और सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से बच्चों को बचाने में अभिभावक निभाएं जिम्मेदारी

उषा प्रियदर्शी ने कहा कि युवा पीढ़ी को नशे और सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से बचाना परिवार और समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। अभिभावकों को बच्चों की दिनचर्या, संगति और ऑनलाइन गतिविधियों पर ध्यान देने के साथ उन्हें भारतीय संस्कारों, नैतिक मूल्यों और सकारात्मक जीवन शैली के प्रति प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य हैं और उन्हें सही दिशा देना विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए जरूरी है। समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए प्रत्येक परिवार और नागरिक को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

भारतीय संस्कारों से मजबूत होगी विकसित भारत की नींव

उषा प्रियदर्शी ने कहा कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में युवा पीढ़ी की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इसके लिए युवाओं को शिक्षित बनाने के साथ उनमें अच्छे संस्कार, अनुशासन, सामाजिक जिम्मेदारी और देश के प्रति समर्पण की भावना विकसित करनी होगी। उन्होंने कहा कि माता-पिता और समाज को बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण पर निरंतर ध्यान देना चाहिए। जब युवा आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय संस्कारों और नैतिक मूल्यों को भी अपनाएंगे, तभी वे अपने परिवार का नाम रोशन करने के साथ राष्ट्र की प्रगति में सार्थक योगदान दे सकेंगे।

समाज की एकजुटता और महापुरुषों की विरासत को आगे बढ़ाना हमारा दायित्व : कैप्टन योगेश बैरागी

समाज कल्याण बोर्ड के चेयरमैन कैप्टन योगेश बैरागी ने कहा कि वीर बंदा बैरागी का जीवन और उनका संघर्ष पूरे समाज के लिए गौरव का विषय है। उनके आदर्शों और बलिदान से प्रेरणा लेकर समाज को एकजुटता, सामाजिक समरसता और राष्ट्र सेवा की भावना के साथ आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज की मजबूती के लिए संगठन को मजबूत करने के साथ युवा पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति और महापुरुषों के योगदान से परिचित करवाना जरूरी है। बच्चों को अच्छे संस्कार देना और उन्हें समाज व राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का बोध करवाना सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

इस अवसर पर बैरागी समाज के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र पलवल, प्रदेश उप प्रधान करण सिंह, कुलदीप सिंह, विभिन्न जिलों के अध्यक्ष, जिला कार्यकारिणी के सदस्य, सेवानिवृत्त डीएसपी बसंत स्वामी, भूप सिंह स्वामी सहित समाज के अनेक प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

महिलाओं की शिकायतों पर गंभीरता से कार्रवाई कर दिलाएं न्याय : उषा प्रियदर्शी





हरियाणा राज्य महिला आयोग की चेयरपर्सन ने झज्जर में 'आयोग आपके द्वार' कार्यक्रम के तहत सुनीं महिलाओं की समस्याएं

सिंचाई विभाग के विश्राम गृह में हुई जनसुनवाई, संबंधित अधिकारियों को दिए शिकायतों के प्रभावी समाधान के निर्देश

झज्जर, 25 अक्टूबर

हरियाणा राज्य महिला आयोग की चेयरपर्सन उषा प्रियदर्शी ने रविवार को झज्जर स्थित सिंचाई विभाग के विश्राम गृह में 'आयोग आपके द्वार' कार्यक्रम के तहत महिलाओं से संबंधित शिकायतों की जनसुनवाई की। उन्होंने शिकायतकर्ताओं की समस्याएं गंभीरता से सुनीं और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि महिलाओं से जुड़े मामलों में संवेदनशीलता के साथ कार्रवाई करते हुए शिकायतों का नियमानुसार एवं समयबद्ध समाधान सुनिश्चित किया जाए।

महिलाओं को न्याय दिलाना आयोग की प्राथमिकता

जनसुनवाई के दौरान आयोग की चेयरपर्सन ने महिलाओं से संबंधित शिकायतों पर संबंधित पक्षों की बात सुनते हुए मामलों की स्थिति और की गई कार्रवाई की जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक शिकायत की निष्पक्षता से जांच की जाए और तथ्यों के आधार पर नियमानुसार आवश्यक कदम उठाए जाएं। महिलाओं को न्याय दिलाने में किसी भी स्तर पर लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि 'आयोग आपके द्वार' कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं की समस्याओं को उनके जिला में ही सुनकर उनके समाधान की दिशा में प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करना है। आयोग महिलाओं की शिकायतों पर संबंधित विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर कार्रवाई करता है, ताकि पीड़ित महिलाओं को अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े।

महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों से समझौता नहीं

उषा प्रियदर्शी ने कहा कि महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, घरेलू उत्पीड़न, वैवाहिक विवाद और अन्य प्रकार की शिकायतों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। संबंधित अधिकारी प्रत्येक मामले में तथ्यों की जांच कर नियमानुसार कार्रवाई करें तथा पीड़ित महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए तत्परता से काम करें। उन्होंने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों की रक्षा करना समाज और प्रशासन की सामूहिक जिम्मेदारी है। महिलाओं को सुरक्षित एवं सम्मानजनक वातावरण उपलब्ध कराने के लिए जरूरी है कि उनकी शिकायतों पर संवेदनशीलता के साथ सुनवाई हो और दोषी पाए जाने वालों के विरुद्ध कानून के अनुसार कार्रवाई की जाए।

समस्याओं के समाधान के लिए आयोग प्रतिबद्ध

चेयरपर्सन ने कहा कि महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहना चाहिए और किसी भी प्रकार के उत्पीड़न या अन्याय की स्थिति में अपनी आवाज उठानी चाहिए। उन्होंने कहा कि हरियाणा राज्य महिला आयोग महिलाओं की शिकायतों की सुनवाई और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। आयोग का प्रयास है कि प्रत्येक पीड़ित महिला को उचित सुनवाई मिले और उसकी समस्या का समाधान नियमानुसार किया जा सके।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर भाजपा जिला महिला मोर्चा की उपाध्यक्ष सोमवती जाखड़, रेखा यादव, महिला एवं बाल विकास विभाग से जिला कार्यक्रम अधिकारी नेहा दहिया, सीडीपीओ राजबाला मलिक सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

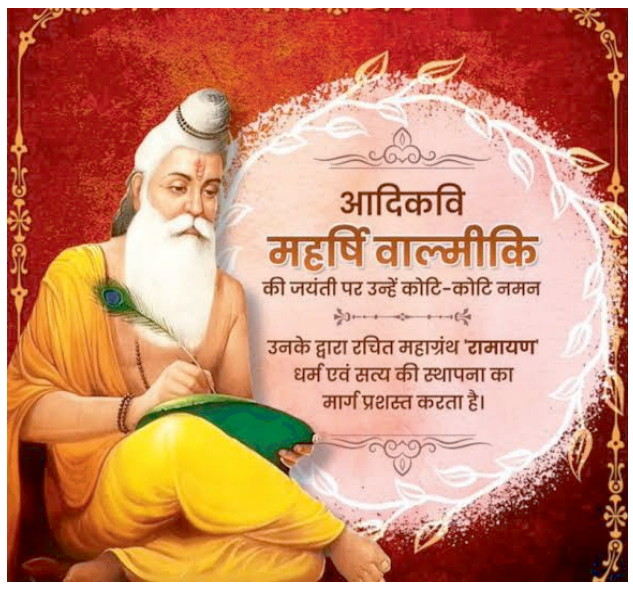
महर्षि वाल्मीकि जयंती पर सम्मानित होंगे सफाई कर्मचारी और सरकारी योजनाओं के लाभार्थी : डीएमसी

लघु सचिवालय सभागार में सोमवार सुबह 11 बजे आयोजित होगा जिला स्तरीय कार्यक्रम

झज्जर, 25 अक्टूबर।

महर्षि वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में सोमवार, 26 अक्टूबर को झज्जर लघु सचिवालय सभागार में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। सोमवार की सुबह 11 बजे शुरू होने वाले इस कार्यक्रम में सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों और सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। यह जानकारी एडीसी एवं डीएमसी जगनिवास ने दी।

डीएमसी ने बताया कि कार्यक्रम के माध्यम से महर्षि वाल्मीकि के विचारों और उनके आदर्शों को याद करते हुए सामाजिक समरसता, समानता और जनसेवा के संदेश को आगे बढ़ाया जाएगा। डीएमसी जगनिवास ने बताया कि महर्षि वाल्मीकि जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों के साथ सफाई कर्मचारियों को भी सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारी स्वच्छता व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके योगदान को सम्मान देना समाज के प्रति उनकी सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर है।



उन्होंने बताया कि महर्षि वाल्मीकि ने अपने विचारों और रचनाओं के माध्यम से समाज को नैतिकता, सदाचार और मानवता का संदेश दिया। उनकी शिक्षाएं आज भी समाज को सही दिशा दिखाने में प्रासंगिक हैं। ऐसे आयोजनों का उद्देश्य महापुरुषों के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने के साथ सामाजिक एकता और आपसी सद्भाव को मजबूत करना भी है।

डीएमसी ने बताया कि कार्यक्रम में सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित होने वाले लोगों को सम्मानित कर योजनाओं के सकारात्मक प्रभाव को भी रेखांकित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि जयंती समाज में सेवा, समानता और समर्पण की भावना को मजबूत करने का अवसर है।

नशा माफियाओं की उल्टी गिनती शुरू? - ऑपरेशन ट्राइडेंट से अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स सिंडिकेट पर चौतरफा वार

नशा मुक्त भारत @2029 मिशन एक्शन मोड में – 38 ठिकानों पर छापेमारी, 1,424 बैंक खाते फ्रीज, डेथ ट्रायंगल कॉरिडोर में खलबली

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया, महाराष्ट्र

तथ्य एक नजर में - सत्यापित सरकारी जानकारी

- ऑपरेशनः ऑपरेशन ट्राइडेंट, 23 अक्टूबर 2026 को NCB के नेतृत्व में

- स्थानः असम, मिजोरम और मणिपुर में 38 स्थानों पर एक साथ समन्वित कार्रवाई

- परिणामः 18 गिरफ्तार, 1,424 बैंक खाते फ्रीज, ₹17.82 करोड़ संपत्ति अटैच, ₹12 लाख नकद बरामद, 500 डेटोनेटर जब्त, लगभग ₹100 करोड़ हवाला लेनदेन का सुराग

- घोषणाः 25 अक्टूबर 2026 को गृहमंत्री अमित शाह ने X पोस्ट पर जानकारी दी, कहा - ₹India will hammer until the last nail is driven into the coffin of drug cartels₹

- लक्ष्यः 31 दिसंबर 2029 तक देश से नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार को समाप्त करने की दिशा में निर्णायक सफलता

- नेटवर्कः भारत-म्यांमार-बांग्लादेश सीमा पार सक्रिय, डेथ ट्रायंगल कॉरिडोर के जरिए तस्करी का आरोप

विस्तृत विश्लेषण

1. सिर्फ बरामदगी नहीं, आर्थिक तंत्र पर प्रहारः यह कार्रवाई केवल खेप पकड़ने तक सीमित नहीं थी। ₹100 करोड़ हवाला और 1,424 खाते फ्रीज करना दिखाता है कि रणनीति अब वित्तीय नेटवर्क तोड़ने की है। हवाला का मिलना दोषसिद्धि नहीं, लेकिन जांच की दिशा तय करता है।

2. केंद्र-राज्य तालमेल क्यों जरूरीः नशे का नेटवर्क एक जिले तक सीमित नहीं। खेप एक राज्य में, पैसा दूसरे में। इसलिए असम, मिजोरम, मणिपुर पुलिस + NCB + अन्य एजेंसियों की संयुक्त कार्रवाई मॉडल है।

3. व्यापक रणनीति 2026-2029: सरकार का दृष्टिपत्र - खुफिया अभियान आधारित प्रवर्तन, सिंथेटिक ड्रग्स और प्रीकर्सर केमिकल पर नियंत्रण, मांग में कमी और संस्थागत क्षमता। नशामुक्त भारत अभियान की पहुंच अक्टूबर 2026 तक 35 करोड़ लोगों तक, जिनमें 13.94 करोड़ युवा।

4. रोकथाम और पुनर्वासः केवल गिरफ्तारी से समाधान नहीं। नशे से प्रभावित को अपराधी नहीं, रोगी मानकर परामर्श, उपचार और पुनर्वास जरूरी। परिवार, स्कूल, सामाजिक संगठन और स्वास्थ्य सेवाओं की संयुक्त भूमिका से ही विकसित भारत @2047 की नींव मजबूत होगी।

निष्कर्षः ऑपरेशन ट्राइडेंट ने दिखाया कि कई एजेंसियां एक साथ काम कर सकती हैं। लेकिन एक अभियान से पूरा कारोबार खत्म नहीं होता। लगातार निगरानी, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, पारदर्शी जांच, प्रभावी अभियोजन और जनभागीदारी से ही 2029 का लक्ष्य मार्गदर्शक बन सकता है।





कल्याण गुरुकुल में प्रशिक्षण के उपरांत 71 बच्चों को दुबई में मिली नौकरी

खूँटी। आज दिनांक 25 अक्टूबर 2026 को कल्याण गुरुकुल, खूँटी में बैच नंबर- 110, 111, 112 (खूँटी) और 48 (तांतनगर), 106 (गुमला) के छात्रों का विदाई समारोह आयोजित किया गया।जिप अध्यक्ष ने कहा डिग्री के साथ-साथ हुनर का भी होना अतिआवश्यक है व्यक्ति का अनमोल पूंजी है,इस समारोह में खूँटी जिला परिषद माननीय श्री मसीह गुड़िया जी ने शोभा कंस्ट्रक्शन, दुबई में रोजगार हेतु चयनित 71 प्रशिक्षुओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। उन्होंने सभी चयनित प्रशिक्षुओं को शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रॉबिन सुरीन जी (प्रमुख, तोरपा प्रखंड), श्री संतोष कुमार (उप प्रमुख, तोरपा) तथा श्री संदीप कुमार प्रामाणिक जी भी समारोह में उपस्थित रहे।गुरुकुल के प्राचार्य श्री भूपेंद्र शर्मा जी एवं सभी शिक्षकगण ने प्रशिक्षुओं के सुख-समृद्धि, यश और वैभव के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। इस आयोजन को सफल बनाने में सभी गुरुकुल कर्मचारियों ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया और सभी चयनित बच्चों को बधाई दी।

अग्रोहा धाम का वार्षिक मेला ऐतिहासिक एवं भव्य रहा, देशभर से उमड़े श्रद्धालु : बजरंग गर्ग



सुबह पांच बजे शक्ति सरोवर स्नान व मंदिर की आरती से हुआ मेले का शुभारंभ, ध्वजारोहण और दीप प्रज्वलन के साथ धार्मिक कार्यक्रमों की शुरुआत

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)। अग्रोहा धाम में आयोजित विशाल वार्षिक मेला अग्रोहा धाम के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग के नेतृत्व में ऐतिहासिक एवं भव्य रहा। मेले में सुबह से ही श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा और प्रातः 6 बजे से ही श्रद्धालुओं के आने-जाने का सिलसिला लगातार जारी रहा। देश और प्रदेश के कोने-कोने से हजारों की संख्या में श्रद्धालु अग्रोहा धाम पहुंचे तथा मंदिरों में पूजा-अर्चना कर सुख-समृद्धि की कामना की।

अग्रोहा धाम के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने बताया कि वार्षिक मेले का शुभारंभ सुबह 5 बजे शक्ति सरोवर में स्नान और मंदिर की आरती के साथ हुआ। इसके बाद धार्मिक गतिविधियों और श्रद्धालुओं की भागीदारी से पूरा अग्रोहा धाम भक्तिमय वातावरण में सराबोर हो गया। सुबह 8 बजे मंदिर परिसर से गाजे-बाजे के साथ भव्य महिला कलश यात्रा निकाली गई, जिसमें महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शक्ति सरोवर में हजारों महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं ने स्नान किया। मंदिरों में दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की लंबी-लंबी कतारें लगी रहीं। श्रद्धालुओं को व्यवस्थित तरीके से दर्शन करवाने के लिए महिलाओं की विशेष टीमें भी तैनात रहीं।

बजरंग गर्ग ने कहा कि अग्रोहा धाम का वार्षिक मेला धार्मिक आस्था, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। मेले में देशभर से श्रद्धालुओं का पहुंचना अग्रोहा धाम के प्रति लोगों की गहरी आस्था को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि अग्रोहा धाम को धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से और अधिक विकसित करना तथा महाराजा अग्रसेन जी के आदर्शों और संदेश को जन-जन तक पहुंचाना उनका प्रमुख उद्देश्य है। उन्होंने मेले में पहुंचे श्रद्धालुओं, अतिथियों, सहयोगियों और आयोजन में जुटी सभी टीमों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी के सामूहिक सहयोग से मेला हर दृष्टिकोण से सफल रहा।

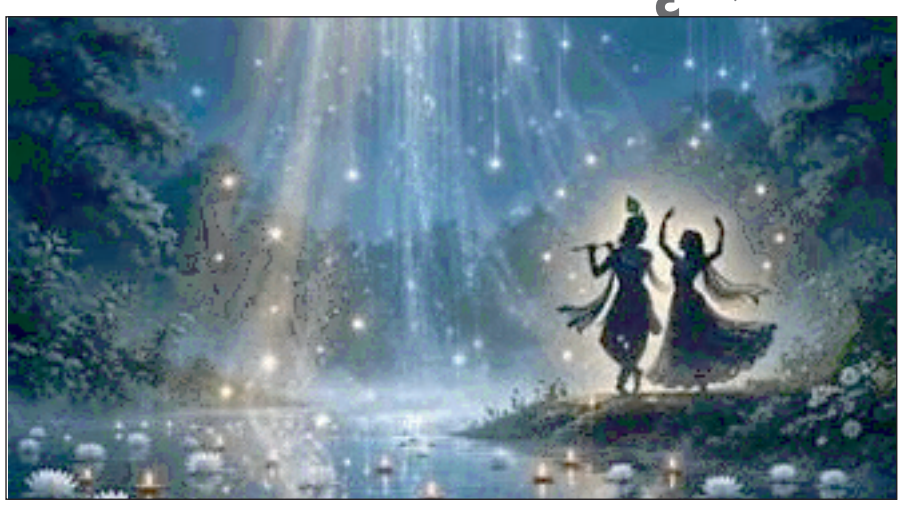
मेले में ध्वजारोहण एक्सल ग्रुप के अध्यक्ष डॉ. सुभाष चंद्र तथा अग्रोहा धाम के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने किया। कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल कविंद्र गुप्ता, हरियाणा के मंत्री विपुल गोयल, पंजाब के मंत्री बीरेन्द्र गोयल, जगतगुरु ब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी, मशहूर कलाकार मासूम शर्मा और भजन सम्राट अंजनी द्विवेदी सहित अनेक प्रमुख हस्तियों ने भाग लिया। अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की तथा अग्रोहा धाम की धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता को रेखांकित किया।

सुबह 9 बजे से ही श्रद्धालुओं के लिए चार विशाल पंडालों में भंडारे की व्यवस्था शुरू कर दी गई थी। श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। मेले में लगा ट्रेड फेयर भी लोगों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहा, जहां बड़ी संख्या में लोगों ने खरीदारी की और विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों का मनोरंजन किया। वहीं, मशहूर कलाकार मासूम शर्मा और भजन सम्राट अंजनी द्विवेदी ने भजनों की शानदार प्रस्तुतियां देकर माहौल को भक्तिमय बना दिया। भजनों की धुन पर श्रद्धालु देर तक झूमते और नाचते रहे। पूरे मेले में धार्मिक उत्साह, श्रद्धा और उल्लास का वातावरण देखने को मिला।

इस अवसर पर मंच पर हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल कविंद्र गुप्ता, जगतगुरु ब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी, डॉ. सुभाष चंद्र, बजरंग गर्ग, बीरेन्द्र गोयल और विपुल गोयल सहित प्रमुख अतिथि उपस्थित रहे। विशाल जनभागीदारी, धार्मिक आयोजनों, भंडारे, ट्रेड फेयर और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के चलते अग्रोहा धाम का वार्षिक मेला श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना रहा।

शरद पूर्णिमा विशेष : व्यक्ति को अच्छे कर्म और विचार करते हैं अमृत प्रदान!





भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी' स्वतंत्र लेखक व विश्लेषक.

आज शरद पूर्णिमा का पर्व मनाया जाएगा मंदिरों सहित घर घर में खीर भगवान को निवेदित कर प्रसाद वितरण होगा!

शरद पूर्णिमा पर देवताओं द्वारा अमृत महोत्सव मनाया जाता है, यह त्यौहार मनुष्यता के विषय में खास संदेश लेकर आज पुनः प्रति वर्ष की तरह मृत्यु लोक के अमृत वेला के रहस्य लेकर हम सभी को संदेश लेकर आया है!

यह बात रेड क्रॉस सेवा समिति के सभा पति डॉ जय मंडल जी ने प्रसंगवश संदेश में कही हैं!

डॉ जय मंडल जी ने बताया शरण पूर्णिमा व्यक्तित्व की पूर्णता का प्रतीक होकर अच्छे कर्म, विचार, संस्कार, अनुशासन सहित जीवन मूल्य के आदर्श गुणों का महत्व शरद पूर्णिमा के अर्थ में निहित है! संत महात्माओं और महापुरुषों के जीवन के उदाहरण देते हुए मृत्यु लोक में छिपे अमृत रहस्य पर डॉ जय मंडल जी ने धर्म शास्त्रों के अनेक प्रसंग जीवन की सार्थकता और अमरत्व के संबंध में बताए

मनुष्य का जन्म बड़े भाग्य से मिला है!

जिसका उद्देश्य सेवा और परोपकार के रास्ते चलते हुए राष्ट्र और समाज निर्माण में केंद्रित रहना है, दुनिया का आज वो प्रत्येक महा पुरुष अमरता को प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने मूल्य आधारित जीवन जीते हुए राष्ट्र को आदर्श छोड़ कर गए हैं!

मृत्यु शरीर की होती है, विचारों और कर्म की नहीं

उनके नाम और कीर्ति अमर हो गए जो हमारे पूर्वज महा पुरुष थे!

शरद पूर्णिमा का देव अमृत महोत्सव इन्हीं सब सदाचरण और परिवर्तन के संदेश ग्रहण करना देव शक्तियों ने मनुष्य के कल्याण में विधि मान्यता के साथ संसार को जीवन सार्थक बनाने की मंगल भावना से सौंपा है इसीलिए उन्हें देवत्व की प्राप्ति हुई है!!

भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी'.

रांची की रेखा पांडेय महानदी कोलफील्ड्स की कार्मिक निदेशक बनी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, रांची की निवासी रेखा पांडेय को महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (एमसीएल) का निदेशक (कार्मिक) नियुक्त किया गया है. भारत सरकार के कोयला मंत्रालय ने इस संबंध में 22 अक्तूबर को आधिकारिक आदेश जारी कर दिया है. रेखा पांडेय फिलहाल कोल इंडिया लिमिटेड में महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं. उनकी नियुक्ति कार्यभार संभालने की तिथि से पांच वर्षों के लिए या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, की गयी है रेखा पांडेय सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) में भी कई वर्षों तक कार्यरत रही हैं. कोयला क्षेत्र में उनके अनुभव के आधार पर अब उन्हें एमसीएल में निदेशक (कार्मिक) की जिम्मेदारी सौंपी गयी है. नियुक्ति आदेश जारी होने के बाद उनके नये पद पर कार्यभार संभालने की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी.



आज संसद से सड़क तक आरोप प्रत्यारोप का यह 'नौटंकी सर्कस' और हाशिए पर खड़ा बेबस एक आम आदमी।

हरिओम बाजपेई। नादान

श्री रामचरितमानस में परम संत गोस्वामी तुलसीदास ने सदियों पहले एक चौपाई के माध्यम से लिखा था सुर, नर, मुनि, सब की यह रीती, स्वार्थ लाग करे सब प्रीति' लेकिन आज का दौर इससे भी एक कदम आगे निकल चुका है। अब यहां स्वार्थ के लिए प्रेम तो दूर, दूसरों की कब्र पर अपनी राजनीतिक इमारत खड़ी करने का महा-अभियान चल रहा है। देश की राजधानी के वातानु कूलित कमरों से लेकर टीवी स्टूडियो के अखाड़ों तक और संसद के पवित्र गलियारों से लेकर सड़कों तक आज जो कुछ भी परोसा जा रहा है, वह लोकतंत्र कम और किसी घटिया सर्कस की नौटंकी ज्यादा प्रतीत होता है।

एक तरफ सत्ता पक्ष के पास अपनी हर नाकामी को छिपाने के लिए 'विपक्ष की साजिशों' का पुराना और घिसा-पिटा राग है, तो दूसरी तरफ विपक्ष के पास बिना किसी विजन, बिना किसी होमवर्क के बस 'विरोध के लिए विरोध' करने का शौक है। इन दोनों की इस खींचतान में अगर किसी की सांसें घुट रही हैं, तो वह इस देश का आम नागरिक है—जो सुबह से शाम तक बस दो जून की रोटी और अपने बच्चों के भविष्य के जुगाड़ में पिस रहा है।एक तरफ शाम ढलते ही टीवी के पर्दे पर जो महाभारत सजती है, उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे देश की सारी समस्याएं स्टूडियो की डिबेट से ही पैदा हुई हैं और वहीं खत्म हो जाएंगी। टाई कोट पहने प्रवक्ता, और चीखते-चिल्लाते एंकर ऐसे तेवर दिखाते हैं मानो देश की जीडीपी उनके भाषण से ही ऊपर-नीचे हो रही हो। लेकिन, जरा उस मां से पूछिए जिसकी रसोई में गैस सिलेंडर के दाम ने आग लगा रखी है। उस बेरोजगार युवा से पूछिए जिसके हाथ में डिग्रियां तो हैं, लेकिन पसीना बहाने के बाद भी चपरासी की नौकरी का फॉर्म तक नसीब नहीं होता। क्या इन महलों में बैठने वाले 'नेताओं' और 'विश्लेषकों' को कभी यह अहसास हुआ है कि महंगाई के इस चक्रव्यूह में एक आम आदमी किस तरह तिल-तिल कर मर रहा है जबकि संसद में देश के गंभीर मुद्दों पर चर्चा होनी चाहिए, तब वहां माइक तोड़े जाते हैं, कागज के टुकड़े उछाले जाते हैं और एक-दूसरे के पूर्वजों तक पर कीचड़ उछाला जाता है। जनता अपने टैक्स के पैसों से इन राजाओं का वेतन और भत्ते भरती है, और बदले में उसे मिलता क्या है? केवल गालियों और आरोपों का एक अंतहीन सिलसिला एक मजबूत, सजग और धारदार विपक्ष लोकतंत्र का ऑक्सीजन होता है। लेकिन आज का विपक्ष ऑक्सीजन देने की बजाय लोक तंत्र का दम घोंटने पर तुला बैठा है। सरकार की गलत नीतियों को घेरना विपक्ष का धर्म है, लेकिन आज हो क्या रहा है आज विपक्ष के पास जनता के असली मुद्दों जैसे शिक्षा का गिरता स्तर, अस्पतालों की बदहाली, किसानों की कर्जमाफी और युवाओं का पलायन पर बात करने के लिए न तो आंकड़े हैं और न ही नीयत। वे ऐसे सतही और सनसनीखेज मुद्दों पर राजनीति करते हैं जिनका आम आदमी के चूल्हे-चौके से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं होता। जब आप बिना किसी ठोस विकल्प और जमीन की समझ के विरोध करेंगे, तो सत्ता पक्ष को आपको खारिज करने का नैतिक बल अपने आप मिल जाता है। विपक्ष की यह लाचारी और वैचारिक दिवालियापन, सरकार के अहंकार को और अधिक हवा दे रहा है। दूसरी तरफ, सत्ता के सिंहासन पर बैठे लोगों का हाल यह है कि उन्हें जमीन की वास्त विकताएं दिखाई देना बंद हो चुकी हैं। विज्ञापनों की दुनिया में देश को भले ही सोने की चिड़िया बना दिया गया हो, लेकिन हकी कत यह है कि सरकारी अस्पतालों के गलियारों में दम तोड़ते मरीज और कागजों में सिमट चुकी योजनाएं चीख-चीख कर कुछ और ही कहानी बयां कर रही हैं। जब भी जनता अपनी बदहाली का रोना रोती है, उसे या तो 'देशद्रोह' का तमगा दे दिया जाता है या फिर आंकड़ों की ऐसी बाजीगरी दिखाई जाती है कि आदमी खुद को ही मूर्ख समझने लगता है। जब सवाल पूछने वाले को ही दुश्मन मान लिया जाए, तो समझ लीजिए कि तानाशाही और अहंकार अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है यह देश किसी राजनीतिक दल की बपौती नहीं है और न ही जनता इन नेताओं की कठपुतली है। आज जरूरत इस बात की है कि आम नागरिक इस 'तू-तू, मैं-मैं' के ड्रामे से बाहर निकले और इनसे सीधे सवाल पूछे। जब तक जनता इन नौटंकी बाजों को उनके भाषणों से नहीं, बल्कि उनके कामों से तौलना शुरू नहीं करेगी, तब तक यह छीटाकशी यूं ही चलती रहेगी। राजनेताओं को यह समझ लेना चाहिए कि जनता की सहन शीलता की एक सीमा होती है। जिस दिन आम आदमी का यह सब्र टूटा, उस दिन यह कुर्सियां, ये मंच और ये तीखे आरोप सब धू-धू कर जलकर राख हो जाएंगे। इतिहास गवाह है कि जब-जब सियासत जनता के दर्द से मुंह मोड़ती है, तब-तब क्रांतियां दफ्तरों से नहीं, बल्कि आम आदमी के सुलगते जेहन से ही जन्म लेती हैं। जिस दिन जनता ने सीधा सवाल इन राजनेताओं से पूछना शुरू कर दिया उस दिन कुर्सी मिलना तो दूर की बात स्वयं का मुह भी दिखाना भी मुश्किल हो जाएगा।



"सियासत की लड़ाई में जनता महँगाई की मार झेल रही है।"

अधिक शिक्षा, कम रोज़गार : भारत में बढ़ते रोजगार संकट



● डॉ. विजय गर्ग



द्रियों से प्राप्त जानकारी और अनुभव के मेल को दर्शाता है। वे हवा की दिशा, दिखाई देने वाले प्राकृतिक संकेतों और आसपास के परिवर्तनों के अनुसार अपनी उड़ान में बदलाव कर सकते हैं।

प्रवासी पक्षियों के लिए यह क्षमता विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उन्हें ऊर्जा की खपत, मौसम, भोजन की उपलब्धता और प्रजनन या शीतकालीन निवास स्थलों तक समय पर पहुँचने के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। अनुकूल हवाओं और ऊपर उठती हवा का उपयोग उनकी यात्रा में लगने वाले शारीरिक प्रयास को कम कर सकता है तथा सीमित ऊर्जा भंडार के साथ लंबी दूरी तय करने में मदद कर सकता है।

भारत में शिक्षा को हमेशा बेहतर भविष्य, आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक प्रगति का सबसे प्रभावी माध्यम माना गया है। माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा पर वर्षों तक समय और धन खर्च करते हैं, इस उम्मीद के साथ कि अच्छी डिग्री उन्हें सम्मानजनक नौकरी और सुरक्षित जीवन प्रदान करेगी। लेकिन आज एक गंभीर विरोधाभास सामने आ रहा है—शिक्षित युवाओं की संख्या बढ़ रही है, फिर भी पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हैं। यही भारत के बढ़ते रोजगार संकट की एक प्रमुख चुनौती है।

शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती खाई

हर वर्ष लाखों विद्यार्थी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों से स्नातक तथा स्नातकोत्तर की डिग्रियाँ प्राप्त करते हैं। इंजीनियरिंग, प्रबंधन, विज्ञान, वाणिज्य और कला जैसे क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद अनेक युवा अपनी योग्यता के अनुरूप नौकरी पाने में असफल रहते हैं। कुछ को लंबे समय तक बेरोजगार रहना पड़ता है, जबकि अन्य अपनी शैक्षणिक योग्यता से कम स्तर के काम करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

इस समस्या का एक प्रमुख कारण शिक्षा और रोजगार बाजार की आवश्यकताओं के बीच तालमेल का अभाव है। कई शिक्षण संस्थानों में अब भी सैद्धांतिक ज्ञान और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने पर अधिक जोर दिया जाता है। इसके विपरीत, नियोक्ताओं को ऐसे युवाओं की आवश्यकता होती है जिनमें व्यावहारिक ज्ञान, संवाद कौशल, समस्या-समाधान की क्षमता, डिजिटल दक्षता और टीम में काम करने की योग्यता हो।

डिग्री से आगे कौशल का महत्त्व

आज केवल डिग्री प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। बदलती अर्थव्यवस्था में तकनीकी ज्ञान, व्यावसायिक प्रशिक्षण और वास्तविक परिस्थितियों में काम करने का अनुभव भी आवश्यक है। अनेक विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद भी इस बात को लेकर अनिश्चित रहते हैं कि वे अपनी योग्यता का उपयोग किसी कार्यक्षेत्र में कैसे करें।

शिक्षा व्यवस्था में इंटर्नशिप, प्रयोगात्मक प्रशिक्षण, उद्योगों के साथ सहयोग, परियोजना-आधारित अध्ययन और व्यावसायिक शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। विद्यालयों और कॉलेजों में विद्यार्थियों को केवल नौकरी पाने के लिए तैयार करने के बजाय उन्हें काम करने, समस्याओं का समाधान खोजने और नए अवसर विकसित करने योग्य बनाया जाना चाहिए।

सरकारी नौकरियों की सीमित संभावनाएँ

भारत में सरकारी नौकरी को स्थिरता, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है। इसी कारण लाखों युवा सीमित पदों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। कई बार वे वर्षों तक एक ही परीक्षा की तैयारी में लगे रहते हैं और इस दौरान अन्य कौशल विकसित करने या वैकल्पिक रोजगार तलाशने के अवसर खो देते हैं।

सरकारी नौकरियाँ महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन वे देश के सभी शिक्षित युवाओं को रोजगार प्रदान नहीं कर सकतीं। इसलिए निजी क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण रोजगार, छोटे उद्योगों, स्टार्टअप, कृषि-आधारित उद्यमों और सेवा क्षेत्र में अवसरों का विस्तार आवश्यक है।

आर्थिक विकास के साथ रोजगार सृजन

किसी देश की अर्थव्यवस्था का विकास तभी व्यापक सामाजिक लाभ देता है, जब उसके साथ पर्याप्त और सम्मानजनक रोजगार भी पैदा हों। यदि आर्थिक विकास कुछ सीमित क्षेत्रों तक केंद्रित रह जाए और रोजगार सृजन की गति धीमी हो, तो शिक्षित युवाओं में असंतोष बढ़ सकता है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम रोजगार सृजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इन उद्यमों को आसान ऋण, तकनीकी सहायता, बाजार तक पहुँच और सरल प्रक्रियाएँ उपलब्ध कराना आवश्यक है। स्थानीय उद्योगों, खाद्य प्रसंस्करण, पर्यटन, स्वास्थ्य सेवाओं, नवीकरणीय ऊर्जा और डिजिटल सेवाओं में भी रोजगार की व्यापक संभावनाएँ हैं।

बेरोजगारी का मानवीय पक्ष

बेरोजगारी केवल आर्थिक समस्या नहीं है। इसका प्रभाव युवाओं के आत्मविश्वास, मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक संबंधों पर भी पड़ता है। जब कोई युवा वर्षों की मेहनत और शिक्षा के बाद भी नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता, तो वह निराशा, तनाव और सामाजिक दबाव का अनुभव कर सकता है। परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ता है और कई युवा बेहतर अवसरों की तलाश में अपने घरों तथा क्षेत्रों से दूर जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

इसलिए रोजगार नीति का उद्देश्य केवल बेरोजगारी के आँकड़ों को कम करना नहीं, बल्कि युवाओं को स्थिर, सुरक्षित, सम्मानजनक और उचित वेतन वाले काम उपलब्ध कराना भी होना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: चुनौती और अवसर

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), स्वचालन और डिजिटल तकनीकें रोजगार की प्रकृति को तेजी से बदल रही हैं। कुछ पारंपरिक कार्यों की आवश्यकता घट सकती है, लेकिन साथ ही डेटा विश्लेषण, साइबर सुरक्षा, रोबोटिक्स, डिजिटल स्वास्थ्य, तकनीकी सहायता और नई सेवाओं में रोजगार के अवसर भी पैदा हो रहे हैं।

युवाओं को इन परिवर्तनों के लिए तैयार करने हेतु डिजिटल साक्षरता, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और निरंतर सीखने की क्षमता विकसित करनी होगी। सरकार, शिक्षण संस्थानों और उद्योगों को मिलकर ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाने चाहिए जो बदलती तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

उद्यमिता और स्वरोजगार को प्रोत्साहन

हर युवा को नौकरी तलाशने वाला बनाने के बजाय कुछ युवाओं को रोजगार पैदा करने वाला बनाने की दिशा में भी प्रयास करना चाहिए। उद्यमिता, स्वरोजगार और स्थानीय व्यवसाय युवाओं को अपनी प्रतिभा का उपयोग करने का अवसर प्रदान कर सकते हैं।

इसके लिए व्यवसाय शुरू करने संबंधी मार्गदर्शन, वित्तीय साक्षरता, बाजार की जानकारी, मेंटरशिप और आसान ऋण की उपलब्धता महत्त्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सेवाएँ, कृषि तकनीक, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण और पर्यावरण-अनुकूल व्यवसाय नए अवसर प्रदान कर सकते हैं।

आगे का रास्ता

भारत के रोजगार संकट का समाधान किसी एक नीति या योजना से संभव नहीं है। इसके लिए शिक्षा व्यवस्था, उद्योग, सरकार और समाज को मिलकर काम करना होगा। पाठ्यक्रमों को रोजगार बाजार की जरूरतों के अनुरूप बनाना, व्यावहारिक प्रशिक्षण बढ़ाना, उद्योगों में निवेश को प्रोत्साहित करना, छोटे उद्यमों को मजबूत करना और रोजगार के विश्वसनीय आँकड़ों के आधार पर नीतियाँ बनाना आवश्यक है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्रियाँ बाँटना नहीं, बल्कि ऐसे सक्षम नागरिक तैयार करना होना चाहिए जो ज्ञान को उपयोगी कौशल में बदल सकें। इसी तरह आर्थिक विकास का लक्ष्य केवल उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि लोगों के लिए आजीविका के अवसर पैदा करना भी होना चाहिए।

भारत के पास विशाल युवा आबादी, वैज्ञानिक प्रतिभा और उद्यमशीलता की अपार क्षमता है। यदि इन संसाधनों का सही उपयोग किया जाए, तो शिक्षित युवाओं की बढ़ती संख्या देश की ताकत बन सकती है, समस्या नहीं।

निष्कर्षतः, भारत को केवल अधिक शिक्षित युवाओं की नहीं, बल्कि बेहतर कौशल, मजबूत उद्योगों और अधिक गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसरों की आवश्यकता है। शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को पाटना ही देश के युवाओं के सपनों को वास्तविकता में बदलने की दिशा में सबसे महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रतिष्ठित वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107



फेसबुक पर महान बनने की कला



डॉ. विजय गर्ग

डिजिटल युग में महानता की परिभाषा बदल गई है। पहले लोग ज्ञान, मेहनत, समाज सेवा और सार्थक उपलब्धियों के माध्यम से सम्मान अर्जित करते थे। लेकिन आज कुछ तस्वीरें, भावनात्मक पोस्ट, प्रभावशाली कैप्शन और सैकड़ों लाइक किसी व्यक्ति को असाधारण रूप से महत्वपूर्ण दिखा सकते हैं। फेसबुक ने एक ऐसी आभासी दुनिया बना दी है, जहाँ कभी-कभी वास्तव में महान बनने की तुलना में महान दिखाई देना अधिक आसान लगता है।

फेसबुक एक शक्तिशाली सोशल नेटवर्किंग मंच है। यह लोगों को जोड़ता है, सूचनाओं का प्रसार करता है, रचनात्मकता को बढ़ावा देता है और विचारों को साझा करने के अवसर प्रदान करता है। लेकिन इसके सकारात्मक उपयोगों के साथ-साथ इसने ऐसी संस्कृति को भी बढ़ावा दिया है, जिसमें वास्तविकता से अधिक दिखावे को महत्व दिया जाने लगा है।

फेसबुक पर महान बनने का पहला नुस्खा है अपनी हर उपलब्धि का प्रदर्शन करना, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो। कोई प्रमाणपत्र, किसी प्रभावशाली व्यक्ति से मुलाकात, किसी प्रसिद्ध हस्ती के साथ तस्वीर या किसी सामान्य सामाजिक समारोह में भागीदारी भी फेसबुक की टाइमलाइन पर बड़ी खबर बन सकती है। कैप्शन जितना प्रभावशाली होगा, प्रशंसा मिलने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

दूसरा तरीका स्वयं को समाज सुधारक के रूप में प्रस्तुत करना है। किसी गरीब व्यक्ति की सहायता करने, कंबल बाँटने या सार्वजनिक कार्यक्रम में भाग लेने की तस्वीरें साझा करके उदारता की छवि बनाई जा सकती है। समाज सेवा निस्संदेह महत्वपूर्ण है, लेकिन उसका वास्तविक मूल्य तस्वीरों की संख्या में नहीं, बल्कि निस्वार्थ भावना और निरंतर प्रयासों में होता है। कई बार किसी की चुपचाप सहायता करना, दुनिया के सामने अपनी हर भलाई का ऐलान करने से अधिक सार्थक होता है।

एक अन्य लोकप्रिय तरीका हर विषय का विशेषज्ञ बन जाना है। राजनीति, शिक्षा, विज्ञान, धर्म, स्वास्थ्य और अंतरराष्ट्रीय मामलों पर एक ही व्यक्ति अपनी विशेषज्ञता का दावा कर सकता है। कुछ प्रेरक उद्धरण, दूसरे लोगों के साझा किए गए संदेश और आत्मविश्वास से व्यक्त किए गए विचार असाधारण बुद्धिमत्ता का आभास पैदा कर सकते हैं। दुर्भाग्य से, आत्मविश्वास हमेशा ज्ञान का विकल्प नहीं होता। तथ्यों की जाँच किए बिना जानकारी साझा करने से गलत सूचनाएँ भी फैल सकती हैं।

इस आभासी खेल में बधाइयों और प्रशंसाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मित्रों की तस्वीरों पर टिप्पणियाँ करना, उनकी उपलब्धियों की सराहना करना और एक-दूसरे की प्रशंसा करना ऑनलाइन संबंधों को मजबूत बना सकता है। लेकिन कभी-कभी प्रशंसा एक पारस्परिक समझौता बन जाती है—आज आप मेरी तारीफ कीजिए, कल मैं आपकी तारीफ करूँगा। धीरे-धीरे बधाई संदेशों की संख्या, उनके पीछे छिपी सच्ची भावना से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

तस्वीरें भी इस खेल का अनिवार्य हिस्सा हैं। सुंदर पृष्ठभूमि, प्रभावशाली मुद्राएँ, आकर्षक कपड़े और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ खिंचवाई गई तस्वीरें एक शानदार डिजिटल पहचान बनाने में मदद करती हैं। चतुराई से लिखे गए शब्दों के माध्यम से सामान्य गतिविधियों को भी असाधारण उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

लेकिन वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या आभासी लोकप्रियता सच्ची महानता का प्रमाण है? किसी व्यक्ति के हजारों अनुयायी हो सकते हैं, फिर भी समाज के प्रति उसका योगदान बहुत कम हो सकता है। दूसरी ओर, कोई व्यक्ति बिना किसी प्रचार के वंचित बच्चों को शिक्षित कर सकता है, पर्यावरण की रक्षा कर सकता है या संघर्षरत परिवारों की सहायता कर सकता है।

सच्ची महानता को लाइक, शेयर या अनुयायियों की संख्या से नहीं मापा जा सकता। यह अच्छे चरित्र, करुणा, ईमानदारी, ज्ञान और निरंतर अच्छे कार्यों से उत्पन्न होती है। सोशल मीडिया का उपयोग उपयोगी विचार साझा करने, सकारात्मक बदलाव को प्रोत्साहित करने और वास्तविक उपलब्धियों का सम्मान करने के लिए होना चाहिए, न कि कृत्रिम महत्व का प्रदर्शन करने के लिए।

फेसबुक अपने आप में न अच्छा है और न बुरा। इसका महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग किस प्रकार करते हैं। हम इसके माध्यम से लोगों को शिक्षित, प्रेरित और एकजुट कर सकते हैं या इसे आत्मप्रचार का मंच बना सकते हैं।

अंततः, सबसे बड़ी उपलब्धि दूसरों के सामने महान दिखाई देना नहीं, बल्कि एक बेहतर इंसान बनना है। ऑनलाइन प्रशंसा कुछ ही घंटों में समाप्त हो सकती है, लेकिन दयालुता, बौद्धिक ईमानदारी और सार्थक समाज सेवा के कार्य लंबे समय तक अपना प्रभाव छोड़ते हैं।

वास्तविक जीवन में महानता कर्मों से अर्जित की जाती है, जबकि फेसबुक पर इसे दिखावे के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। बुद्धिमानी इसी अंतर को समझने में है।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

शब्दों से परे एक संसार



डॉ. विजय गर्ग

भाषा मानवता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। यह हमें अपने विचार साझा करने, भावनाएँ व्यक्त करने, ज्ञान को सुरक्षित रखने और समाज का निर्माण करने में सक्षम बनाती है। बोले और लिखे गए शब्दों के माध्यम से मनुष्य पीढ़ियों और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करता है। लेकिन संचार का संसार हमारे बोले हुए शब्दों तक सीमित नहीं है। मानवीय भाषा से परे भावनाओं, संकेतों, हाव-भावों और संबंधों का एक विशाल संसार है, जो मनुष्यों, जानवरों और प्रकृति को आपस में जोड़ता है।

शब्दों के बिना संवाद

एक माँ अपने बच्चे के रोने से उसकी आवश्यकता समझ लेती है, जबकि बच्चा अभी बोलना भी नहीं सीख पाया होता। एक प्यारी मुस्कान स्नेह व्यक्त कर सकती है, जबकि आँसू उस दुःख को प्रकट कर सकते हैं जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन होता है। सांत्वना देने वाला स्पर्श कभी-कभी वह विश्वास प्रदान कर देता है, जो लंबी बातचीत से भी नहीं मिल पाता।

ये दैनिक अनुभव बताते हैं कि संवाद केवल शब्दों और व्याकरण तक सीमित नहीं है। भावनाएँ, चेहरे के हाव-भाव, शारीरिक भाषा और मौन भी कई बार शब्दों से अधिक प्रभावशाली संदेश देते हैं।

अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले लोगों के बीच भी दया, सहयोग और सहायता की भावना गहरे संबंध स्थापित कर सकती है। मदद के लिए बढ़ाया गया हाथ, स्वागत का एक संकेत या दिल से दी गई मुस्कान बिना किसी अनुवाद के सांस्कृतिक सीमाओं को पार कर सकती है।

पशुओं के संवाद की अद्भुत दुनिया

पशु भी ध्वनियों, शारीरिक गतिविधियों, गंधों और अन्य संकेतों के माध्यम से संवाद करते हैं। पक्षी अपने साथियों को आकर्षित करने, अपने क्षेत्र की रक्षा करने और खतरे की चेतावनी देने के लिए विभिन्न प्रकार की आवाजें निकालते हैं। मधुमक्खियाँ अपने प्रसिद्ध नृत्य के माध्यम से दूसरी मधुमक्खियों को भोजन के स्रोतों की जानकारी देती हैं।

डॉल्फिन सीटी और क्लिक जैसी ध्वनियों का उपयोग करती हैं, जबकि हाथी आवाजों, शारीरिक गतिविधियों और कम आवृत्ति वाली ध्वनियों के माध्यम से संवाद करते हैं। इनमें से कुछ ध्वनियाँ लंबी दूरी तक पहुँच सकती हैं। कुत्ते शारीरिक हाव-भाव, गंध और आवाजों के माध्यम से मनुष्यों तथा दूसरे पशुओं के साथ संपर्क स्थापित करते हैं।

ये उदाहरण दर्शाते हैं कि संवाद केवल मनुष्यों की विशेषता नहीं है। हालाँकि, प्रत्येक प्रजाति की संचार प्रणाली अलग होती है। वैज्ञानिक अभी भी यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि पशु अपने संकेतों के माध्यम से कितनी जानकारी देते हैं और दूसरों के संकेतों को किस प्रकार समझते हैं।

पशुओं के संवाद को समझना हमें उनके प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। हमें उनके व्यवहार को केवल मानवीय दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिए, बल्कि उनकी आवश्यकताओं, इंद्रियों और प्राकृतिक वातावरण के संदर्भ में समझना चाहिए।

प्रकृति की अपनी भाषा

प्रकृति बोले गए वाक्यों के बजाय अपने बदलते रूपों और संकेतों के माध्यम से जानकारी देती है। काले बादल, बदलती हवाएँ और गिरता तापमान आने वाले तूफान के संकेत हो सकते हैं। पौधों का खिलना, पक्षियों का प्रवास और कीटों की मौसमी गतिविधियाँ पर्यावरण के प्रति जीवों की प्राकृतिक प्रतिक्रियाओं को दर्शाती हैं।

पेड़ ऐसे रासायनिक संकेत छोड़ सकते हैं, जो कीटों और आसपास के पौधों के साथ उनकी अंतःक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। पौधों की जड़ें मिट्टी में मौजूद सूक्ष्मजीवों के साथ भी जटिल रासायनिक आदान-प्रदान करती हैं। इन प्रक्रियाओं को कभी-कभी रूपक के रूप में प्रकृति की भाषा कहा जाता है, लेकिन ये मानवीय भाषा के समान नहीं हैं।

प्रकृति के इन संकेतों को समझने से हमें उन संबंधों की जानकारी मिलती है, जो पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित रखते हैं। प्रदूषित नदियाँ, पक्षियों की घटती संख्या और परागण करने वाले कीटों में कमी बड़ी पर्यावरणीय समस्याओं के संकेत हो सकते हैं। इन संकेतों को पहचानना जैव विविधता की रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

विज्ञान और खोज की भाषा

विज्ञान हमें शब्दों से परे संसार को समझने का एक और मार्ग प्रदान करता है। गणित प्रतीकों और समीकरणों के माध्यम से संबंधों को व्यक्त करता है। संगीत ताल, लय और सुरों के माध्यम से भावनाओं को जागृत करता है। कला रंगों, आकारों और गतियों के माध्यम से अनुभवों को अभिव्यक्त करती है।

दूर स्थित किसी आकाशगंगा या सूक्ष्म जीव की वैज्ञानिक तस्वीर भी हमारे भीतर जिज्ञासा पैदा कर सकती है, भले ही उसकी सभी विशेषताओं को शब्दों में समझाना कठिन हो।

प्रौद्योगिकी इन संभावनाओं का विस्तार कर रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से पशुओं की आवाजों के स्वरूपों का विश्लेषण किया जा रहा है। सेंसरों की मदद से वन्यजीवों और पर्यावरण की निगरानी की जा रही है। ये उपकरण दूसरी प्रजातियों को समझने में सहायता कर सकते हैं, हालाँकि उनके संकेतों की सही व्याख्या करना अभी भी एक वैज्ञानिक चुनौती है।

क्या हम शब्दों के बिना दूसरों को समझ सकते हैं?

शब्दों के बिना संवाद करने के लिए ध्यान, धैर्य और सहानुभूति की आवश्यकता होती है। लोग अक्सर एक-दूसरे को इसलिए गलत समझ लेते हैं क्योंकि वे केवल बोले गए शब्दों पर ध्यान देते हैं, लेकिन उनके पीछे छिपी भावनाओं को नहीं समझते।

किसी व्यक्ति का मौन उदासी, अनिश्चितता, एकाग्रता या एकांत की इच्छा का संकेत हो सकता है। इसलिए शारीरिक हाव-भावों को समझते समय सावधानी बरतनी चाहिए और उन्हें किसी की भावनाओं का निश्चित प्रमाण नहीं मानना चाहिए।

यही सिद्धांत पशुओं पर भी लागू होता है। हमें उनके व्यवहार का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना चाहिए, उनकी सीमाओं का सम्मान करना चाहिए और यह नहीं मानना चाहिए कि उनके अनुभव मनुष्यों जैसे ही होते हैं।

आज के डिजिटल युग में वास्तविक मानवीय संबंध बनाए रखना कभी-कभी कठिन हो जाता है। संदेश और इमोजी त्वरित संवाद में सहायता करते हैं, लेकिन वे हमेशा ध्यानपूर्वक सुनने, सार्थक बातचीत और प्रत्यक्ष उपस्थिति का विकल्प नहीं बन सकते। परिवार के साथ समय बिताना, प्रकृति का अवलोकन करना और पशुओं की देखभाल करना हमें शब्दों से परे संबंधों का महत्त्व समझाता है।

अधिक संवेदनशील संसार का निर्माण

भाषा से परे संवाद को समझना एक समावेशी और संवेदनशील समाज के निर्माण में सहायता कर सकता है। यह हमें उन लोगों का सम्मान करना सिखाता है, जो विभिन्न तरीकों से संवाद करते हैं, जैसे सांकेतिक भाषा, संचार उपकरणों या अन्य गैर-मौखिक माध्यमों का उपयोग करने वाले व्यक्ति।

यह सोच हमें पशुओं और प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा के लिए भी प्रेरित करती है। जब हम दूसरे जीवों की आवश्यकताओं को समझते हैं, तो हम अपने कार्यों के प्रभावों के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं। हमारी करुणा केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पृथ्वी पर जीवन के व्यापक संसार तक फैलनी चाहिए।

शिक्षा इस जागरूकता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। बच्चों को भाषाएँ और वैज्ञानिक तथ्य सिखाने के साथ-साथ प्रकृति का निरीक्षण करने, पशुओं के व्यवहार को समझने, कला और संगीत की सराहना करने तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति विकसित करने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष

शब्दों से परे संसार संवाद से रहित संसार नहीं है, बल्कि संकेतों, भावनाओं, प्राकृतिक प्रक्रियाओं और ऐसे संबंधों से समृद्ध संसार है, जिन्हें केवल शब्दों के माध्यम से पूरी तरह व्यक्त नहीं किया जा सकता। बच्चे के रोने और पक्षी की चहचहाहट से लेकर पौधों की प्रतिक्रियाओं और प्रकृति के बदलते स्वरूपों तक, जीवन स्वयं को असंख्य तरीकों से अभिव्यक्त करता है।

मानवीय भाषा ने हमें अद्भुत क्षमताएँ प्रदान की हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हर महत्त्वपूर्ण बात को शब्दों में व्यक्त करना आवश्यक है। कभी-कभी सबसे गहरे सबक ध्यानपूर्वक देखने, मौन रहने और दूसरों के प्रति करुणा रखने से मिलते हैं।

वाल्मीकि जयंती - 26 अक्टूबर : वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्

डा. विनोद बब्बर

आदि कवि, रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि ऋषियों के ऋषि, योगियों के योगी तथा संगीतज्ञों के संगीतज्ञ थे। वे वेदों के ज्ञाता थे। उन्होंने विश्व को संप्रदाय और जाति से दूर सभ्य समाज की परिकल्पना दी है। महाकाव्य रामायण के माध्यम से उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन मूल्यों को प्रकट किया है। आश्विन पूर्णिमा को प्रकट हुए भगवान वाल्मीकि परम ज्ञानी थे। तमसा नदी के तट पर व्याध द्वारा क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को मार डालने पर उनके मुख से लौकिक छंद के रूप में यह श्लोक प्रकट हुआ-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम्।।

तमसा नदी पर स्नानादि के पश्चात आश्रम लौट कर विचारों में खो गये। तभी ब्रह्माजी ने उन्हें नारद द्वारा उन्हें सुनाई रामकथा का स्मरण कराते हुए उन्हें उस कथा को काव्यबद्ध करने के लिए प्रेरित किया। इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने चौबीस हजार श्लोकों में नई भाषा ,नए कथ्य, नए अंदाज और भाव भूमि के साथ विश्व को प्रथम महाकाव्य रामायण दिया। रामायण में अनेक घटनाओं के घटित होने के समय सूर्य, चंद्र तथा अन्य नक्षत्र की स्थितियों का वर्णन प्रमाण है कि वे ज्योतिष विद्या एवं खगोल विद्या के भी प्रकाण्ड पण्डित थे। ब्रह्मा जी ने रामायण की रचना पर कहा-

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितः च महीतले।
तावत्रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।
(जबतक इस धराधाम पर पहाड और नदियाँ रहेंगी, तब तक इस लोक में रामायण की कथा का प्रचार रहेगा।)

यावत्रामस्य च कथा त्वत्कृता प्रचरिष्यति।।
तावत्ऊर्ध्वम्-अधः च त्वम्मत्लोकेषु निवत्स्यसि।।
(जबतक तुम्हारी रची हुई रामायण की कथा का लोकों में प्रचार रहेगा, तब तक तुम्हारा यश भी मेरे बनाये हुए लोको में और उनके भी उर्ध्व लोक में निवास करोगे)।

हालांकि महर्षि वाल्मीकि को राम का समकालीन माना जाता है लेकिन अनेक ग्रन्थों में सतयुग, त्रेता और द्वापर तीनों कालों में वाल्मीकि का उल्लेख मिलता है। रामचरितमानस में इस बात का उल्लेख मिलता है कि वनवास के समय श्री राम स्वयं उनके आश्रम में आये, 'देखत बन सर सैल सुहाए। वाल्मीक आश्रम प्रभु आए।।' श्री राम ने आदिकवि वाल्मीकि के चरणों में दण्डवत प्रणाम करने के लिए जमीन पर डंडे की भांति लेट गए थे और उनके मुख से निकला था 'तुम त्रिकालदर्शी मुनिनाथा, विश्व बिद्र जिमि तुमरे हाथा।' अर्थात आप तीनों लोकों को जानने वाले स्वयं प्रभु हो। ये संसार आपके हाथ में एक बेर के समान प्रतीत होता है। महाभारत काल में भी वाल्मीकि का वर्णन मिलता है। महाभारत में पांडव की विजय के पश्चात द्रौपदी ने यज्ञ अनुष्ठान किया। द्रोपदी को बताया गया था कि यज्ञ की सफलता का प्रमाण वहां रखे शंख का बजाना होगा। आश्चर्य कि शंख नहीं बजा। इसपर द्रोपदी ने श्रीकृष्ण से इसका कारण जानना चाहा। तब श्रीकृष्ण ने कहा था कि

यज्ञ में सभी मुनियों बुलाये गये किन्तु मुनियों के मुनि अर्थात वाल्मीकि जी को न बुलाये जाने का परिणाम है कि यज्ञ सम्पूर्ण नहीं हुआ। तब द्रौपदी स्वयं उनके आश्रम में उनसे यज्ञ में आने का अनुरोध करने गई। महर्षि वाल्मीकि के आगमन के पश्चात ही शंख बजता है। अतः द्रौपदी का यज्ञ संपन्न होता है।

कबीरदास जी ने इस घटना की चर्चा करते हुए कहा है, 'सुपच रूप धार सतगुरु जी आए। पांडों के यज्ञ में शंख बजाए।' यह भी सर्वज्ञात है कि सीता जी ने अपने वनवास का अन्तिम काल महर्षि वाल्मीकि के आश्रम पर व्यतीत किया। वहीं पर लव और कुश का जन्म हुआ। वहीं उन्होंने रामायण गायन सीखा।



वाल्मीकि और उनके द्वारा रचित रामायण को भारतीय दर्शन में अत्याधिक सम्मान और श्रद्धा प्राप्त है। श्रीलवकुश कृत श्रीरामायण-मङ्गलाचरण अगस्त्य-संहिता में स्पष्ट उल्लेख है-

वेदवेद्ये परेपुंसि जाते दशरथात्मजे। वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद् रामायणात्मना।।
(वेदवेद्य अर्थात्वेदों से हीं जाने जा सकने वाले परमपुरुष जब दशरथ के पुत्र रुप में प्रकट हुए, तब वेद हीं साक्षात श्रीरामायण रुप में प्राचेतस श्रीवाल्मीकि मुनि के श्रीमुख से अवतीर्ण हुए।)

वाल्मीकिगिरिसम्भूता रामाम्भोनिधिसङ्गता।
श्रीमद्रामायणी गङ्गा पुनाति भुवनत्रयम्।।
(वाल्मीकि रुपि पर्वत से उत्पन्न श्रीराम रुपि सागर मे मिलने वाली श्रीमद् रामायण रुपि गङ्गा तीनों लोकों को पवित्र करने वाली है)

महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के चरित्र से विश्व को परिचित कराया। उनके द्वारा रचित रामायण में निर्विकार, द्वेषरहित श्रीराम के चरित्र का वर्णन करते हुए कहा गया -

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।।

अर्थात्राज्याभिषेक के लिए बुलाए गए और वन के लिए विदा किए गए श्रीराम के मुख के आकार में मैंने कोई भी अन्तर नहीं देखा। राज्याभिषेक के अवसर पर उनके मुख मण्डल पर कोई प्रसन्नता नहीं थी और वनवास के दुःखों से उनके चेहरे पर शोक की रेखाएं नहीं थी।

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ न महतामेकरूपता।।

अर्थात्सूर्य उदय होता हुआ लाल होता है और अस्त होता हुआ भी लाल होता है। इसी प्रकार महापुरुष सम्पत्ति और विपत्ति में समान ही रहते हैं। सम्पत्ति प्राप्त होने पर हर्षित नहीं होते और विपत्ति पड़ने पर दुःखी नहीं होते।

श्रीराम के चरित्र और व्यवहार से सभी भली- भांति परिचित थे। इसीलिए जब भरत और शत्रुघ्न अपने ननिहाल से लौटे तो उन्हें मंथरा की करतूत के बारे में जानकारी मिली तो शत्रुघ्न मंथरा को पकड़ घसीटने लगा। तब भरत ने उसे रोकते हुए कहा, 'यदि इस कुब्जा के मारने का पता श्री राम को चल गया तो वह धर्मात्मा हम दोनों से बात तक न करेंगे।'

श्रीराम ने गुरुकुल में रहते हुए वेदों का अध्ययन किया था। इसीलिए हनुमान जी अशोक वाटिका में सीता से वार्तालाप में श्री राम की चर्चा करते हुए कहते हैं-

यजुर्वेदविनीतश्च वेदविद्भिः सुपूजितः।
धनुर्वेदे च वेदे च वेदांगेषु च निष्ठितः।।

अर्थात्श्री राम यजुर्वेद में पारंगत हैं। बड़े-बड़े ऋषि भी इसके लिए उनको मानते अर्थात्आदर देते हैं तथा वे धनुर्वेद और वेद वेदांगों में भी प्रवीण हैं।

न केवल भारत वर्ष अपितु सम्पूर्ण विश्व में श्रीराम और श्री रामायण के प्रति कोटिशः जन की भावनाएं प्रमाण है कि श्रीरामरक्षास्तोत्र ने उचित ही कहा है-

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।

(कविता नामक पेड़ की शाखाओं में बैठ कर मधुर 'राम-राम' का कूजन करने वाली वाल्मीकि नामक कोयल को मैं प्रणाम करता हूँ)

निशुल्क 5 दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण - 27 से 31 अक्टूबर 2026 - हिसार में सुनहरा अवसर



सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों और ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार का मंत्र

पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

प्रस्तावना: बेरोजगारी के दौर में शहद से मीठी कमाई का मौका! चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा मधुमक्खी पालन पर पांच दिवसीय निशुल्क प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

तथ्य और मुख्य बिंदु - एक नजर में:

- प्रशिक्षण का नामः मधुमक्खी पालन पर 5 दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण
- तिथिः 27 अक्टूबर 2026 से 31 अक्टूबर 2026 तक (कुल 5 दिन)
- रिपोर्टिंग समयः 27.10.2026 को सुबह 09:00 बजे तक
- स्थानः सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान, बालसमंद रोड़ पर, विश्वविद्यालय के गेट नंबर 3 के सामने, लुदास रोड़, हिसार (हरियाणा)
- शुल्कः बिल्कुल निशुल्क - कोई फीस नहीं
- आयोजकः चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

कौन भाग ले सकता है?

1. इच्छुक मधुमक्खी पालक
2. प्रगतिशील किसान
3. ग्रामीण युवा (बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार का उत्तम अवसर)

पंजीकरण के लिए आवश्यक दस्तावेजः

- अपनी एक पासपोर्ट साइज फोटो
- **आधार कार्ड की फोटोकॉपी**

प्रशिक्षण के मुख्य बिंदु - क्या सिखाया जाएगा? विशेषज्ञों द्वारा हाथों-हाथ प्रशिक्षण दिया जाएगाः

1. मधुमक्खी पालन की बुनियादी जानकारी और तकनीकः मधुमक्खी की प्रजातियाँ, जीवन चक्र
2. कॉलोनी प्रबंधन और देखभालः बॉक्स लगाना, रखरखाव
3. शहद संग्रह, गुणवत्ता और प्रसंस्करणः शुद्ध शहद निकालना, छानना, पैकिंग
4. रोग प्रबंधन और सुरक्षा उपायः मधुमक्खियों के रोग और बचाव, मधुमक्खी पालक की सुरक्षा
5. विपणन और उद्यमिताः शहद बेचना कहाँ और कैसे? सरकारी योजनाएँ, सब्सिडी, आय बढ़ाने के तरीके

क्यों करें मधुमक्खी पालन? - लाभ

- स्वरोजगार का अवसरः कम लागत में शुरू होने वाला व्यवसाय
- अतिरिक्त आय का साधनः शहद के साथ-साथ मोम, रॉयल जेली, पराग से भी आय
- कृषि में बढ़ोतरीः मधुमक्खियों द्वारा परागण से सरसों, सूरजमुखी, बागवानी फसलों का उत्पादन 15-20% तक बढ़ता है
- सरकार की मददः हरियाणा सरकार और राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा अनुदान की सुविधा

जनहित में अपीलः परिवहन विशेष अपने सभी पाठकों, विशेषकर हिसार, सिरसा, भिवानी, जींद, फतेहाबाद के किसान भाइयों और ग्रामीण युवाओं से अपील करता है कि इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाएं। समय पर संस्थान में पहुंचकर पंजीकरण कराएं। सीटें सीमित हो सकती हैं, इसलिए शीघ्रता करें।

यह सूचना जनहित, जनकल्याण और जनसूचना के

एवीएम आलोक शर्मा, वीएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त) वेटरन्स काउंसिल, दिल्ली एनसीटी के अध्यक्ष नियुक्त

नई दिल्ली (न्यूज़ वार्ता)

एयर वाइस मार्शल आलोक शर्मा, वीएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त) को वेटरन्स काउंसिल, दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीटी) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति 24 अक्टूबर 2026 को वेटरन्स काउंसिल के चेयरमैन राजीव अग्निहोत्री द्वारा की गई। उनका प्रारंभिक कार्यकाल तीन वर्ष का होगा।

वेटरन्स काउंसिल का गठन ज्यूडिशियल काउंसिल

के एक प्रस्ताव के अनुसरण में किया गया था। इसका उद्देश्य सैन्य पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों के कल्याण, गरिमा, अधिकारों तथा वैध हितों को बढ़ावा देना है। यह नियुक्ति राष्ट्रीय राजधानी में परिषद की संगठनात्मक उपस्थिति को सुदृढ़ करने और भारतीय सशस्त्र बलों की तीनों सेनाओं—भारतीय थल सेना, भारतीय नौसेना तथा भारतीय वायु सेना के पूर्व सैनिकों की समस्याओं के समाधान के लिए एक साझा एवं एकीकृत मंच स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

तीनों सेनाओं के पूर्व सैनिकों के लिए एक एकीकृत मंच

वेटरन्स काउंसिल भारतीय थल सेना, नौसेना और वायु सेना के पूर्व सैनिकों, सेवानिवृत्त कार्मिकों तथा उनके परिवारों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। सैन्य कार्मिकों का योगदान और उनके बलिदान, चाहे वे किसी भी सेवा, रैंक, ट्रेड या पृष्ठभूमि से संबंधित हों, समान सम्मान, मान्यता और विचार के पात्र हैं।

परिषद का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक सेवा से जुड़े पूर्व सैनिकों की समस्याओं पर उचित ध्यान दिया जाए तथा उनके वैध अधिकारों और देय लाभों की प्राप्ति के लिए कानूनसम्मत एवं रचनात्मक माध्यमों से प्रयास किए जाएँ। इसका मिशन सेवानिवृत्त अधिकारियों, जूनियर कमीशंड अधिकारियों, अन्य रैंकों के सैन्यकर्मियों, नौसैनिकों, वायुसैनिकों तथा उनके परिवारों के कल्याण को समाहित करता है।

सेवानिवृत्ति के बाद पूर्व सैनिकों को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इनमें पेंशन संबंधी शिकायतें, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच, पुनर्वास, रोजगार, दिव्यांगता संबंधी सहायता, पारिवारिक कल्याण तथा प्रशासनिक मामलों के निपटारे में होने वाला विलंब प्रमुख हैं।

वेटरन्स काउंसिल का उद्देश्य इन समस्याओं के समाधान में सहायता के लिए उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना तथा संबंधित अधिकारियों के साथ रचनात्मक संवाद को प्रोत्साहित करना है।

तीन वर्ष का कार्यकाल एवं दायित्व

एवीएम आलोक शर्मा, वीएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त) को प्रारंभिक तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए अध्यक्ष नियुक्त किया जाना परिषद की नेतृत्व में निरंतरता बनाए रखने तथा दिल्ली एनसीटी में कल्याणकारी पहलों को मजबूत करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दिल्ली एनसीटी के अध्यक्ष के रूप में उनसे अपेक्षा की जाएगी कि वे राष्ट्रीय राजधानी में परिषद की गतिविधियों का नेतृत्व करें, तीनों सेनाओं के पूर्व सैनिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करें, पूर्व सैनिक संगठनों के बीच समन्वय मजबूत करें तथा उनकी समस्याओं और शिकायतों को संबंधित सक्षम अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करने में सहायता करें।

परिषद की प्रमुख प्राथमिकताएँ निम्नलिखित हैं:

थल सेना, नौसेना और वायु सेना के पूर्व सैनिकों के कल्याण, गरिमा एवं वैधानिक अधिकारों को बढ़ावा देना।

पेंशन संबंधी शिकायतों के समाधान तथा वैध देय लाभों की प्राप्ति के प्रयासों में सहायता करना।

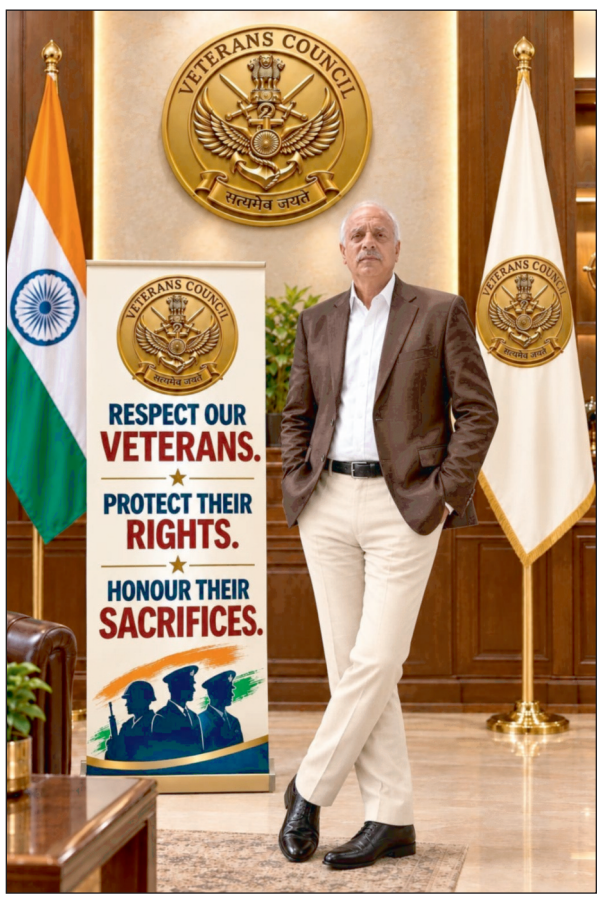
दिव्यांग पूर्व सैनिकों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं एवं उपयुक्त सहायता तक पहुँच को प्रोत्साहित करना।

सेवानिवृत्ति के बाद पुनर्वास, पुनर्स्थापन तथा रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना।

पूर्व सैनिकों की विधवाओं, आश्रितों एवं परिवारों के कल्याण में सहयोग करना।

सरकार की लागू कल्याणकारी योजनाओं एवं देय लाभों के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

पूर्व सैनिक संगठनों तथा भूतपूर्व सैनिक संघों के बीच समन्वय मजबूत करना।



शिकायतों के निवारण के लिए पारदर्शी, जवाबदेह एवं प्रभावी व्यवस्था को प्रोत्साहित करना।

इन उद्देश्यों को लागू कानूनों, नियमों एवं निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुरूप उचित माध्यमों से आगे बढ़ाया जाएगा।

दिल्ली एनसीटी में पूर्व सैनिकों के प्रतिनिधित्व को सशक्त बनाना

राष्ट्रीय राजधानी होने के कारण दिल्ली रक्षा कार्मिकों तथा पूर्व सैनिकों के कल्याण से संबंधित सरकारी संस्थानों और अधिकारियों के साथ संवाद स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है।

वेटरन्स काउंसिल का उद्देश्य दिल्ली एनसीटी में अपनी उपस्थिति को मजबूत करना तथा थल सेना, नौसेना और वायु सेना के पूर्व सैनिकों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर व्यवस्थित एवं प्रभावी संवाद को प्रोत्साहित करना है।

काउंसिल

का मानना है कि तीनों सेनाओं के बीच एकता प्रभावी प्रतिनिधित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है। सेवा की पृष्ठभूमि, रैंक या व्यावसायिक अनुभव में अंतर सहयोग की राह में बाधा नहीं बनना चाहिए, विशेषकर तब जब साझा उद्देश्य राष्ट्र की सेवा कर चुके लोगों के कल्याण और गरिमा की रक्षा करना हो।

नए नेतृत्व के अंतर्गत परिषद विभिन्न रैंकों और तीनों सेनाओं से जुड़े पूर्व सैनिकों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने, रचनात्मक संवाद को बढ़ावा देने तथा लंबित शिकायतों को संबंधित सक्षम अधिकारियों के संज्ञान में लाने के प्रयास करेगी।

न्याय, गरिमा और जवाबदेही के प्रति प्रतिबद्धता

वेटरन्स काउंसिल का मानना है कि पूर्व सैनिकों का कल्याण राष्ट्र की कृतज्ञता और सामूहिक जिम्मेदारी का विषय है। वर्दी में सेवा देने वाले सैनिकों ने भारत की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने अनेक अवसरों पर कठिन एवं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है।

वेटरन्स काउंसिल कानूनसम्मत प्रतिनिधित्व, संस्थागत जवाबदेही, रचनात्मक संवाद तथा पूर्व सैनिकों के वैध अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। परिषद की कार्यप्रणाली समस्याओं की पहचान करने, उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने तथा व्यावहारिक समाधान प्राप्त करने के प्रयासों पर केंद्रित रहेगी।

प्रारंभिक तीन वर्ष का कार्यकाल संगठन के सतत विकास, पूर्व सैनिकों के साथ बेहतर संवाद तथा दिल्ली एनसीटी में कल्याणकारी पहलों को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान करेगा।

भारत की सेवा करने वालों के प्रति नई प्रतिबद्धता

वेटरन्स काउंसिल पूर्व सैनिकों, भूतपूर्व सैनिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों, संस्थानों तथा जागरूक नागरिकों से सैन्य पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों के कल्याण को बेहतर बनाने वाली पहलों में सहयोग करने का आह्वान करती है।

वेटरन्स काउंसिल

दोहराती है कि पूर्व सैनिकों के प्रति सम्मान केवल औपचारिक समारोहों और सम्मान-प्रदर्शनों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यह सम्मान वास्तविक सहायता, वैध शिकायतों पर निष्पक्ष विचार, कल्याणकारी सुविधाओं तक पहुँच तथा कानूनी अधिकारों और देय लाभों की सुरक्षा के रूप में भी दिखाई देना चाहिए। एवीएम आलोक शर्मा, वीएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त) की दिल्ली एनसीटी के अध्यक्ष के रूप में प्रारंभिक तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए नियुक्ति के साथ वेटरन्स काउंसिल भारतीय थल सेना, भारतीय नौसेना तथा भारतीय वायु सेना के सभी पूर्व सैनिकों की बिना किसी भेदभाव के सेवा करने तथा सभी के लिए एकता, गरिमा, न्याय और कल्याण को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराती है।

अपने पूर्व सैनिकों का सम्मान करें। उनके अधिकारों की रक्षा करें। उनके बलिदानों का सम्मान करें।

RESPECT OUR VETERANS. PROTECT THEIR RIGHTS. HONOUR THEIR SACRIFICES.

इस दिवाली केवल घर नहीं, किसी के जीवन में भी रोशनी जलाएँ।

डॉ. विक्रम चौरसिया

कल्पना कीजिए, जिस रात आपका घर दीपों की रोशनी से जगमगा रहा हो, अपनों के बीच हँसी-खुशियाँ बाँटी जा रही हों और मिठाइयों की मिठास रिश्तों में घुल रही हो, उसी रात किसी गरीब बच्चे की आँखें एक छोटी-सी इच्छा पूरी होने की राह देख रही हों, कोई माँ अपने बच्चों की जरूरतें पूरी न कर पाने की विवशता से मन ही मन टूट रही हो और कोई बुजुर्ग अकेलेपन में अपनों के साथ की प्रतीक्षा कर रहा हो। एक ओर उत्सव की जगमगाहट हो और दूसरी ओर अभाव की खामोशी क्या दूसरों के दुःख से आँखें मूँदकर हमारी खुशियाँ पूरी हो सकती हैं?

इस दिवाली एक पल ठहरकर स्वयं से पूछिए क्या हमारा कर्तव्य केवल अपने घर को रोशन करना है, या किसी ऐसे जीवन में भी उम्मीद का दीप जलाना है, जहाँ वर्षों से अभाव का अँधेरा पसरा है?

दीपावली केवल दीप जलाने और उत्सव मनाने का पर्व नहीं, बल्कि अँधेरे से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा है। दीपक स्वयं जलकर दूसरों को उजाला देता है। उसका यही गुण हमें सिखाता है कि जीवन की सार्थकता केवल अपने लिए जीने में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने में भी है। इसलिए इस बार अपने घरों को रोशन करने के साथ उन लोगों तक भी खुशियों का प्रकाश पहुँचाने का संकल्प लें, जिनके जीवन में अभाव और अवसरों की कमी ने उम्मीदों को धुँधला कर दिया है।

जरा सोचिए, यदि मनुष्य के भीतर मानवता, करुणा, प्रेम और संवेदना ही न हो, तो उसके इंसान होने का अर्थ क्या रह जाता है? किसी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके धन, पद या प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उसके आचरण और दूसरों के प्रति उसके व्यवहार से होती है। किसी दुखी चेहरे पर मुस्कान लाना, किसी निराश मन में आशा जगाना और किसी जरूरतमंद का सहारा बनना ही वे कर्म हैं, जो जीवन को वास्तविक अर्थ देते हैं।

हम सभी जानते हैं कि जीवन अनमोल है, लेकिन इसकी अंतिम घड़ी कब आ जाए, कोई नहीं जानता। जन्म के बाद हमारी जीवन-यात्रा कितनी लंबी होगी, इसका निश्चित भरोसा किसी को नहीं। फिर नफरत, ईर्ष्या, छल-कपट और अहंकार में जीवन क्यों गँवाएँ? क्यों न अपने समय, संसाधनों और सामर्थ्य का कुछ हिस्सा मानवता की सेवा में लगाएँ? आखिरकार, हमारे जाने के बाद हमारी संपत्ति नहीं, बल्कि हमारे कर्म और दूसरों के जीवन पर छोड़ी गई हमारी छाप ही हमें याद रखने का आधार बनती है।

हमारे आसपास आज भी अनेक बच्चे शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं, युवा अवसरों के अभाव में संघर्षकर रहे हैं और कई परिवार रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए जूझ रहे हैं। ऐसे में किसी बच्चे को किताबें उपलब्ध कराना, किसी जरूरतमंद परिवार को भोजन देना, किसी युवा को आगे बढ़ने में सहयोग करना या किसी असहाय व्यक्ति का हाथ थामना भी दीपावली की सच्ची भावना है।

इसके लिए धनवान होना जरूरी नहीं। सेवा का मूल्य उसके पीछे छिपी निस्वार्थ भावना से तय होता है, उसकी राशि से नहीं। अपनी सामर्थ्य के अनुसार किया गया छोटा-सा प्रयास भी किसी के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है। यदि हमारे सहयोग से किसी बच्चे की पढ़ाई जारी रह सके, किसी परिवार को दो वक्त का भोजन मिल सके या किसी निराश व्यक्ति को फिर से आगे बढ़ने का हौसला मिले, तो इससे बड़ी खुशी क्या होगी?

मानवता का दायरा केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं होना चाहिए। धरती पर रहने वाले जीव-जंतुओं और प्रत्येक प्राणी के प्रति दया तथा संवेदनशीलता रखना भी हमारा नैतिक दायित्व है। त्योहार की खुशियाँ मनाते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हमारा उत्सव किसी दूसरे के भय, पीड़ा या कष्ट का कारण न बने। सच्ची खुशी वही है, जिसमें हमारी प्रसन्नता के साथ दूसरों की सुरक्षा और सुख का भी ध्यान रखा जाए।

इसी तरह, हमें अपने भीतर के अँधेरे को भी मिटाना होगा। झूठ की जगह सत्य, घृणा की जगह प्रेम, ईर्ष्या की जगह सद्भाव और स्वार्थ की जगह सेवा को अपनाना होगा। जाति, धर्म, वर्ग, भाषा या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव करना मानवता की भावना के विपरीत है। किसी की मजबूरी का उपहास उड़ाने के बजाय उसका हाथ थामना और हर व्यक्ति को सम्मान देना ही हमारे संस्कारों की वास्तविक पहचान है।

जिस राष्ट्र में हमने जन्म लिया, उसके प्रति हमारा प्रेम केवल शब्दों और नारों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उसकी वास्तविक शक्ति ऐसे समाज के निर्माण में है, जहाँ हर व्यक्ति को सम्मान, न्याय और आगे बढ़ने का अवसर मिले। जब समाज का वंचित व्यक्ति भी स्वयं को सम्मानित और सहभागी महसूस करेगा, तभी विकास और खुशहाली का प्रकाश हर दिशा में फैल सकेगा।

आइए, इस दीपावली स्वयं से संकल्प लें कि हम अपनी सामर्थ्य के अनुसार निस्वार्थ भाव से जरूरतमंदों की मदद करेंगे, वंचित बच्चों की शिक्षा और युवाओं के अवसरों में यथासंभव योगदान देंगे, किसी मनुष्य या जीव-जंतु को पीड़ा पहुँचाने से बचेंगे और अपने व्यवहार में ईमानदारी, करुणा तथा समानता को स्थान देंगे। अपनी खुशियों में उन लोगों को भी शामिल करने का प्रयास करेंगे, जिनके पास उत्सव मनाने के साधन कम हैं।

याद रखिए, अँधेरा कितना भी गहरा क्यों न हो, एक छोटा-सा दीपक उसे चुनौती देने का साहस रखता है। जब एक दीप से दूसरा दीप जलता है, तो उजाला बढ़ता जाता है। उसी तरह, जब एक व्यक्ति निस्वार्थ सेवा की शुरुआत करता है, तो दूसरे भी प्रेरित होते हैं। समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए हमेशा बड़े संसाधनों की जरूरत नहीं होती; कई बार एक छोटा-सा मानवीय प्रयास भी किसी के जीवन की दिशा बदल सकता है।

दिवाली का वास्तविक अर्थ केवल घरों को रोशन करना नहीं, बल्कि दिलों में संवेदना जगाना, समाज में सद्भाव बढ़ाना और जरूरतमंदों के जीवन में आशा का उजाला पहुँचाना भी है।

इस बार जब आप अपने घर में दीप जलाएँ, तो अपने मन में भी एक संकल्प जगाएँ मेरे कारण किसी का दुःख कम हो, किसी के चेहरे पर मुस्कान आए और किसी जरूरतमंद को आगे बढ़ने का अवसर मिले।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com


पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार: बैंक अधिकारियों की संलिप्तता और गरीब लोगों का साइबर धोखाधड़ी में शोषण: कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए बढ़ती चुनौती

हाल ही में दिल्ली पुलिस ने 37 संदिग्ध म्यूल (Mule) बैंक खातों से जुड़े एक साइबर धोखाधड़ी नेटवर्क का भंडाफोड़ किया, जिनमें देशभर से दर्ज 99 साइबर अपराध शिकायतों से संबंधित लगभग ₹7.36 करोड़ की राशि जमा हुई थी। इस मामले में बैंक अधिकारियों एवं अन्य सहयोगियों सहित छह व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। जांच में सामने आया कि ये खाते फर्जी हस्ताक्षरों तथा मजदूरों एवं आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों से धोखे से प्राप्त केवाईसी (KYC) दस्तावेजों के आधार पर खोले गए थे। अपराध से अर्जित धन का एक हिस्सा बाद में क्रिप्टोकरेंसी में परिवर्तित कर दिया गया, जिससे धन के प्रवाह (Money Trail) का पता लगाना और अधिक कठिन हो गया।

यह मामला साइबर अपराध पारिस्थितिकी तंत्र में उभरती एक चिंताजनक प्रवृत्ति को उजागर करता है, जिसमें बैंकिंग तंत्र के अंदरूनी तत्वों की कथित संलिप्तता तथा गरीब एवं असुरक्षित वर्गों का संगठित तरीके से शोषण कर उनके नाम पर सिम कार्ड और म्यूल खाते खुलवाए जाते हैं। ऐसी गतिविधियां साइबर अपराधों की जांच को अत्यंत जटिल बना देती हैं और वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचने में बड़ी बाधा उत्पन्न करती हैं।

जांच के अनुसार, कुछ निजी बैंक शाखाएं कथित रूप से म्यूल खाते खोलने के केंद्र बन गई थीं। साइबर अपराधियों ने निम्नलिखित बहानों से गरीब व्यक्तियों से उनके पहचान दस्तावेज प्राप्त किए:

- ऋण स्वीकृति (Loan Approval)
- रोजगार के अवसर
- वेतन खाता (Salary Account) खोलने का प्रस्ताव
- सरकारी योजनाओं का लाभ
- वित्तीय सहायता

इन दस्तावेजों का उपयोग कथित रूप से संबंधित व्यक्तियों की वास्तविक जानकारी या सहमति के बिना बैंक खाते खोलने के लिए किया गया।

उभरती प्रवृत्ति: अपराधी-बैंकर गठजोड़ (Criminal-Banker Nexus)

इस मामले का सबसे गंभीर पहलू केवाईसी मानकों को दरकिनार करने में बैंक कर्मचारियों की कथित भूमिका है। सामान्यतः बैंक वित्तीय अपराधों के विरुद्ध पहली सुरक्षा पंक्ति होते हैं। किंतु जब बैंक के अंदरूनी कर्मचारी फर्जी खातों को खोलने और संचालित करने में सहायता करते हैं, तो साइबर अपराधियों को एक बड़ी रणनीतिक बढ़त मिल जाती है।

समझौता कर चुके बैंक अधिकारियों की भूमिका

जांच में आरोप सामने आए कि कुछ बैंक कर्मचारियों ने:

1. भौतिक सत्यापन के बिना खाते खुलवाए।
2. केवाईसी में पाई गई कमियों की अनदेखी की।
3. फर्जी हस्ताक्षर एवं जाली दस्तावेज स्वीकार किए।
4. साइबर अपराधी नेटवर्क के लिए बड़ी संख्या में खाते खुलवाए।
5. संदिग्ध लेन-देन की रिपोर्टिंग नहीं की।
6. धोखाधड़ी से प्राप्त धन को विभिन्न खातों में तेजी से स्थानांतरित होने दिया।

इस प्रकार की अंदरूनी संलिप्तता सामान्य साइबर धोखाधड़ी को संगठित वित्तीय अपराध में बदल देती है।

आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों का शोषण

साइबर अपराधी विशेष रूप से निम्न वर्गों को निशाना बना रहे हैं:

- दिहाड़ी मजदूर
- प्रवासी श्रमिक
- बेरोजगार युवा
- ग्रामीण निवासी
- वित्तीय रूप से अशिक्षित व्यक्ति

इन लोगों को अक्सर निम्नलिखित प्रलोभन दिए जाते हैं:

- ऋण
- नौकरी
- कमीशन
- सरकारी लाभ
- कल्याणकारी योजनाओं में नामांकन

पहचान दस्तावेज प्राप्त करने के बाद अपराधी उनका उपयोग निम्नलिखित के लिए करते हैं:

1. म्यूल बैंक खाते

ऐसे खाते जो कागजों पर निर्दोष व्यक्तियों के नाम पर होते हैं, लेकिन उनका संचालन अपराधियों द्वारा किया जाता है।

2. सिम कार्ड

चोरी की गई या धोखाधड़ी से प्राप्त पहचान के आधार पर लिए गए मोबाइल कनेक्शन।

3. वित्तीय संस्थाएं/फर्जी फर्म

शेल कंपनियां या फर्जी फर्में, जिनका उपयोग अपराध की आय को छिपाने और धन शोधन (Money Laundering) के लिए किया जाता है।

परिणामस्वरूप, जब पुलिस किसी साइबर धोखाधड़ी की रकम का पता लगाती है, तो सबसे पहले सामने आने वाला नाम अक्सर किसी गरीब और अनभिज्ञ व्यक्ति का होता है, जिसे अपराध के बारे में कोई जानकारी नहीं होती।

म्यूल खाते और फर्जी सिम अपराधों की जांच को क्यों कठिन बनाते हैं?

A. जांच श्रृंखला में अवरोध

साइबर अपराधी शायद ही कभी सीधे लाभार्थी होते हैं। आमतौर पर धन का प्रवाह इस प्रकार होता है:

पीड़ित → म्यूल खाता 1 → म्यूल खाता 2 → म्यूल खाता 3 → क्रिप्टोकरेंसी/वास्तविक लाभार्थी

जितनी अधिक परतें होंगी, जांच उतनी ही जटिल होगी।

B. भ्रामक पहचान (False Attribution)

प्रारंभिक जांच में पुलिस को मिलते हैं:

- वास्तविक आधार विवरण
- वास्तविक पैन नंबर
- वास्तविक फोटो
- वैध बैंक खाते

लेकिन खाते का वास्तविक संचालक कोई और होता है।

C. अस्थायी संचार अवसंरचना

अपराधी उपयोग करते हैं:

- फर्जी तरीके से प्राप्त सिम कार्ड
- अस्थायी मोबाइल फोन
- अनेक वर्चुअल नंबर

जिससे डिजिटल पहचान स्थापित करना कठिन हो जाता है।

D. क्रिप्टोकरेंसी में रूपांतरण

धोखाधड़ी की रकम को क्रिप्टोकरेंसी में बदलने से संभव हो जाता है:

- अंतरराष्ट्रीय धन हस्तांतरण
- गुमनाम लेन-देन
- तेजी से धन का स्थानांतरण
- वास्तविक स्वामित्व को छिपाना

ऐसे मामलों में जांच एजेंसियों को अक्सर अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

साइबर अपराध जांच पर प्रभाव

म्यूल खातों और फर्जी सिम कार्डों के उपयोग से:

जांच में अधिक समय लगता है

वित्तीय ट्रेल लंबा और खंडित हो जाता है।

निर्दोष व्यक्तियों पर संदेह

वास्तविक अपराधियों तक पहुंचने से पहले निर्दोष खाताधारकों से पूछताछ करनी पड़ सकती है।

बहु-राज्यीय जांच की चुनौती

लेन-देन विभिन्न राज्यों में फैल जाने से अनेक एजेंसियां शामिल हो जाती हैं।

धन की वसूली में कमी

खाते फ्रीज करने से पहले ही रकम कई स्तरों से निकाल ली जाती है।

अंतरराष्ट्रीय कड़ियां

धन अक्सर विदेशी नियंत्रित नेटवर्क या क्रिप्टो एक्सचेंजों तक पहुंच जाता है।

निवारक उपाय

बैंकों के लिए

1. केवाईसी मानकों का कठोर अनुपालन।
2. उच्च जोखिम वाले खातों की उन्नत जांच (Enhanced Due Diligence)।
3. नए खातों का नियमित ऑडिट।
4. एआई आधारित ट्रांजैक्शन मॉनिटरिंग।
5. शाखा अधिकारियों की जवाबदेही तय करना।
6. संदिग्ध शाखाओं का आकस्मिक निरीक्षण।

दूरसंचार सेवा प्रदाताओं के लिए

1. सिम कार्ड सत्यापन को मजबूत बनाना।
2. बड़ी संख्या में सिम खरीद की पहचान।
3. संदिग्ध सक्रियण पैटर्न की रियल-टाइम निगरानी।

कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए

1. म्यूल खाते नेटवर्क की शीघ्र पहचान।
2. बैंकों तथा दूरसंचार कंपनियों के साथ बेहतर समन्वय।
3. संदिग्ध खातों को तत्काल फ्रीज करना।
4. क्रिप्टोकरेंसी ट्रैकिंग एवं ब्लॉकचेन विश्लेषण।
5. कमजोर वर्गों को लक्षित जन-जागरूकता अभियान।

नागरिकों के लिए

1. अपना आधार, पैन, बैंक पासबुक या OTP किसी अजनबी को न दें।
2. किसी अन्य व्यक्ति के लिए बैंक खाता खोलने से बचें।
3. नौकरी और ऋण संबंधी प्रस्तावों की सत्यता जांचें।
4. किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत साइबर हेल्पलाइन 1930 पर दें।

दिल्ली पुलिस का यह मामला दर्शाता है कि आज साइबर धोखाधड़ी केवल ऑनलाइन अपराधियों तक सीमित नहीं रह गई है। गरीब एवं असुरक्षित नागरिकों का शोषण तथा वित्तीय संस्थानों के अंदरूनी तत्वों की कथित मिलीभगत साइबर अपराध के विरुद्ध लड़ाई को और कठिन बना रही है। म्यूल खाते और फर्जी पहचान पर लिए गए सिम कार्ड गुमनामी की कई परतें पैदा करते हैं, जिससे अपराधियों की पहचान, अभियोजन तथा चोरी की गई धनराशि की रिकवरी अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो जाती है।

भारत में साइबर-सक्षम वित्तीय अपराधों को कम करने के लिए केवाईसी अनुपालन को मजबूत करना, म्यूल अकाउंट नेटवर्क को ध्वस्त करना तथा बैंक, दूरसंचार सेवा प्रदाता, नियामक संस्थाएं, कानून प्रवर्तन एजेंसियां और आम नागरिकों के बीच समन्वित प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं।

साढ़े तीन साल से बंद लाइसेंसी देसी शराब भट्टियां, 50 करोड़ से अधिक राजस्व नुकसान का दावा!

अवैध शराब के कारोबार को बढ़ावा मिलने की आशंका, आबकारी विभाग की कार्यप्रणाली और स्थानीय प्रशासन की जवाबदेही पर उठे गंभीर सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला।



सरकारी राजस्व की रक्षा, अवैध शराब कारोबार पर अंकुश और आम जनता के स्वास्थ्य की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालने वाला आबकारी विभाग आखिर अपनी जवाबदेही से कब तक बचता रहेगा? लाइसेंसी देसी शराब भट्टियों के लंबे समय से बंद रहने और इसके बावजूद शराब के कारोबार से जुड़े सवालों ने स्थानीय प्रशासन की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं। उपलब्ध समाचार रिपोर्ट में साढ़े तीन साल से लाइसेंसी देसी शराब भट्टियां बंद रहने तथा सरकारी राजस्व को 50 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान होने का दावा किया गया है।

यदि ये आंकड़े आधिकारिक जांच में सही पाए जाते हैं, तो यह महज विभागीय लापरवाही का मामला नहीं, बल्कि सार्वजनिक धन के प्रबंधन और प्रशासनिक जवाबदेही की बड़ी विफलता होगी। सवाल यह है कि जब लाइसेंसी व्यवस्था लंबे समय से बाधित है, तो इस अवधि में शराब की आपूर्ति और बिक्री पर निगरानी किस तरह की गई? अवैध शराब के कारोबार की संभावनाओं को रोकने के लिए क्या ठोस कदम उठाए गए और जिम्मेदार अधिकारियों से जवाब क्यों नहीं मांगा गया?

इस पूरे प्रकरण का सबसे चिंताजनक पहलू आम जनता के स्वास्थ्य से जुड़ा है। शराब की बिक्री और आपूर्ति पर प्रभावी नियंत्रण नहीं होने की स्थिति में मिलावटी अथवा अवैध शराब का खतरा बढ़ सकता है। इसका खामियाजा अंततः गरीब और कमजोर तबकों को भुगतना पड़ता है। ऐसे में आबकारी विभाग की जिम्मेदारी केवल राजस्व वसूली तक सीमित नहीं रह सकती; उसे जनस्वास्थ्य की सुरक्षा भी सुनिश्चित करनी होगी।

दूसरी ओर, सरकारी राजस्व में संभावित भारी कमी का सीधा संबंध जनता के हितों से है। नागरिक सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं के लिए करों के माध्यम से योगदान करते हैं। यदि प्रशासनिक निष्क्रियता के कारण सरकारी खजाने को नुकसान होता है, तो यह जनधन के प्रभावी उपयोग पर भी सवाल खड़ा करता है।

अब आवश्यक है कि राज्य सरकार और आबकारी विभाग पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराएं। लाइसेंस व्यवस्था बाधित रहने के कारणों, राजस्व के वास्तविक नुकसान, अवैध कारोबार की स्थिति और संबंधित अधिकारियों की भूमिका की पड़ताल हो। दोष प्रमाणित होने पर जिम्मेदारी तय कर नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

जनता को जवाब चाहिए—राजस्व की रक्षा और जनस्वास्थ्य की जिम्मेदारी आखिर कौन निभाएगा?

जंगल लौटने के बजाय गांवों में डटे हाथी, खतरे में जनजीवन और किसानों की आजीविका

फसलें रौंद रहे गजराज, दहशत में ग्रामीण; वन विभाग की कार्यप्रणाली और सरकारी वन्यजीव प्रबंधन पर गंभीर सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला।





जंगल और गांव के बीच बढ़ता संघर्ष अब ग्रामीणों की सुरक्षा, किसानों की आजीविका और वन्यजीव संरक्षण व्यवस्था—तीनों के लिए गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। जंगली हाथियों की आवाजाही से प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की चिंता बढ़ी हुई है। खेतों में हाथियों की मौजूदगी और आबादी के नजदीक उनके विचरण ने ग्रामीणों के सामने ऐसा संकट खड़ा कर दिया है, जिसमें एक ओर जान-माल की सुरक्षा का सवाल है, तो दूसरी ओर मेहनत से तैयार की गई फसल बचाने की जद्दोजहद।

सबसे बड़ा सवाल वन विभाग की तैयारी और प्रशासनिक सक्रियता पर है। जब हाथियों की आवाजाही और मानव बस्तियों के निकट उनके पहुंचने की समस्या लगातार सामने आती है, तो समय रहते प्रभावी निगरानी, चेतावनी और सुरक्षित दिशा में हाथियों को वापस जंगल की ओर ले जाने की व्यवस्था क्यों सुनिश्चित नहीं की जाती? क्या प्रशासन किसी गंभीर दुर्घटना के बाद ही सक्रिय होगा? ग्रामीणों को केवल सतर्क रहने की सलाह देना पर्याप्त नहीं, जब तक उन्हें समय पर सूचना, प्रशिक्षित सहायता और प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध न हो।

इस संकट का सबसे दर्दनाक पक्ष किसानों की पीड़ा है। महीनों की मेहनत, बीज, खाद, सिंचाई और खेती पर खर्च की गई पूंजी कुछ ही समय में बर्बाद हो सकती है। जिन परिवारों की आजीविका पूरी तरह कृषि पर निर्भर है, उनके लिए फसल का नुकसान केवल आर्थिक क्षति नहीं, बल्कि पूरे परिवार के भविष्य पर संकट है। वहीं, रात में खेतों की रखवाली करने वाले ग्रामीणों को हाथियों के हमले का खतरा उठाना पड़ता है। दूसरी ओर, बेजुबान हाथियों की पीड़ा को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जंगलों में भोजन और सुरक्षित आवास की उपलब्धता प्रभावित होने पर मानव बस्तियों की ओर उनका आना मानव-वन्यजीव संघर्ष को बढ़ा सकता है। इसका समाधान हाथियों को खदेड़ने तक सीमित नहीं, बल्कि उनके प्राकृतिक आवास, पारंपरिक गलियारों और खाद्य संसाधनों की रक्षा में भी निहित है।

सरकार और वन विभाग को चाहिए कि प्रभावित क्षेत्रों में नियमित निगरानी, त्वरित चेतावनी प्रणाली, प्रशिक्षित बचाव दल, ग्रामस्तरीय समन्वय और फसल क्षति के मुआवजे की पारदर्शी व्यवस्था सुनिश्चित करें। वन सुरक्षा समितियों और स्थानीय ग्रामीणों को भी प्रशिक्षित तरीके से इस अभियान में शामिल किया जाए।

प्रश्न स्पष्ट है—ग्रामीणों की जान, किसानों की फसल और हाथियों के प्राकृतिक अधिकारों की रक्षा की जिम्मेदारी आखिर कौन निभाएगा? सरकारी योजनाओं की सफलता कागजी दावों से नहीं, जमीन पर मिलने वाली सुरक्षा और राहत से तय होनी चाहिए।

रांची मे राजस्व कर्मचारी की गोली मारकर हत्या

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड





रांची, रांची में राजस्व कर्मचारी लक्ष्मी मुंडा की उनके घर में घुसकर गोली मार कर हुई हत्या से राजधानी की विधि-व्यवस्था की पर कुठाधात हुआ है । नामकुम थाना क्षेत्र में अज्ञात अपराधियों ने उन्हें गोली मार दी और वारदात को अंजाम देने के बाद मौके से फरार हो गए। फिलहाल हत्या के पीछे की वजह सामने नहीं आई है और पुलिस विभिन्न पहलुओं की पड़ताल कर रही है ।झारखंड की राजधानी के नामकुम थाना क्षेत्र में अज्ञात अपराधियों ने राजस्व कर्मचारी लक्ष्मी मुंडा की गोली मारकर हत्या करने के बाद राजनीति स्तर पर भी तुल पकड़ रहा है । वारदात के बाद आरोपी मौके से तुरंत फरार हो गए। घटना की सूचना मिलने पर नामकुम थाना पुलिस की टीम घटनास्थल पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस घटनास्थल से जुड़े तथ्यों और साक्ष्यों की पड़ताल कर रही है ।पुलिस हत्या के पीछे के वास्तविक कारणों का पता लगाने में जुटी है। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि लक्ष्मी मुंडा की हत्या किस वजह से की गई। शुरुआती जांच में जमीन विवाद, आपसी रंजिश और अन्य संभावित कारणों को ध्यान में रखकर तफ्तीश की जा रही है ।जांच टीम इस पहलू की भी पड़ताल कर रही है कि वारदात में किसी परिचित व्यक्ति की भूमिका थी या अपराधियों ने किसी अन्य वजह से हमला किया। हालांकि, अभी तक इन संभावनाओं की पुष्टि नहीं हुई है ।नामकुम थाना पुलिस आरोपियों की पहचान करने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आवश्यक कार्रवाई कर रही है। फिलहाल पुलिस की ओर से घटना को लेकर विस्तृत जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, जांच पूरी होने के बाद ही हत्या के कारणों और वारदात में शामिल लोगों के संबंध में स्थिति स्पष्ट हो सकेगी

कोल कॉरिडोर में दो ट्रेलरों की भीषण भिड़ंत, आग में जिंदा जल गए दोनों चालक



अंलाबहाल चौक के पास देर रात दर्दनाक हादसा; केबिन में फंसे चालकों को बचाने की कोशिश नाकाम, सड़क सुरक्षा पर उठे सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़।

ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में कोयला परिवहन मार्ग पर देर रात हुए भीषण सड़क हादसे में दो ट्रेलर चालकों की जिंदा जलकर मौत हो गई। लेफ्रीपाड़ा थाना क्षेत्र के कोल कॉरिडोर में अंलाबहाल चौक के पास रात करीब दो से ढाई बजे के बीच दो कोयला लदे ट्रेलरों की आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर के बाद दोनों वाहनों में आग लग गई और देखते ही देखते लपटों ने विकराल रूप धारण कर लिया। केबिन में फंसे दोनों चालकों को बाहर नहीं निकाला जा सका।

मृतकों की पहचान झारखंड निवासी 35 वर्षीय मंटू यादव और बिहार निवासी 37 वर्षीय चंदन यादव के रूप में हुई है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, दोनों ट्रेलरों के एसी केबिन क्षतिग्रस्त होने के बाद चालक स्टीयरिंग के पास फंस गए थे। आग तेजी से फैलने के कारण उन्हें बचाने के प्रयास सफल नहीं हो सके।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक, एक ट्रेलर महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (एमसीएल) से कोयला लेकर आ रहा था, जबकि दूसरा कोयला लोड करने के लिए जा रहा था। इसी दौरान दोनों वाहनों की भिड़ंत हो गई। घटनास्थल से गुजर रहे अन्य ट्रक चालकों ने जान जोखिम में डालकर फंसे चालकों को बचाने का प्रयास किया, लेकिन आग की तीव्रता के सामने उनकी कोशिशें नाकाम रहीं। सूचना पर दमकल कर्मी पहुंचे और आग बुझाने में जुट गए। हालांकि, तब तक दोनों चालकों की मौत हो चुकी थी।





दो परिवारों का सहारा छिना, फिर भी चालक सुरक्षा का सवाल कायम। यह हादसा भारी वाहनों के परिचालन, रात्रिकालीन यातायात निगरानी और आपातकालीन बचाव व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करता है। कोयला परिवहन जैसे व्यस्त मार्गों पर सड़क सुरक्षा, वाहन फिटनेस, गति नियंत्रण और अग्नि सुरक्षा की नियमित जांच अनिवार्य होनी चाहिए।

लेफ्रीपाड़ा पुलिस मामले की जांच कर रही है। दुर्घटना के वास्तविक कारण जांच के बाद स्पष्ट होंगे। लेकिन सवाल कायम है—माल परिवहन की इस व्यवस्था में चालक की जिंदगी की सुरक्षा आखिर किसकी प्राथमिकता है?

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023